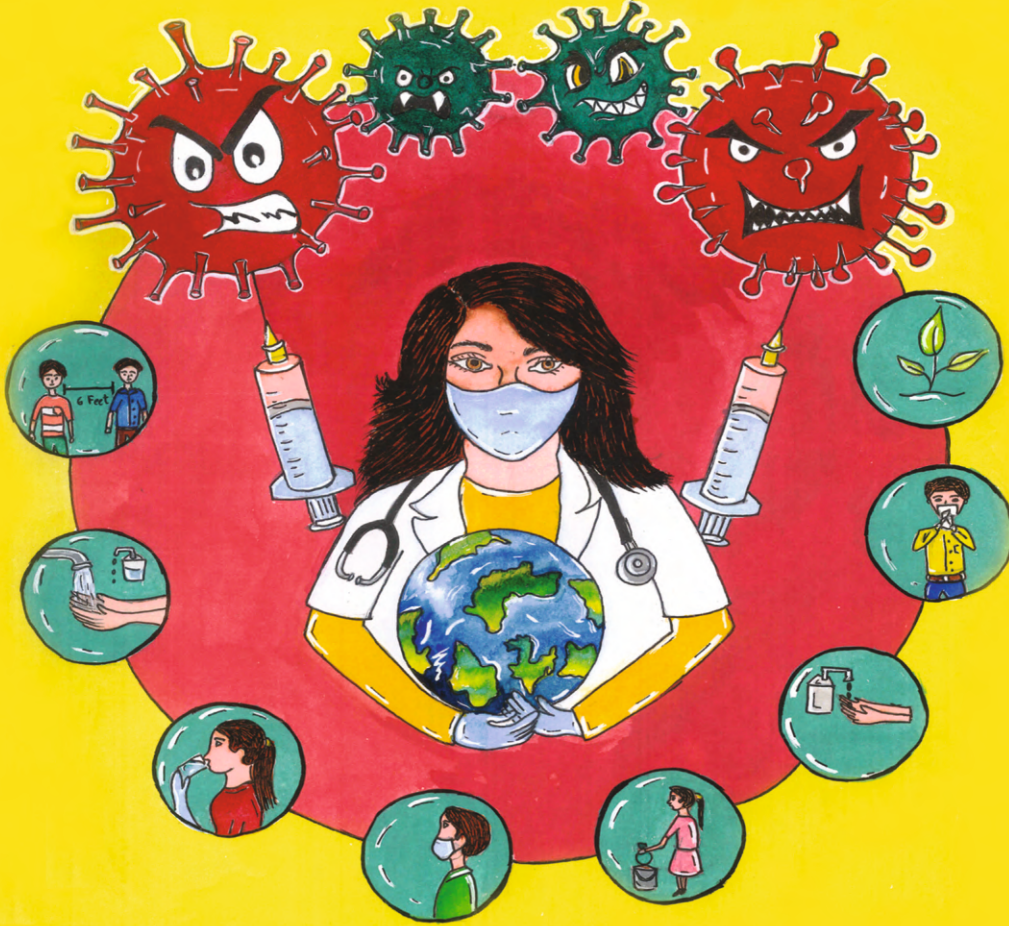


आकांक्षा

नौवाँ अंक वर्ष 2021



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा



सुभाष से नेताजी तक का सफर

सुभाष चंद्र बोस, जिन्हें प्यार से नेताजी भी कहा जाता है उनका जीवन एक संघर्ष की कहानी है। यह एक युवा सपने देखने वाले की कहानी है जो हर आंख में चेतना, संघर्ष और सफलता की गाथा कहती है। 'सफलता हमेशा असफलता के स्तंभ पर खड़ी होती है।' सुभाष चंद्र बोस इसी दर्शन के साथ रहते थे और दूसरों को भी प्रेरित करते थे। नेताजी को कई बार असफलताओं का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने अपने संघर्ष से उन असफलताओं को जीत में बदल दिया। चाहे नगरपालिका की राजनीति हो, आम कांग्रेसी से कांग्रेस अध्यक्ष पद तक का सफर हो, फारवर्ड ब्लॉक का गठन हो या भारतीय राष्ट्रीय सेना का संघर्ष हो, उन्होंने हर परीक्षा को गौरव के साथ पास किया।

सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को कटक, उड़ीसा में हुआ था। उनके पिता जानकी नाथ बोस एक प्रसिद्ध वकील थे और उनकी माता प्रभावती देवी एक धार्मिक महिला थीं। सुभाष चंद्र बोस बचपन से ही मेधावी छात्र थे। उन्होंने कलकत्ता प्रांत की मैट्रिक परीक्षा में टॉप किया। सुभाष चंद्र बोस ने प्रेसीडेंसी कॉलेज, कलकत्ता (कोलकाता) में अध्ययन किया, जहाँ से उन्हें 1916 में राष्ट्रवादी गतिविधियों के लिए निष्कासित कर दिया गया था। उन्होंने कलकत्ता के स्कॉटिश चर्च कॉलेज से दर्शनशास्त्र में प्रथम श्रेणी के साथ स्नातक किया। वे 1919 में भारतीय सिविल सेवा के लिए प्रतिस्पर्धा करने के लिए इंग्लैंड गए। 1920 में वे इंग्लैंड में भारतीय सिविल सेवा प्रतियोगी परीक्षा में सम्मिलित हुए और योग्यता के क्रम में चौथे स्थान पर रहे। उन्होंने भारतीय सिविल सेवा (आई.सी.एस.) परीक्षा में सफल हो कर अपनी योग्यता साबित की। भारत लौटने के बाद नेताजी सुभाष चंद्र बोस महात्मा गांधी के प्रभाव में आए और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गए। वो चित्तरंजन दास जी को राजनीतिक गुरु के रूप में स्वीकार किए, जब चित्तरंजन दास राष्ट्रीय रणनीति विकसित करने में व्यस्त थे, सुभाष चंद्र बोस ने कलकत्ता के छात्रों, युवाओं और मजदूरों को जागरूक करने में प्रमुख भूमिका निभाई। सुभाष ने इंडिपेंडेंस लीग के गठन की भी घोषणा की। 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान सुभाष चंद्र बोस को जेल में डाल दिया गया था। गांधी-इरविन समझौते पर हस्ताक्षर होने के बाद उन्हें 1931 में रिहा कर दिया गया था।

1938 में हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गए। द्वितीय विश्व युद्ध के बादल क्षितिज पर थे और उन्होंने अंग्रेजों को भारत को भारतीयों को सौंपने के लिए छह महीने का समय देने का प्रस्ताव लाया, जिसमें विफल

होने पर विद्रोह होगा। उनके कठोर रुख का बहुत विरोध हुआ और उन्होंने अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया और उसके बाद फॉरवर्ड ब्लॉक का गठन किया।

सुभाष चंद्र बोस ने विश्व युद्ध के लिए भारतीय संसाधनों और पुरुषों के उपयोग के खिलाफ एक जन आंदोलन शुरू किया। उनके आह्वान पर जबरदस्त प्रतिक्रिया हुई और उन्हें कलकत्ता में नजरबंद कर दिया गया। जनवरी 1941 में सुभाष चंद्र बोस कलकत्ता में अपने घर से अंग्रेजों को चकमा देकर अफगानिस्तान के रास्ते जर्मनी पहुंचे। इस कहावत पर काम करते हुए कि 'दुश्मन का दुश्मन दोस्त होता है', उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ जर्मनी और जापान का सहयोग मांगा। जनवरी 1942 में, उन्होंने रेडियो से बर्लिन में अपना नियमित प्रसारण शुरू किया, जिससे भारत में जबरदस्त उत्साह पैदा हुआ। जुलाई 1943 में वे जर्मनी से सिंगापुर पहुंचे। सिंगापुर में उन्होंने रास बिहारी बोस से पूर्वी एशिया में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की बागडोर संभाली और आजाद हिंद फौज (भारतीय राष्ट्रीय सेना) का आयोजन किया जिसमें मुख्य रूप से युद्ध के भारतीय कैदी शामिल थे। आजाद हिंद फौज ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने के लिए भारत की ओर बढ़ी। आई.एन.ए. जनवरी 1944 में मुख्यालय को रंगून में स्थानांतरित कर दिया गया। आजाद हिंद फौज ने बर्मा सीमा को पार किया, और 18 मार्च, 1944 को भारतीय धरती पर खड़ा हुआ।

हालाँकि, द्वितीय विश्व युद्ध में जापान और जर्मनी की हार ने आई.एन.ए. को पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया और यह अपने उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर सका। सुभाष चंद्र बोस कथित तौर पर 18 अगस्त, 1945 को, ताइवान (फॉर्मोसा) में एक हवाई दुर्घटना में मारे गए थे। हालाँकि यह व्यापक रूप से माना जाता है कि हवाई दुर्घटना के बाद भी वह जीवित थे, उनके बारे में अधिक जानकारी नहीं मिल सकी।

स्वतंत्रता के लिए सुभाष चंद्र बोस का संघर्ष न केवल भारत के लिए बल्कि दुनिया के सभी देशों के लिए भी प्रेरणात्मक साबित हुआ। नेताजी की हैसियत उन्हें विश्व स्तर पर 'स्वतंत्रता के नायक' के रूप में स्थापित करती है। सुभाष चंद्र बोस को भारतीय नेतृत्व करने का वैश्विक पहचान देने का श्रेय दिया जाता है।

-श्री दीपक कुमार सिंह,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आकांक्षा

नवां अंक

वर्ष-2021

हिंदी वार्षिक ई-पत्रिका

मुख्य संरक्षक:

श्री संजय कुमार झा, महानिदेशक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, नई दिल्ली

संरक्षक:

सुश्री तान्या सिंह, निदेशक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा

प्रबंध संपादक:

श्री अभिजीत जाना,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

विशेष सहयोग:

श्री ब्रजेश चन्द्र प्रताप,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री श्रवण कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री विनोद कुमार साह,
लिपिक/टंकक

संपादक:

श्री ब्यूटी गुप्ता कनिष्ठ अनुवादक

आवरण चित्र:

‘कोरोना से मिली जीवन की सीख’ संकल्पना

चित्रकार:

सुश्री राईमा कर्मकार,

पुत्री: श्री असीम चंद्र कर्मकार, व.ले.प.

अंतिम आवरण चित्र:

‘कोरोना से मिली जीवन की सीख’ संकल्पना

चित्रकार:

सुश्री सोहिनी दे,

पुत्री: श्री देवाशीष दे,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रकाशक:

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा,
निजाम पैलेस, द्वितीय बहुतलीय कार्यालय भवन, छठा तल,
234/4, ए.जे.सी. बोस रोड,
कोलकाता-700 020

अस्वीकरण:- पत्रिका में प्रकाशित कविता, कहानी, आलेखों में व्यक्त विचार, संबंधित लेखकों के हैं न कि प्रकाशक या संपादक के। इनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का क्षेत्र केवल कोलकाता न्यायिक क्षेत्र होगा।

हिंदी पत्रिका 'आकांक्षा' के प्रकाशन के लिए गठित पत्रिका समिति के सदस्यगण



तान्या सिंह
निदेशक (अध्यक्ष)



अभिजीत जाना
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



विजय कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



अमलेश दासगुप्ता
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



दीपक कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



कार्तिक चंद गायेन
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



चंद्रानी सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



संगीता बरूआ
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



सुरोजीत कुमार दत्ता
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



पूनम मालपानी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



ब्यूटी गुप्ता
कनिष्ठ अनुवादक



विनोद कुमार साह
लिपिक/टंकक



डॉ.सुमीत जैरथ, आई.ए.एस.सचिव
Dr.Sumeet Jerath, I.A.S. Secretary



सत्यमेव जयते

भारत सरकार,
राजभाषा विभाग,
गृह मंत्रालय
Government of India,
Dept. of Official Language,
Ministry of Home Affairs

संदेश

यह हर्ष और गौरव का विषय है कि कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पर्यावरण और वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता द्वारा विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी अपनी वार्षिक ई-पत्रिका आकांक्षा के नवें अंक (2021) का प्रकाशन किया जा रहा है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा था- “राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।” यह सर्वविदित है कि राष्ट्र निर्माण में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आज हिंदी का महत्व जनभाषा, संपर्क भाषा, राजभाषा और वैश्विक भाषा के रूप में बढ़ रहा है।

यह हमारा कर्तव्य है कि राष्ट्रीय हित एवं एकात्मकता के लिए हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए गृह-पत्रिकाओं का उद्देश्य है अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में मूल लेखन एवं अपने शासकीय कार्यों को हिंदी में करने के लिए प्रेरित करना। मुझे विश्वास है कि कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पर्यावरण और वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता द्वारा प्रकाशित की जाने वाली ई-पत्रिका आकांक्षा का यह अंक राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध होगा।

मैं पत्रिका के नवें अंक के सफल प्रकाशन के लिए इस पत्रिका के संपादक मंडल के साथ-साथ कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पर्यावरण और वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि भविष्य में भी इस प्रकार के सफल एवं ज्ञानवर्धक अंक नियमित रूप से प्रकाशित होते रहेंगे।

सुमीत जैरथ

डॉ.सुमीत जैरथ



संजय कुमार झा, महानिदेशक
Sanjay Kumar Jha, Director General



कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग,
ए.जी.सी.आर.भवन,
इंद्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली-110002
Office of The Director General of Audit,
Environment & Scientific Departments,
A.G.C.R. Building,
I.P.Estate, New Delhi-110002

संदेश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है कि 'आकांक्षा' ई-पत्रिका के नवें अंक 2021 का प्रकाशन किया जा रहा है। ई-पत्रिका के प्रकाशन में सहभागी सभी अधिकारी/कर्मचारी लेखक एवं संपादक मंडल प्रशंसा के पात्र है। आशा है कि यह ई-पत्रिका इसी प्रकार राजभाषा के संवर्धन में अपना सार्थक योगदान देगी तथा कार्यालयी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देगी।

मैं ई-पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सभी सदस्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हृदय से बधाई देता हूँ जिन्होंने परस्पर सहयोग से इस ई-पत्रिका 'आकांक्षा' के प्रकाशन में अपना योगदान दिया है। मैं उम्मीद करता हूँ कि राजभाषा हिंदी के विनिर्दिष्ट लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु आप सभी अपने-अपने क्षेत्र में आवश्यक कदम उठा कर हिंदी को नवीन ऊंचाई प्रदान करेंगे।

मेरी शुभकामना है कि 'आकांक्षा' ई-पत्रिकाओं में अग्रसर होती रहेगी। उज्ज्वल भविष्य के शुभकामनाओं सहित।

संजय कुमार झा

संजय कुमार झा
महानिदेशक
पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग
नई दिल्ली



तान्या सिंह, निदेशक
Tanya Singh, Director



सत्यमेव जयते

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग,
कोलकाता शाखा,
O/o The Director General of Audit,
Environment & Scientific Departments,
Kolkata Branch

संदेश

कार्यालय की गृह ई-पत्रिका 'आकांक्षा' का 9वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष का अनुभव कर रही हूँ। यह ई-पत्रिका अधिकारियों/ कर्मचारियों की प्रतिभाओं को प्रकट करने का सुअवसर प्रदान करती है। महामारी की इस विषम परिस्थिति के दौर में भी हिंदी ई-पत्रिका के लिए सभी के उत्साह एवं सहयोग में कोई कमी नहीं आई है, जो सराहनीय एवं प्रेरणादायक है।

हिंदी संपूर्ण भारत के मध्य एकता की कड़ी की तरह कार्य करती है। शासकीय कार्यों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग लगातार बढ़ रहा है। हम सभी को संवैधानिक दायित्व की पूर्ति हेतु अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। राजभाषा हिंदी का प्रचार जितना अधिक होगा एवं हम उसे अपने व्यवहार में जितना अधिक शामिल कर पाएंगे, जनमानस की भागीदारी बढ़ने के कारण हमारे राष्ट्र का विकास उतना ही अधिक होगा। अतः संवैधानिक दायित्व होने के साथ-साथ यह हमारा नैतिक दायित्व भी है कि कार्यालयीन कार्य में इसका प्रचार-प्रसार करके देश की प्रगति में अपना अमूल्य योगदान दें।

मैं पत्रिका के साथ प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जुड़े सभी के योगदान की प्रशंसा करती हूँ एवं ई-पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ तथा आशा करती हूँ कि आप सभी रूची एवं उत्साह से कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा का प्रयोग करेंगे।

उज्ज्वल भविष्य के शुभकामनाओं सहित।

तान्या सिंह

तान्या सिंह
निदेशक

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
(सदैव ऊर्जावान; निरंतर प्रयासरत)
राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केन्द्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से, अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से, प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे, अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए, अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए, राजभाषा-हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा! जय हिंद!



संपादकीय

हिंदी ई-पत्रिका आकांक्षा के नवें अंक 2021 को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे असीम आनंद की अनुभूति हो रही है। इस प्रकाशन का प्रमुख उद्देश्य राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए कर्मचारियों/अधिकारियों का अधिक से अधिक प्रोत्साहन देना है जिसमें सकारात्मक सफलता भी मिल रही है। ई-पत्रिका के इस अंक को जहां भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के सचिव डॉ. सुमित जैरथ जी के आशीर्वचनां द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है, वहीं विभागीय प्रमुख श्री संजय कुमार झा, महानिदेशक की पत्रिका के प्रति रुचि एवं निदेशक महोदया श्रीमती तान्या सिंह के उत्साहवर्धन का संबल भी मिला है।

ई-पत्रिका के माध्यम से राष्ट्रभाषा के प्रति जाग्रति रुचि को बरकरार रखने का प्रयास किया जा रहा है। मुझे विश्वास है कि यह ई-पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभाएगी। भारत की भाषाई स्थिति और उसमें हिंदी के स्थान को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है हिंदी आज भारतीय जनता के बीच राष्ट्रीय संपर्क की भाषा है। हिंदी की भाषागत विशेषता यह भी है कि यह अन्य भाषाओं की तुलना में सहज और सरल है तभी तो दूसरी भाषाओं के शब्द भी बड़ी आसानी से इसमें समाहित हो जाते हैं। अंतराष्ट्रीय स्तर पर भी हिंदी ने अपना एक विशेष स्थान बना लिया है।

आकांक्षा ई-पत्रिका कार्यालय के सदस्यों को एक ऐसा मंच प्रदान करती है जिसमें रचनाकार अपने रचनाओं के माध्यम से अपने विचार, अपनी संवेदनाएँ आप तक पहुँचाते हैं। अंत में ई-पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी सदस्यों का संपादक मंडल को धन्यवाद करती हूँ। पाठकगण से अनुरोध है कि आकांक्षा से संबंधित सुझाव भेजकर पत्रिका को उत्कृष्ट बनाने में अपना योगदान दें। शुभकामनाओं सहित।

ब्यूटी गुप्ता

ब्यूटी गुप्ता
कनिष्ठ अनुवादक

क्र.सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	आजादी का पर्व	तान्या सिंह	15
2.	मित्र	अभिजीत जाना	16
3.	हिन्दी का थोड़ा आनंद लीजिए, मुस्कुराइए	बिरेन्द्र सिंह	19
4.	कोरोना से मिली सीख	आकाशदीप मुखर्जी	21
5.	गांव की थी मिट्टी	चंदा तिवारी	23
6.	मानवता	शर्मिला बन्दोपाध्याय	24
7.	श्री रामानुजाचार्य	के.एस. सुरेश बाबु	27
8.	मातृशक्ति	इंद्रानी दे	30
9.	स्मृति के झरोखे से	अमलेश दासगुप्ता	31
10.	महामारी या मानवपीड़ा	बबिता	38
11.	इलॉन मस्क का करिश्माई सफर	ब्रजेश चन्द्र प्रताप	40
12.	दोस्ती एक विश्वास	विनोद कुमार साह	43
13.	हाइब्रिड कार्यस्थल	चंद्रानी सिंह	45
14.	जैनेंद्र कुमार की कहानियों में बाल- मनोविज्ञान की अभिव्यक्ति	ब्यूटी गुप्ता	47
15.	रंग	श्रेष्ठा प्रभाकर	53
16.	भारतीय याक	मलि जाना	54
17.	एकता में ही बल है	सोहिनी दे	56
18.	एक सुदूर गांव की बहु की कहानी	कार्तिक चंद्र गायेन	57
19.	जीने की चाह	अग्रिता प्रभाकर	59
20.	कोरोना से मिली जीवन की सीख	विजय कुमार शर्मा	60
21.	शिवकर बापूजी तलपड़े की एक छोटी कहानी	हर्षित कुमार साह	62
22.	प्लास्टिक प्रदूषण	देवदुत मुखर्जी	63
23.	क्या ग्रामीण क्षेत्र पुर्नउद्धारक की भूमिका अदा कर सकती है?	इंद्रानी जाना	64
24.	डिजिटल शिक्षा-समावेशिता अपनाने का अवसर	पूनम मालपानी	68
25.	मानव एवं संघर्ष	कार्तिक नामदेव	70
26.	ग्रीन हाइड्रोजन	सुरोजीत कुमार दत्ता	71
27.	पांच रोटियाँ	देबाशीष दे	72
28.	मुस्कुराहटें	शिप्रा बर्मा	73
29.	मददगार हाथ	रंजीत रॉय	74
30.	असली सम्मान	उज्ज्वल बोस	77
31.	अबला नारी	वंदना साह	80
32.	जिला नदिया	विनोद कुमार साह	81

संवदन

(पाठकों की प्रतिक्रिया)

आपके कार्यालय की पत्रिका आकांक्षा का आठवां अंक प्राप्त हुआ इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। ये अंक अपने कलेवर, साज-सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहरी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय हैं। इस अंक में प्रकाशित आलेख, कविताएँ, कहानियाँ, संस्मरण आदि अत्यंत स्तरीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रक्रम है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करें यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

(सुभाष चंद यादव)

हिंदी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.)

तमिलनाडु, चेन्नई



आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'आकांक्षा' के आठवें अंक प्रति प्राप्त हुई सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका को प्रभावी बनाने में कार्यालय कर्मियों के साथ-साथ उनके परिजनों का योगदान अभिनन्दनीय है। बाल कलाकारों द्वारा बनाए गए छायाचित्र सुन्दर और मनमोहक है एवं बाल कलाकारों की सृजनशीलता का परिचायक है। एक अहिन्दी भाषी क्षेत्र से इतना उत्कृष्ट प्रयास प्रशंसनीय है। पत्रिका के कुशल संपादन के लिए संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए ढेरों शुभकामनाएं। आशा है कि आपकी पत्रिका आकांक्षा इसी तरह प्रगति की ओर अग्रसर रहे।

भवदीय,

(कमलेश कुमार रावत)

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

राजभाषा अनुभाग

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) राजस्थान, जयपुर

आपके कार्यालय का हिंदी पत्रिका 'आकांक्षा' के 8वें अंक (वर्ष 2020) की प्राप्ति हुई। एतदर्थ धन्यवाद।
पत्रिका का ई-मुद्रण अति आकर्षक है। पत्रिका में रंगों का चुनाव आकर्षक है। कर्मचारियों एवं उनके बच्चों द्वारा दर्शाई गई चित्रकारी सराहनीय है। पत्रिका की रचनाओं का संकलन अत्यंत ही उत्कृष्ट कोटि का है। एक ही पत्रिका में इतने सारे विषयों को समाहित करना गागर में सागर भरने जैसा है। पत्रिका की रचनाएं पठनीय एवं संग्रहणीय है। कार्यालयी गतिविधियों के चित्र पत्रिका को और मनमोहक बनाते हैं।
पत्रिका के सम्पादन एवं संकलन हेतु सम्पादक मण्डल को साधुवाद तथा पत्रिका की प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।
भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी
महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-I), ओड़िशा, भुवनेश्वर



आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका 'आकांक्षा' के आठवें (8वें) अंक की प्राप्ति हुई, तदर्थ आपको बहुत-बहुत आभार। पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुन्दर प्रस्तुतिकरण अत्यन्त प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनायें उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं। पत्रिका में मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति की गहनता समाहित है। पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर प्लास्टिक मुक्त भारत संकल्पना की चित्रकारी बहुत ही मनमोहक और शिक्षाप्रद है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं। कृपया अपना यही सार्थक प्रयास निरंतर रखें।
भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी राजभाषा अनुभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान



उपर्युक्त विषय पर आपके द्वारा प्रेषित राजभाषा हिन्दी पत्रिका 'आकांक्षा' के आठवें अंक की प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद! पत्रिका का मुख पृष्ठ, विषय वस्तु के चयन, संपादन एवं साज-सज्जा एवं कलेवर कभी द्विष्टियों से आपकी पत्रिका ज्ञानवर्धक एवं स्तरीय है। इस पत्रिका में श्री अमलेश दासगुप्ता का लेख 'मानवता की देवी मदर टेरेसा', सुश्री संगीता बरूआ का लेख 'प्लास्टिक मुक्त भारत', श्री अभिजीत जाना का लेख 'कोलकाता: एक शहर कुछ सच्चाई और संवेदना' और श्री सुरोजीत कुमार दत्ता का लेख 'टीका' एवं श्री संजय कुमार झा की कविता 'एक प्रण... ऐसा भी' आदि विशिष्ट रूप से पठनीय एवं सराहनीय है। यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अवश्य ही सहायक होगी। इस सुन्दर अंक को प्रकाशित करने के लिए आपको एवं संपादक मंडल को बधाई। आशा है भविष्य में भी इसी तरह इस पत्रिका का प्रकाशन होता रहेगा।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं गुणवत्ता हेतु इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।
भवदीय,

(अर्जुन केवट)

सहायक निदेशक (राजभाषा)

मुख्य पोस्टमास्टर जनरल का कार्यालय

पश्चिम बंगाल सर्किल, कोलकाता-700 012

भारतीय डाक विभाग, मुख्य पोस्टमास्टर जनरल का कार्यालय,

पश्चिम बंगाल सर्किल एवं क्षेत्रीय अध्यक्ष, कोलटालिक क्षेत्र-2

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका 'आकांक्षा' के 8वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा बहुत ही प्रशंसनीय है। पत्रिका में सम्मिलित रचनाएं रुचिकर एवं ज्ञानप्रद हैं। पत्रिका में सम्मिलित रचनाएं से संबंधित छायाचित्र विषय के अनुकूल हैं। प्रकाशित रचनाओं में 'सबक', 'अपने', 'इच्छा शक्ति', 'अपने मन को पहचानने में और देन न करें', 'एक प्रण....ऐसा भी', 'नई राह' तथा 'यादें' विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

भवदीय,

व.लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशा
कार्यालय महानिदेशक, वाणिज्य लेखापरीक्षा, मुंबई



कृपया आपके कार्यालय के ईमेल दिनांक 05.01.2021 का संदर्भ लें जिसके द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में वार्षिक पत्रिका आकांक्षा के आठवें अंक की ई-पत्रिका ई-मेल द्वारा इस कार्यालय को प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सभी लेख, कविताएं, प्रेरक प्रसंग आदि पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में सभी रचनाएं उत्तम स्तर की हैं। इसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। साहित्य की सभी विधाओं में रचनाएं बहुत ही सुंदर तरीके से वर्णित हैं। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाओं में सृजनात्मकता, सकारात्मकता तथा नवीनता को मार्मिक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। कार्यालय के प्रायः सभी वर्ग के कर्मिकों ने अपनी मौलिकता से पत्रिका को सुसज्जित किया है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। इस पत्रिका का मैंने अध्ययन किया, इसमें वर्णित सभी तथ्य बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी हैं। एक बार पुनः हृदय से धन्यवाद।

भवदीय,

(मुकेश कुमार यादव)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
दूरभाष:- 01123454268
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृह, शिक्षा एवं कौशल विकास), नई दिल्ली



आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका आकांक्षा का आठवाँ अंक प्राप्त हुआ।

पत्रिका में अंतर्निहित सभी रचनाएँ अत्यंत सुपाठ्य, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं। ये सभी रचनाएँ अत्यंत रुचिकर तथा प्रासंगिक भी हैं।

पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल का बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी (राजभाषा)
महानिदेशक, लेखापरीक्षा का कार्यालय, केन्द्रीय, कोलकाता

बड़े ही हर्ष पूर्वक कहना है कि राजभाषा नीति के सुचारु रूप से कार्यान्वयन एवं राजभाषा हिंदी के विकास की दिशा में इस कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी वार्षिक पत्रिका 'आकांक्षा' के आठवें अंक (वर्ष 2020) का सफलतापूर्वक प्रकाशन किया गया है। इसलिए हिंदी पत्रिका 'आकांक्षा' (वर्ष 2020) आपके अवलोकनार्थ प्रस्तुत है। पत्रिका के आगामी अंकों को बेहतर बनाने के लिए आपके बहुमूल्य सुझावों का सहर्ष स्वागत है।
भवदीय,

संलग्नक: यथोपरि
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग,
कोलकाता शाखा



आपके कार्यालय की राजभाषा हिंदी वार्षिक पत्रिका 'आकांक्षा' के 8वें अंक (वर्ष 2020) की प्रति प्राप्त हुई। आपकी पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्ती भूमिका निभा रही है। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक एवं पठनीय हैं।

पत्रिका के इस अंक में सम्मिलित किया गया श्रीमती मलि जाना का लेख 'अपने', श्रीमती कमला दास गुप्ता का लेख 'अंजान मथुर', श्रीमती सविता रानी की कविता 'सुख का रहस्य' एवं श्री विनोद कुमार साह का लेख 'यादें' विशेष रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु सादर हार्दिक शुभकामनाएं।
भवदीय

कल्याण अधिकारी/राजभाषा कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखार (लेखा व हक.) राजस्थान, जयपुर





तान्या सिंह, निदेशक

आज़ादी का पर्व

आज़ आज़ादी का पर्व है
हमें जिसपर बहुत गर्व है
चलो कुछ ऐसा काम कर जायें
हम भारत का नाम बढ़ायें

छोड़ो संकीर्ण विचारों को
तोड़ो ऐसी सभी जंजीरों को
जिन्होंने हमें अपनों से अलग किया है
हमें तंग विचारों का पिंजड़े में कैद किया है

आज़ आज़ादी का पर्व है
हमें जिसपर बहुत गर्व है
चलो कुछ ऐसा काम कर जायें
हम भारत का नाम बढ़ायें

आओ चलें हम नवजीवन की ओर
बांधें आपस में एकता और प्रेम की डोर
हमने सदा आगे बढ़ने का तय किया है
जीवन भगवदमय हो जाए मन में ऐसा संकल्प लिया है

आज़ आज़ादी का पर्व है
हमें जिसपर बहुत गर्व है
चलो कुछ ऐसा काम कर जायें
हम भारत का नाम बढ़ायें



अनन्य सिंह





मित्र

अभिजीत जाना
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

वर्ष 2010 की बात है जब यूपीएससी योग्यता पास करने के बाद सौरभ की प्रथम नियुक्ति महालेखाकार का कार्यालय, भुवनेश्वर में हुई थी जहां उन्होंने अपने कार्यालयिक जीवन के पाँच वर्ष व्यतित किये थे। वर्तमान में सौरभ कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), कोलकाता में उप निदेशक के पद पर कार्यरत हैं उनके परिवार में उनकी माँ, पत्नी और एक पुत्र है, जिसका नाम शुभ है। उनके पिता का देहांत लगभग चार वर्ष पहले ही हो चुका था।

सामान्य तौर पर सौरभ रविवार के दिन ही बाजार जाते थे परंतु कोविड-19 महामारी के कारण भीड़ से बचने के लिए अब वह महीने में केवल एक ही बार बाजार जाते थे। वैसे भी एक दिन के लिए बाजार जाने पर भी काफी सावधानियों का पालन करना पड़ता था, जैसे दो मास्क पहनना, अपने पॉकेट में सैनिटाइजर रखना और सामाजिक दूरी आदि का पालन करना।

यह सभी जानते हैं कि बंगाल के लोग मछली को कितना पसंद करते हैं और मछली से तरह-तरह का व्यंजन पकाते हैं। यहां खाने में प्रत्येक दिन मछली का सेवन सामान्य बात है। सौरभ भी मछली बाजार जाते हैं और वहां के ही एक खुदरा मछली बिक्रेता गदाई से तीन तरह की मछलियां खरीदते हैं। उनके बेटे शुभ को काटा पोना मछली काफी पसंद है और वह इसके अलावा कोई भी मछली खाना पसंद नहीं करता है। सौरभ हमेशा की तरह तीन तरह की मछलियां, कुछ हरी सब्जियां एवं कुछ अन्य राशन खरीद वापस घर लौट जाते थे।

एक दिन बाजार में सौरभ को जिस बात का डर था वही हुआ। उसने पीछे से अचानक एक आवाज सुनी - “सौरभ अगर मछली खरीदना हो जाए तो मेरे पास आकर चाय पीकर जा”, वह था हरिदास। वह देखने में हट्टा-कट्टा, काला चेहरा वाला एक व्यक्ति है। मछली बाजार के ही कोने में उसका भी एक दुकान है। आमतौर पर तो वह

समुद्री मछलियां ही बेचता है। अच्छी किस्म की मीठे पानी में पायी जाने वाली मछलियां वह कभी नहीं बेचता था इसलिए सौरभ उससे कभी भी मछली नहीं खरीदता था। वैसे भी वह जिस तरह सौरभ को तू कहकर सबके सामने संबोधित करता था, वह सौरभ को बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता था साथ ही वह अपमानित महसूस करता था। “आज व्यस्त हूँ” कहते हुए सौरभ सब्जी बाजार की ओर चल पड़ा।

हरिदास उसका बचपन का मित्र था। दोनों ही कोलकाता के श्याम बाजार में स्थित एक हाई स्कूल में कक्षा पांचवीं से एक साथ अध्ययन किया था। सौरभ हमेशा अपने कक्षा में प्रथम आया करता था और हरिदास ठीक उसका उल्टा था। कक्षा में उसे गणित विषय में 20 से अधिक अंक कभी भी नहीं मिले थे। अक्सर गणित के अध्यापक उसका कान पकड़ कर कक्षा में खड़ा कर दिया करते थे परंतु वह खेलकूद में बहुत अच्छा था। फुटबॉल में उसकी तेज गति और किक सबको आश्चर्यचकित कर देती थी। वह अक्सर ही पेड़ पर चढ़ जाया करता था और पका बोकुल, आम, बेर तोड़ कर सभी में बांटता था और सभी बहुत खुशी के साथ खाते थे। खेल के मैदान में जब हमलोगों के समूह के साथ दुसरे समूह का झगड़ा हो जाता तो तुरंत वह अपने बस्ती के बहुत सारे लड़कों को अपने साथ लाकर उन्हें मार भगाता था। उसका सभी दोस्तों पर काफी दबदबा था, पर दिल का काफी अच्छा था और कभी भी किसी बात की परवाह नहीं करता था जो दिल में आता उसे बेझिझक बोल देता था। वह सभी के लिए एक भरोसे का पात्र था। विद्यार्थी जीवन में वह मेरा एक अच्छा दोस्त हुआ करता था और प्रत्येक दिन घर पर भी आया करता था। इसके बाद कक्षा सातवीं की पढ़ाई पूरी करने के पश्चात् आगे की पढ़ाई के लिए मुझे रामकृष्ण मिशन भेज दिया गया। रामकृष्ण में पढ़ाई के बाद उच्च शिक्षा के लिए मैं दिल्ली जाकर जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय से

अर्थशास्त्र से मास्टर (एम ए) की डिग्री पूरा किया। उसके उपरांत दो साल प्रयास करके वही से आईएएएस परीक्षा पास किया।

याद है जब मैं आईएएएस का प्रशिक्षण पूरा करके घर लौटा तो एक दिन रास्ते में उससे मुलाकात हुई। पुराने कपड़े, घीसा हुआ चेहरा, दाढ़ी देख कर इतना तो समझ में आया की वो जीवन में प्रतिष्ठित नहीं हो पाया है। दूर से ही मुझे देखकर दौड़ कर आया और गले लगा लिया था। बात पुराने दोस्त की जो थी परंतु मेरे मन में न जाने क्यूं ये ख्याल आया कि मुझे उससे दूरी बनाये रखना चाहिए। जो भी हो, मेरी एक पहचान है। लोग देखेंगे तो क्या सोचेंगे। मुझे अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा की चिंता हो रही थी।

आज 18 दिसंबर, मेरे बेटे का जन्मदिन है। घर पर काफी सारे मेहमान आने वाले हैं। पूरे घर को बैलून से सजाया गया है। भोजन प्रबंध करने वाले अपने पूरे इंतजाम के साथ घर पर आ चुके थे। उन लोगो को मैं बता ही रहा था कि कहाँ रात्रिभोज की व्यवस्था करनी है तभी अचानक हरिदास आ धमका। वह मेरी पत्नी रीना को देख कर बोला भाभी आप ठीक तो हैं? सौरव किधर है? थोड़ी गपशप करने आ गया बस। मैं उसे देखकर थोड़ा परेशान हो गया और चिढ़ भी गया। मेरे कुछ कहने से पहले ही वह सोफा पर जाकर बैठ गया। मैंने सोचा, क्या मुश्किल है, अभी मेरे सारे मेहमान आ जाएंगे। मेरे अन्य दोस्तों के सामने उसे अपना दोस्त बताकर परिचय कराना मेरे लिए संभव नहीं है। अतः बैठे रहने के बावजूद भी मैं अपनी व्यस्तता दिखाने लगा। स्थिति को समझते हुए वह थोड़ा शर्मिदा होते हुए बोला-‘समझ में आ रहा है, तू आज काफी व्यस्त है, लगता है घर में आज कोई अनुष्ठान है’। चल फिर किसी समय आऊंगा। यह कहकर हरिदास धीरे-धीरे घर से चला गया। रीना आकर बोली “ऐसे शुभ दिन पर बिना कुछ खिलाए कैसे भेज दिया”। सौरव ने कहा-“अरे! छोड़ो, अभी सारे ऑफिस के सहकर्मी आ जाएंगे। उसके यहाँ

रहने से मुश्किल हो जाता और तो और वह अच्छे कपड़े भी पहन कर नहीं आया था”।

अप्रैल महीना का आखिरी दिन चल रहा था। आज ऑफिस से सौरव घर जल्दी चला आया। तबीयत कुछ खास अच्छी नहीं लग रही थी। एक कप चाय पीकर बिस्तर पर जाकर सो गया। शरीर हल्का गर्म था। ऐसा लग रहा था कि यदि दो दिन आराम कर लूं तो ठीक हो जाएगा। परंतु आज पांच दिन बीत गए थे। बुखार भी नहीं उतर रहा था। डॉक्टर के सलाह पर कोविड जाँच कराया तो रिपोर्ट पॉजिटिव आ गयी। सुबह से थोड़ा सांस लेने में भी कष्ट हो रहा था। रीना बहुत बेचैन हो गई, डॉक्टर से बात की। डॉक्टर ने भी तुरंत अस्पताल में भर्ती होने की सलाह दी। अस्पतालों में पता करने पर यह मालूम हुआ कि किसी भी अस्पताल में बेड खाली नहीं था। जब इस संबंध में ऑफिस के साथियों और दोस्तों से फेसबुक के माध्यम से मदद मांगी, तब किसी ने दवा लेने के वर्तमान नुस्खे भेज दिए तो किसी ने सलाह दी कि उल्टे होकर सोने से सांस की तकलीफ दूर हो जाती है, परंतु किसी से भी अस्पताल में भर्ती के लिए मदद नहीं मिली। कोई भी दोस्त, पड़ोसी या रिश्तेदार डर के कारण मेरी खोज-खबर लेने तक नहीं आए। कभी भी मैंने अपने आप को इतना लाचार और बेबस नहीं पाया था। तभी समझ में आया की मेरे स्टेटस का कोई मूल्य नहीं है। मुझे इस विकट परिस्थिति में कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि अब मैं क्या करूं? दिमाग बिल्कुल सन्न हो चुका था। सांस की तकलीफ और बढ़ती चली जा रही थी। अब और कुछ सोचने की क्षमता नहीं थी मुझमें। शरीर में काफी कमजोरी महसूस होने लगी थी। एहसास हुआ कि घर पर इलाज के बिना मैं मर जाऊंगा और तब मेरे परिवार को कौन देखेगा?

अचानक दरवाजे की घंटी की आवाज आयी। दरवाजा खोलते ही पीपीई किट पहने दो आदमी घर में घुस गए। सौरव ने पुछा, कौन हो आपलोग?। उत्तर मिला

‘अरे! पहचाना नहीं, मैं हरिदास’। ‘आज सुबह तेरे ही पड़ोसी बनर्जी से मुझे तेरे कोरोना पॉजिटिव होने की खबर मिली। फिर मैंने हाथीबगान में जो देवीना हॉस्पिटल है वहां तेरे लिए एक बेड की व्यवस्था की है। नीचे एम्बुलेंस भी तैयार है। चल जल्दी। डॉक्टर सेन की देखरेख में तुझे भर्ती करना है। बहुत जल्दी ही तू ठीक हो जाएगा’। उसके जैसा एक साधारण इंसान ऐसी महामारी में अस्पताल में भर्ती करने की व्यवस्था कर पाएगा यह तो सौरव ने कभी सोचा ही नहीं था। उसे काफी आश्चर्य हुई। हरिदास हॉस्पिटल में हर रोज सौरव को देखने आया करता था। हॉस्पिटल में ही पता चला कि वहां काफी सारे कोविड रोगी हैं। हरिदास उनलोगों के लिए दोपहर 12 से रात 8 बजे तक खाना बनाना, खिलाना और अन्य कई काम कर देता था। इन सब के लिए हरिदास कोई पैसे भी नहीं लेता था। इसलिए हॉस्पिटल के चिकित्सक तथा वहां के स्टाफ उसके इस निःस्वार्थ सेवा भावना को देखते हुए उसका बहुत सम्मान करते थे। बेड खाली न रहने के बावजूद भी हरिदास के अनुरोध से हॉस्पिटल प्राधिकारी ने सौरव को भर्ती कर लिया था।

यह एहसास हुआ केवल बचपन के मित्र हरिदास के कारण ही मैं आज जीवित हूँ। दो सप्ताह के बाद

हॉस्पिटल से वापस घर आया। आज मैं काफी ठीक हूँ। दुर्बलता भी कम है। अगले सप्ताह से अब मैं ऑफिस भी ज्वाइन कर सकता हूँ। शाम को हरिदास आकर हाजिर हो गया। साथ में घर का बना हुआ व्यंजन भी लेकर आया, आलू झिंगा पोस्तो और बिउली दाल। रीना को भी नहीं पता की ये मेरी पसंद की व्यंजन है। दो दोस्तों के बीच बचपन की मजेदार बातें शुरू हो गई थी। बचपन की हर छोटी-छोटी बात हरिदास को याद थी। एक बार फुटबॉल खेलते समय मेरा वस्त्र फट गया था। हरिदास ने ही हर किसी से छूपाकर मुझे अपने घर पहुंचाया था। ये बात सुनकर रीना अपनी हंसी नहीं रोक पा रही थी। यहां तक कि मुझे खुद को नहीं पता था कि मेरे अंदर इतनी हंसी छुपी हुई है।

आज कोविड ने मेरा बहुत नुकसान करने के बाद मुझे यह सीख दे डाली कि लोगों को उनके पद और उनकी आर्थिक क्षमता से मापना सही नहीं है। प्रत्येक मनुष्य को उसके मन की गंभीरता और मानसिकता से आकलन करनी चाहिए। हो सकता है कि किसी साधारण मनुष्य का असाधारण काम एक नए जीवन का सूचक हो। “मुझे माफ करना मेरे मित्र हरिदास”।



हिंदी का थोड़ा आनंद लीजिये... मुस्कुराइए

बिरेन्द्र सिंह

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पर्या. एवं वै.वि. नई दिल्ली

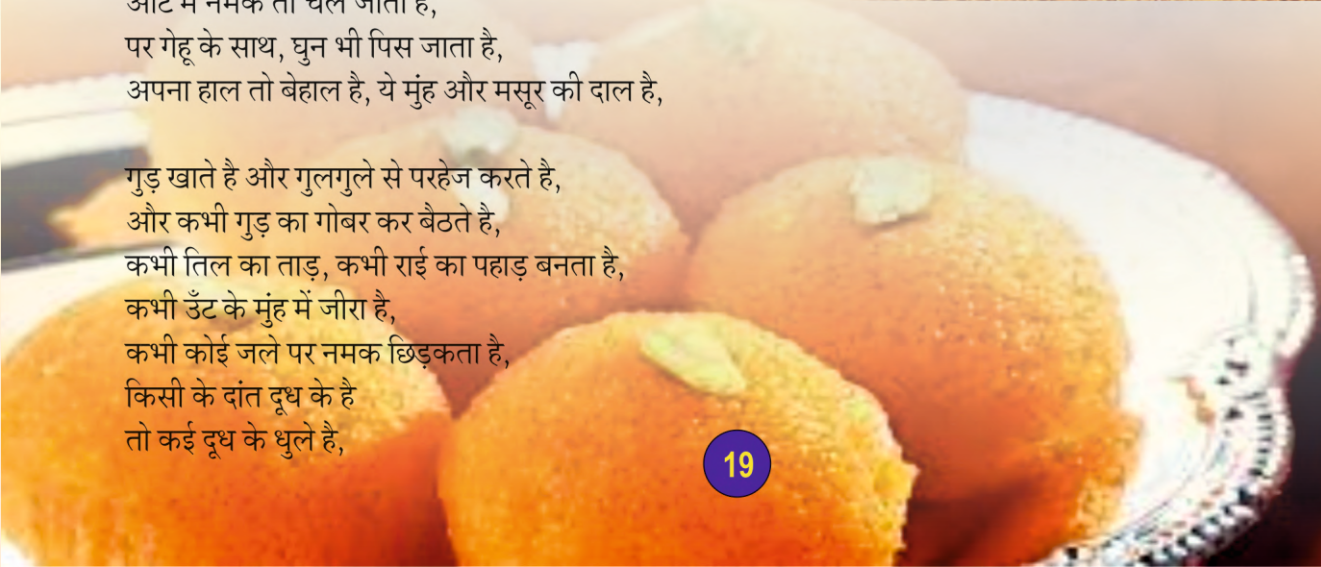
हिंदी के मुहावरे, बड़े ही बावरे हैं,
खाने पीने की चीजों से भरे हैं....
कही पर फल है तो कही आटा-दालें हैं,
कही पर मिठाई है, कही पर मसाले हैं,
चलो, फलों से ही शुरु कर लेते हैं,
एक एक कर सबके मजे लेते हैं...

आम के आम और गुठलियों के भी दाम मिलते हैं,
कभी अंगूर खट्टे हैं,
कभी खरबूजे, खरबूजे को देख कर रंग बदलते हैं,
कही दाल में काला है,
तो कही किसी की दाल ही नहीं गलती है,

कोई डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाता है,
तो कोई लोहे के चने चबाता है,
कोई घर बैठ रोटियां तोड़ता है,
कोई दाल भात में मूसलचंद बन जाता है,
मुफलिसी में जब आटा गीला होता है,
तो आटे दाल का भाव मालूम पड़ जाता है,

सफलता के लिए कई पापड़ बेलने पड़ते हैं,
आटे में नमक तो चल जाता है,
पर गेहू के साथ, घुन भी पिस जाता है,
अपना हाल तो बेहाल है, ये मुंह और मसूर की दाल है,

गुड़ खाते हैं और गुलगुले से परहेज करते हैं,
और कभी गुड़ का गोबर कर बैठते हैं,
कभी तिल का ताड़, कभी राई का पहाड़ बनता है,
कभी उँट के मुंह में जीरा है,
कभी कोई जले पर नमक छिड़कता है,
किसी के दांत दूध के हैं
तो कई दूध के धुले हैं,



कोई जामुन के रंग सी चमड़ी पा के रोई है,
तो किसी की चमड़ी जैसे मैदे की लोई है,
किसी को छट्ठी का दूध याद आ जाता है,
दूध का जला छाछ को भी फूंक फूंक पीता है,

शादी के लड्डू बुरे है, जिसने खाए वो भी पछताए,
और जिसने नहीं खाए, वो भी पछताते है,
पर शादी की बात सुन, मन में लड्डू फूटते है,
और शादी के बाद, दोनो हाथों में लड्डू आते है,

कोई जलेबी की तरह सीधा है, कोई टेढ़ी खीर है,
किसी के मुंह में घी शक्कर है,
सबकी अपनी अपनी तकदीर है...
कभी कोई चाय-पानी करवाता है,
कोई मक्खन लगाता है
और जब छप्पर फाड़ कर कुछ मिलता है,
तो सभी के मुंह में पानी आ जाता है,

भाई साहब अब कुछ भी हो,
घी तो खिचड़ी मे ही जाता है, जितने मुंह है, उतनी बातें है,
सब अपनी-अपनी बीन बजाते है, जितने मुंह है, उतनी बातें है,
सब अपनी-अपनी बीन बजाते है, पर नक्कारखाने में
तूती की आवाज कौन सुनता है, सभी बहरे है और बावरे हैं
ये सब हिंदी के मुहावरे है...

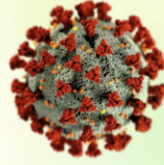
ये गजब मुहावरे नहीं बुजुर्गों के अनुभवों की खान है...
सच पूछे तो हिंदी भाषा की जान है....





आकाशदीप मुखर्जी,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कोरोना से मिली सीख



प्रत्येक वर्ष की भांति जब हम एक नये वर्ष में प्रवेश करते हैं तो हम सोचते हैं कि इस वर्ष कुछ नया करेंगे और सफलता की एक नई ऊंचाई को छूने का प्रयास करेंगे, अपनों को सदैव खुश रखेंगे साथ ही अपनी बुरी आदतों को छोड़ कर अच्छी आदतों को अपनाएंगे। पर इस वर्ष इसमें एक भयंकर आकस्मिक बदलाव आया वह था कोरोना नामक एक भयंकर महामारी।

कोरोना का काल जब अपने चरम उफान पर था तो हिंदुस्तान ने लाखों लोगों को सड़कों पर देखा, किसी को रोते-बिलखते हुए तो किसी को भुख से तरसते हुए और किसी को अपने को खोते हुए तो किसी को अपनी आखरी सांसें गिनते हुए पर यहां कुछ ऐसे लोग (यूं कहा जाए तो संकट की घड़ी के असली नायक) भी थे जिन्होंने इन असहाय अथवा बेसहारा लोगों की बिना भेद-भाव किए मदद की।

बात है उस वायरस की जो खुली आंखों से नहीं दिखता, देखने में अत्यंत सूक्ष्म यह वायरस एक विशाल और भयानक कार्य कर गया इसने लोगों के जीवन में तहलका मचा दिया पर इसकी वजह से कुछ अच्छे कार्य



भी हुए। इसने लोगों को जीवन जीने का असली अनुशासन सीखाया। इसकी खौफ ने स्वच्छता के पाठ के साथ-साथ लोगों को मास्क पहनने की एक अच्छी आदत की भी सीख दे डाली।

जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण के बावजूद भी लोग मास्क का प्रयोग नहीं करते थे पर आज लोग केवल इस सूक्ष्म जीव के खौफ से मास्क का प्रयोग करने लगे हैं और इसने स्वच्छता का महत्व भी सीखा दिया है। अब लोगों ने सफाई को अपने जीवन का अभिन्न एवं महत्वपूर्ण हिस्सा बना लिया है।

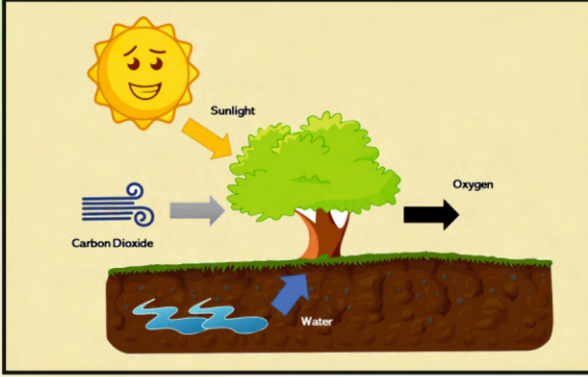
2020 के पहले हमारे देश के कई राज्यों में प्रदूषण का स्तर काफी बढ़ गया था और इसका नियंत्रण करना कठिन होता जा रहा था। कोरोना महामारी के फैलाव को रोकने के लिए जब सरकार ने लॉकडाउन करने का ऐलान किया तब पूरा भारत बंद कर दिया गया। यातायात के साधनों के गमन पर रोक लगा दिया गया साथ ही कई उद्योग, धंधों आदि बंद कर दिए गए तब प्रकृति फिर से अपनी पुरानी स्थिति में लौटने की कोशिश में लग गई। इस



स्थिति में तो कुछ समाचार इस तरह सामने आए थे कि कई अलग-अलग तरह के जानवर जो वैज्ञानिकों के मुताबिक विलुप्त हो चुके थे, वह भी दिखाई देने लगे थे क्योंकि रास्तों पर मानवीय आवागमन नहीं हो रही थी। इस घटना ने लोगों को यह सीखाया कि इस पृथ्वी पर इन जानवरों का भी रहने का उतना ही हक है जितना कि इंसानों का।

ऑक्सीजन की कमी या इसकी आवश्यकता के समय इसकी अनुपलब्धता ने लोगों के दिमाग को झकझोर कर रख दिया था कि पेड़-पौधे भी इस संसार के एक

अभिन्न अंग है जिन्हें कभी अलग नहीं किया जा सकता है। जिसे कुछ लालची इंसानों ने अपनी जरूरतों के लिए काटा है और व्यापक स्तर पर इसे नुकसान पहुंचाया है।



यह तो सभी जानते हैं कि कागज पेड़-पौधों से प्राप्त किए जाते हैं परंतु आज इस महामारी ने कागजों के उपयोग में कमी ला दी है। इस महामारी के खौफ ने विद्यालय से लेकर कॉलेजों तक और सरकारी दफ्तरों से लेकर गैर-सरकारी दफ्तरों तक को बंद करा दिया एवं ऑनलाइन पढ़ाई एवं कार्य करने के माध्यम को प्रचलन में ला दिया। गंगा और यमुना जैसी बड़ी नदियां जो प्रदूषित हो गई थीं, उन सभी नदियों में लॉकडाउन के दौरान प्रदूषण में काफी कमी देखी गई थी और यह कमी केवल मात्र इस सूक्ष्म जीव की ही देन थी जिसने हमें यह सीखाया कि हमारे लिए सफाई का महत्व कितना ज्यादा है।

पहले हम दुकान पर लड़ते-झगड़ते हुए सामान खरीदते थे लेकिन अब हमें कतारों में लगना अच्छा लगता है और किसी को डिजिटल माध्यम से भुगतान करना भी। इसने लोगों को काफी हद तक डिजिटल होना सीखा दिया। लगभग हर जगह पर इस डिजिटल तकनीक का उपयोग किया जा रहा है जो इस महामारी की स्थिति में या आने

वाले भविष्य के लिए एक अच्छी व्यवस्था साबित हो सकती है।

कुछ लोगों ने तो समय के अभाव और कार्य की व्यस्तता के कारण अपने सपनों को जीना ही छोड़ दिया था। इस कोरोना महामारी ने ही उन सपनों को फिर से जीना सीखाया। जब लोग घर में ही बैठे ऑनलाइन माध्यम से अपने दफ्तर के काम को पूरा कर रहे हैं और समय की बचत कर रहे हैं तो उन्होंने अपने सपनों को फिर से अपना लिया जैसे संगीत, नृत्य, लेखनी, खाना बनाना आदि और इसे लोग खुले मन एवं खुशी के साथ पूरा भी कर रहे हैं।

लॉकडाउन की स्थिति में जो लोग अपनी जरूरतों को पूरी कर सकते हैं उन्हें यह नहीं पता की सड़क पर जो श्रमिक, मजदूर वर्ग और बेसहारा वर्ग बैठे हैं उनके लिए एक वक्त की रोटी जुटा पाना कितना मुश्किल है परंतु इस महामारी ने दिल से किसी की मदद करना सीखाया कि प्रत्येक हिंदुस्तानी अपना भाई-बंधु है जिसे धर्म और जात के नाम पर नहीं तौला जा सकता है। वास्तव में, इस महामारी ने ही इंसानियत एवं मानव धर्म का असली पाठ पढ़ाया।

कोरोना की इस महामारी में एक चीज अच्छी हुई, स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में काफी उन्नति देखने को मिली और इसमें नई तकनीकों का भी आविष्कार हुआ घर में काम करने वाले हेल्पर जो लॉकडाउन के कारण अनुपस्थित थे उनकी अहमियत का भी पता चला कि उनके बिना घर का काम करना कितना मुश्किल है।

परंतु सबसे ज्यादा दुःख की बात तो यह है कि कोरोना-काल में न जाने कितने लोगों ने अपनों को खोया, करोड़ों लोग अपनों से दूर हो गए, लेकिन इस बुरे वक्त ने हमें अपनों की कद्र करना भी सीखा दिया।





गाँव की थी मिट्टी

चंदा तिवारी,

पत्नी-श्री मनोज कुमार तिवारी, लेखापरीक्षक

महानगरीय जीवन कहते ही मन में तमाम सुख सुविधाओं से लैस जीवन की तस्वीर मन में उभर आती है। भागदौड़ और रफ्तार भरी जिंदगी का ख्याल आता है। इस भाग दौड़ भरी जिंदगी में किसी के पास वक्त नहीं है। रोजी-रोटी की तलाश एवं बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के मद्देनजर अधिकांश लोग शहर का रुख कर चुके हैं। गांव सूने पड़े हैं। बीते समय में जब लोग अधिकांश समय गांव में बिताया करते थे तब शायद ही किसी को अवसाद या रक्तचाप जैसी तकलीफें हुआ करती थी। अभाव ग्रस्तता में भी अजीब तरह का आनंद था। विशेष कर हम महिलाओं की उन्मुक्तता पाबंद तो थी फिर भी न जाने क्यों उस पाबंदी में अजीब सा सुकून था। एक वह समय था जब बच्चे मेहमानों के आने की खुशी में फूले नहीं समाते थे लेकिन आज का वातावरण बदल चुका है। कोरोना काल में निश्चय ही कईयों के मन में अपने मिट्टी के प्रति प्रेमभाव का संचार कर दिया है। मैंने भी उनपलों को अपने कविता के माध्यम से व्यक्त करने की कोशिश की है। उम्मीद करती हूं वे सभी लोग जो अपनी मातृभूमि से लगाव रखते हैं, यह कविता उन्हें जरूर पसंद आएगी। कविता का शीर्षक है.....

‘गांव की थी मिट्टी’

गांव की थी मिट्टी कितना आनंद था
किस्से थे अनकहे तरंग ही तरंग था
दादी चाची फूआ और मौसी का संग था
लम्हें थे अनमोल जिनमें नहीं कोई जंग था।

बच्चे बड़े हो या फिर कोई नौजवान।
सबकी थी मस्ती सबका जीवन था आसान
ना थी पैसों की होड़, आधुनिकता से कोसों दूर।
प्रकृति की आगोश में नैसर्गिक जीवन था भरपूर।
न कोई अवसाद न रक्तचाप का शिकार था
सब थे एक दूजे के, चित निर्विकार था
आपसी मनमुटाव में भी ना कोई प्रहार था
आनंद की थी झोली, उमंग बेशुमार था

जात पात और राग द्वेष के ऊपर त्यौहार था
ऊंच हो या नीच एक दूजे पर ऐतबार था
बच्चे थे प्रफुल्लित, बुजुर्गों का गुलजार था
दुख के घने बादलों में भी, धैर्य बेशुमार था
कहां गए वो लम्हें जिनमें जीवन बेशुमार था।



शर्मिला बन्दोपाध्याय
सहायक पर्यवेक्षक

मानवता

हाल फिलहाल ही संवाद पत्रों में प्रकाशित कुछ खबरें-

नाले में बहकर आ रही एक प्लास्टिक के बैग को मुहल्ले के ही कुछ कुत्तों ने खींचकर बाहर निकाला और बैग को देखकर कुत्ते इतने जोर-जोर से भौंकने लगे कि बेपरवाह लोगों की झुंड वहां जमा हो गई। वहां मौजूद सभी आश्चर्य में थे कि आखिर बैग में क्या है? देखा गया कि बैग में एक नवजात शिशु - जो अभी भी जीवित था।

स्थान - कोलकाता

मध्य रात्रि में एक बहुमंजिला इमारत के प्रथम तल में आग लग गई। संभवतः यह आग गैस सिलिन्डर से लगी होगी। मुहल्ले के निवासी गहन निद्रा में थे। एक पालतू कुत्ता उस रात्रि में जोर-जोर से भौंकने लगा। इस कारण सभी जाग जाते हैं और आग की लपटे को देखते हुए सभी घर से सुरक्षित बाहर भी निकल आते हैं परंतु उस निरीह पालतू कुत्ते के छोड़कर क्योंकि भागमभाग में किसी को याद नहीं आया कि बंधे हुए कुत्ते की डोर को खोल दी जाए।

स्थान- दिल्ली

साल 2016 में जब पूरा कोलकाता शहर डेंगू का प्रकोप झेल रहा था। उस समय कुछ डॉक्टरों का सलाह था कि किसी भी शहर या गाँव में जहाँ आवारा कुत्ते, बिल्लियाँ रहते हैं, मच्छरों के लिए वे प्रथम लक्ष्य होते हैं। अतः आए दिन इनकी संख्या में दिनों दिन कमी होती जा रही है। यही कारण है कि मच्छरों से उत्पन्न होने वाले बीमारियों के सबसे अधिक शिकार मनुष्य हो रहे हैं। इन खबरों के बीच एक ही बात प्रकट होती है कि रास्ते के आवारा कुत्ते हमारे प्रिय एवं विश्वासी बंधु होते हैं। अपने थाली के शेष बचे एकमुट्ठी खाने के बदले वह जो अपनी सर्वश्रेष्ठ भेंट हमें देते हैं वह है इनका प्यार और विश्वास।

हम अपने आस-पास के परिवेश में जिन जीव-जंतुओं को हमेशा देखते हैं उनमें मुख्यतः कुत्ते, बिल्लियाँ, बकरियाँ एवं गाय, भैंस और विभिन्न प्रकार की पक्षियाँ; ये सभी वन में रहने वाले प्राणी नहीं हैं बल्कि ये मनुष्यों के साथ उनके ही परिवेश में रहना पसंद करते हैं और उनके द्वारा प्रदान किए गए भोजन को खाकर ही जीवित रहते हैं।



सामान्य भाषा में कहा जाए तो ये निरीह प्राणी मनुष्यों पर ही आश्रित रहते हैं। शीत, गर्मी, वर्षा या किसी भी ऋतु में ये प्राणी रास्ते पर ही रहकर अपना जीवन काटते हैं। खराब हो चुके या फेंके गए खाने को ही खाकर इन निरीह प्राणियों की कृतज्ञता मनुष्यों के प्रति शत-प्रतिशत बनी रहती है। हम अपने प्रियजनों के लिए अपने पूरे जीवन भर की कमाई, उनके प्रति अपना समर्पण और त्याग देने के बावजूद भी क्या हम यह कह सकते हैं कि इसके बदले उनकी कृतज्ञता हमें प्राप्त हो पाएगी? परंतु हमारी इन निरीह प्राणियों के प्रति एक छोटी सी अवदान के बदले यह निश्चित होकर कह सकते हैं कि ये भाषाहीन, आश्रयहीन जीव हमारे लिए पूरे जीवन के लिए अपनी कृतज्ञता एवं विश्वास प्रदान करते रहेंगे।

टेलीविजन धारावाहिकों के सुसज्जित फोटो की तरह यह जीवन हमें वास्तविकता से इतनी दूर ले जा रही है कि हमारे भीतर पशु-पक्षियों के प्रति एक सकारात्मक विचारधार ही नहीं बन पा रही है। इस सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ प्राणी मनुष्यों को यह समझना होगा कि पारितंत्र की रक्षा करने की जिम्मेदारी आखिरकार उन्हीं की है। मनुष्य ने अपनी अत्यधिक लोभ, भोग-विलासिता जीवन एवं आत्म-केंद्रित विचारधारा के कारण ही प्रकृति, परिवेश को पंगु बना दिया है और साथ ही मनुष्य जाति का भविष्य भी अनिश्चितता का शिकार बनता जा रहा है।

आईये, जीवन के प्रति हम अपने नजरिये को बदलें और हमारे परिवेश के समस्त प्राणियों को बीच सौहार्दपूर्ण संपर्क बनाए ताकि यह पृथ्वी अपनी स्वाभाविक स्थिति में लौट जाए -

सर्वप्रथम यह बात हमें स्पष्ट तरीके से जान लेना चाहिए कि हमारे चारों तरफ पेड़-पौधे (फूल या फल के ही पौधे नहीं बल्कि हजारों बेनाम पेड़-पौधे भी), गाय, भैंस, बकरी, कुत्ता, बिल्ली तो हैं ही इसके अलावा चुहा, छुछुंदर, सांप, मेढक और विभिन्न प्रकार के कीड़े जैसे- मकड़ियाँ, चिट्टियाँ भी पारितंत्र के स्वाभाविक क्रियाशीलता के लिए समान जरूरी हैं।

परिवार के सभी सदस्यों विशेष कर बच्चों को यह शिक्षा देनी चाहिए कि हमारे परिवेश में मौजूद सभी प्राणियों को साथ लेकर ही हमें चलना होगा और इसी में हमारी भलाई है। बच्चों को इन निरीह प्राणियों से भय या घृणा करना नहीं सिखानी चाहिए बल्कि उनमें इन प्राणियों के प्रति प्रेम की भावना, दोस्ती की भावना एवं सहायता प्रदान करने की भावना जागृत करना चाहिए।

पक्षी या जो आवारा जीव-जंतु है, उनके लिए घर के किसी कोने या दिवालों या खिड़की के पास या घर के छतों पर एक बर्तन में नियमित पानी रखने की आदत हमें डालनी चाहिए। साथ ही उन बर्तनों में नियमित पानी बदलते रहने से उनमें मच्छर भी पैदा नहीं होंगे।

सामाजिक तौर पर प्रत्येक परिवार को कम से कम एक कुत्ते या बिल्ली को खिलाने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। वर्षा या शीत में उन निरीह जीवों को दिए गए छोटी सी आश्रय के बदले उनसे मिलने वाले प्यार एवं विश्वास से हमारा जीवन भर जाएगा।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के निर्देशानुसार एबीसी (एनिमल बर्थ कंट्रोल) कार्यक्रम में भाग लेकर इन जीवों की नसबंदी करानी चाहिए ताकि इनकी संख्या नियंत्रण में



रहे।

वर्ष में एकबार उनका टीकाकरण (विशेष कर कुत्तों के लिए) करने की व्यवस्था करनी चाहिए। ऐसी व्यवस्था करने से उनके साथ-साथ हम भी सुरक्षित रहेंगे और उनके पास जाने पर कोई भय भी नहीं रहेगा। ऐसी व्यवस्था करना यदि अकेले संभव न हो, तो हमें स्थानीय प्रशासन के साथ मिलकर परस्पर सहयोग करने से यह कार्यक्रम को सफल बनाया जा सकता है। अनेकों सरकारी/गैर-सरकारी संस्थाएं इन आवारा जीवों के टीकाकरण एवं नसबंदी की व्यवस्था बहुत ही कम खर्चों में करते हैं।

हमें यह भी ध्यान देने की जरूरत है कि भारतीय संविधान की धारा 21 में इन जंतुओं के लिए भी जीवन एवं स्वाधीनता के मौलिक अधिकार का प्रावधान है। इनके जन्म स्थान से इनको भगा देना या स्थानांतरित कर देना दोनों ही गैर-कानूनी हैं।

साथ ही हमें यह भी जानना जरूरी है कि प्रेवेन्शन ऑफ क्रुअल्टी टू एनिमल एक्ट, 1960 की धारा-II के अनुसार-

- इन्हें आघात पहुँचाना, पैर मारना, पत्थर, लाठी इत्यादि किसी भी यंत्र से मारना, अतिरिक्त बोझ डालना एवं अकारण व्यथित करना।
- पालतू पशुओं पर किया गया अत्याचार।
- वृद्ध या अस्वस्थ पालतू पशुओं को बलपूर्वक काम करवाना या प्रतिकूल वातावरण में रखना, असुविधाओं में रहने को बाध्य करना।
- केवल मनोरंजन हेतु उपयोग करना या उनके जरिये पैसे का उपार्जन करना।
- वृद्ध या अस्वस्थ पशुओं को रास्ते पर मरने हेतु छोड़ना इत्यादि सभी गैर-कानूनी हैं और इसमें दंड का भी प्रावधान है। इसलिए इनके साथ यदि कोई अन्याय हो, तो जरूर प्रतिवाद करना चाहिए।



एनिमल वेलफेयर बोर्ड ऑफ इंडिया से अनुमति लेकर हम अपने इलाके के आवारा जीव-जंतुओं की देखभाल करने की स्वीकृति या वैद्यता प्राप्त कर सकते हैं। जो लोग इनकी देखभाल करते हैं या इन्हें खाना मुहैया करवाते हैं, उनके इस काम में बाधा उत्पन्न करना या उनसे दुर्व्यवहार करना भी दंडनीय अपराध है। यदि किसी भी तरह का ऐसा अभियोग पुलिस को मिलता है तो किसी वारंट के बिना ही पुलिस को गिरफ्तार करने की क्षमता प्रदान की गई है।

पृथ्वी की सर्वश्रेष्ठ एवं बुद्धिमान प्राणी यानि हम मानवजाति असीम क्षमता के मालिक हैं। इस क्षमता का प्रदर्शन किसी पर अत्याचार या किसी को मुसीबत में डालकर नहीं करना चाहिए बल्कि औरों को आजादी और सही तरीके से जीने में मदद एवं प्यार, स्नेह के साथ अपनी क्षमता का प्रदर्शन करनी चाहिए ताकि मानवता का जय-जयकार हो सके। उन निरीह पशुओं की तरफ कभी उनकी आँखों में झाँक कर तो देखिए - आप उनके आँखों में एक शर्तहीन स्नेह और प्यार भरी संदेश की अनुभूति करेंगे। कभी देखिए।





के. एस. सुरेश बाबु
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(संचार) चेन्नई

श्री रामानुजाचार्य



श्री रामानुजाचार्य श्रीपेरंबदूर में वर्ष 1017 के आद्रा नक्षत्र में चैत्र मास में जन्म लिया। उनके माता-पिता का नाम कान्तिमती और केशव सोमयाजी था।

श्री रामानुजाचार्य जी ने यादवप्रकाशजी के पास काँचीपुरम में वेदों की शिक्षा ली, वैदिक ग्रंथों की व्याख्या में अंतर के कारण यादवप्रकाश से अलग हो गये थे। श्री रामानुजाचार्य जी को वैष्णव सम्प्रदाय में लाने के लिए यामुनाचार्यजी ने अपने पाँच शिष्यों को श्री रामानुजाचार्य जी को सिखाने की आज्ञा दी थी।

श्री वरदराज पेरुमाल भगवान ने काँचीपूर्णजी के माध्यम से श्री रामानुजाचार्य जी को महापूर्णजी को गुरु स्वीकार लेने को कहा और 6 वाक्य बताया जो विशिष्टाद्वैत सम्प्रदाय का मुख्य आधार है। श्री रामानुजाचार्य जी महापूर्णजी के साथ श्रीरंग जाते वक्त यामुनाचार्यजी की मोक्षप्राप्ति हुई, इसलिए

श्री रामानुजाचार्य जी यामुनाचार्यजी को नहीं मिले।

यामुनाचार्यजी के 3 सपनों को श्री रामानुजाचार्य जी ने पूरा किया। सम्प्रदाय में पराशर और व्यास नामक बच्चे कूसलवान शिष्य के माध्यम से मिले। “श्री भाष्य” ब्रह्मसूत्र पर भाष्य को रामानुजाचार्य जी ने लिखा, अपने शिष्य तिरुकुरुगूर पिरान पिल्लान के माध्यम से तिरुवायमेली के बारे में 6000 पङ्क्ति व्याख्यान लिखा ऊपर के तीनों कार्य यामुनाचार्यजी के अधूरे सपने थे जिसे रामानुजाचार्यजी ने पूरा किया।

श्री रामानुजाचार्यजी ने निम्नलिखित पाठ सीखे –

1. महापूर्णजी से पंचसंस्कार उपदेश प्राप्त किया।
2. तिरुकोष्टियूर नंबी से चरम श्लोक विशेष अर्थ सीखा, 18 बार जाने पर ही रामानुजाचार्यजी को विशेष अर्थ मिला। विशेष अर्थ गुप्त था और सबको सिखाना मना था। रामानुजाचार्यजी ने तिरुकोष्टियूर सौम्य नारायण मंदिर

गौपुर प्रहार के ऊपर चढ़के विशेष अर्थ को सामान्य लोगों को सिखाया। रामानुजाचार्यजी का लोगों के प्रति कृपा को देखकर तिरुकोष्टियूर नंबी उनको “एम्बेरुनार” का नाम दिया जिस का मतलब भगवान के समान कृपा बरसानेवाला।

3. तिरुमालै आण्डान से तिरुवायमोली विशेष अर्थ सीखा।
4. श्री सैलेसपूर्णजी से श्रीरामायण उपन्यास सीखा।
5. तिरुवरंगंतु अरैयर से 4000 दिव्य प्रबंध सीखा।

श्री रामानुजाचार्यजी ने नौ ग्रंथ लिखे –

वेदार्थ संग्रह, श्री भाष्यं, भगवतगीता भाष्यं, वेदान्तदीपः, वेदान्तसारः, गध्यत्रयं (शरणागति गंध्यं, श्रीरंग गंध्यं, श्री वैकुण्ठ गंध्यं) और नित्यग्रंथं आदि लिखा श्री रामानुजाचार्यजी को कई नाम मिला

1. श्रीरंग पेरियपेरुमाल ने उनको “उडैयवर” नाम दिया जिसका मतलब दोनों लोक इभूलोक (लीला विभूति) वैकुण्ठलोक (नित्य विभूति) का नायक घोषित किया।
2. “तिरुप्पावै जीयर” नाम दिया महापूर्णजी ने क्योंकि रामानुजजी हमेशा तिरुप्पावै गाते थे।
3. “श्री भाष्यकार” – सरस्वती देवी ने श्री भाष्य लिखने के लिए दिया।
4. कोयिल अन्नण – गोदा देवी ने रामानुजजी को अपना भाई माना क्योंकि रामानुजजी गोदा देवी की इच्छा के अनुसार मीठा दही और चावल पायासम 100 बड़े बर्तन में (अलगरकोयिल) सुन्दरराजपेरुमाल को अर्पण किया।
5. एम्बेरुमानार – तिरुकोष्टियूर नंबी ने दिया।

श्री रामानुजाचार्यजी ने होयसला राजा बिट्टिदेवा को श्री वैष्णव सम्प्रदाय में लाया और नाम विष्णुवर्धन दिया। श्री रामानुजाचार्यजी कर्णाटक के तोण्डनूर में एक साथ 1000 लोगों को वाद-विवाद तर्क में जीता। यज्ञमूर्ति को वाद-विवाद में जीत कर अपना शिष्य बनाया नाम दिया “पेरुलाल पेरुमाल एम्बेरुनार” जिसका मतलब स्वयं समान है।

श्री रामानुजाचार्यजी को भगवान के साथ रिश्ता –

1. काँचीपुरं देवराज पेरुमाल को माता-पिता माना
 2. तिरुपति बालाजी को शिष्य माना
 3. श्रीरंगनाथ पेरुमाल को गुरु माना
 4. संपथकुमार मेलकोट को पुत्र माना
- चार युग में श्री रामानुजाचार्यजी कैसे थे –

1. सत्य युग – आदिशेष
2. त्रेतायुग – लक्ष्मण
3. द्वापरयुग – बलराम
4. कलियुग – श्री रामानुजाचार्य

रामानुजाचार्यजी के प्रमुख प्रतिमा विग्रह –

1. आलवार तिरुनगरी में नम्मालवार ने “भविष्यदायार्थ” का मूर्ति स्थापित किया।
 2. तिरुनारायणपुरं में अपने भक्तों के लिए भक्तप्रिय “तमरुगुंद तिरुमेणी” विग्रह है।
 3. श्री पेरुम्बूदूर में रामानुजजी को स्वयं प्रिय “तानुगुंद तिरुमेणी”
 4. श्रीरंगमंमे स्वयं “तानान तिरुमेणी” विग्रह है।
- कूरत्तालवान, अनन्तालवान, एम्बार, मुदलिआण्डान, तिरुकुरुगै पिरान पिल्लान, किडाम्बी आच्चान आदि उनके शिष्य थे। श्री रामानुजाचार्य जी के साथ 700 सन्यासी शिष्य, 12000 ग्रहस्थ शिष्य थे। सबसे श्रेष्ठ शिष्य श्री रामानुजाचार्य को वडुग नंबी थे। वडुग नंबी रामानुजाचार्यजी को ही स्वयं भगवान मानते थे। हमेशा रामानुजाचार्यजी को दूध दिया करते थे, उनके लिए रामानुजजी रंगनाथ भगवान से बड़े थे।

श्री रामानुजाचार्यजी के शिष्य कूरत्तालवान ने श्री भाष्य लिखने में मदद किया। क्रिमिकण्ट चोला राजा से रामानुजाचार्य को बचाया और खुद आँख खोया। कूरत्तालवान पहले मोक्ष प्राप्ति हुआ रामानुजाचार्यजी के पहले।

श्री रामानुजाचार्यजी परम कारुण्य थे –

1. पूर्वाश्रम गुरु यादवप्रकाश को शिष्य बनाया
2. श्रीरंगं मंदिर में पूजारी ने जहर तीर्थ प्रसाद में दिया और श्री रामानुजाचार्यजी ने जहर पिया और पूजारी को माफ भी किया।
3. तिरुकोष्टियूर मंदिर के गोपुर प्रहार के ऊपर चढ़के विशेष अर्थ सामान्य लोगों को सिखाया जिससे सामान्य लोग भी स्वर्ग प्राप्ति हुआ।
4. यज्ञमूर्ति को विवाद में जीता और स्वयं समान नाम दिया और शिष्य बनाया।
5. निची जाति लोगो को हरिजन (तिरुकुलत्तार) सम्मान दिया और मंदिर में प्रवेश कराया मेलकोट, तिरुकोष्टियूर आदि में।
6. श्री रामानुजाचार्यजी के शिष्य एम्बार के माध्यम से

दासियों को उत्तम गति प्राप्त के लिए सिखाया।

7. दही बेचने वाली औरत को तिरुपति में मोक्ष प्राप्ति के लिए चिट्ठी दिया और औरत को मोक्ष प्राप्त हुआ।

8. श्री रामानुजाचार्यजी के पहले योग्यता अनुसार सिखाते थे। श्री रामानुजजी और बाद आचार्य कृपा मात्र से सिखाते हैं।

9. जो भी पंचसंस्कार करता है उनको रामानुजजी का नाम मिलता है और उनके संबंध जिसे है उनको मोक्ष प्राप्ति है क्योंकि ऐसा वादा लिया श्रीरंगनाथ भगवान से।

श्री रामानुजाचार्यजी 120 वर्ष की उम्र में वर्ष 1137 में मोक्ष को प्राप्त हुए।

सारी दुनिया को बचाने के लिए श्री रामानुजाचार्यजी ने जन्म लिया और वर्ष 2017 में उनका 1000 वां जन्मोत्सव मनाया गया।



"भक्ति का अर्थ केवल पूजा-पाठ ही नहीं अपितु ध्यान लगाना व ईश्वर की प्रार्थना करना है "

मातृशक्ति



इंद्रानी दे,
पत्नी-श्री देबाशीष दे,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
मैं रूठी तो जिसने मनाया,
मुझे जीवन का मार्ग दिखाया,
सही-गलत का अंतर बताया,
वो है मेरी प्यारी माँ-
मेरी शिक्षिका, मेरी प्रेरणा ।।

जिसने दिया है सबको सहारा,
जिसने दिया हमें वातावरण हमारा,
जिसने दिया हमें सारी नदियाँ और वन,
जिसपर आधारित है हमारा जीवन,
वो पालनहारी है धरती माँ-
मेरी शिक्षिका, मेरी प्रेरणा ।।

जिसने त्यागे सब सुख आराम,
किए दूसरों के लिए काम,
सूरत है जो परोपकार की,
जिसने फैलाई जग में शांति,
वो टेरेसा कहलाती थी माँ-
मेरी शिक्षिका, मेरी प्रेरणा ।।

प्रतीक है जो नारी शक्ति की,
जिसकी पूजा की रामचंद्र ने भी,
जिसने किया राक्षसों का संहार,
जिसके सामने है नतमस्तक सारा संसार,
प्रणाम आपको है दुर्गा माँ-
मेरी शिक्षिका, मेरी प्रेरणा ।।

सीखा मैंने बहुत कुछ इनसे,
इनके जीवन, इनके कर्मों से,
इन्होंने की दूसरों की भलाई,
सदा दूसरों को खुशियाँ पहुँचाई,
इनके सिद्धांतों पर है मुझे चलना,
यही हैं मेरी शिक्षिका, मेरी प्रेरणा ।।





अमलेश दासगुप्ता
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

स्मृति के झरोखें से

घर से 15-20 मिनटों के लिए कुछ साग-सब्जियां तथा घरेलू उपयोग की कुछ वस्तुओं को खरीदने बाहर गए थे। सारा दिन ही तो घर में ही बीतता है। पूरा दिन तो टेलीवीजन के सामने बैठकर कोरोना से फैल रहे मामले, मृत्यु और रिकवरी से संबंधित विश्व, भारत के साथ-साथ पश्चिम बंगाल के खबरों की देखने में ही कटता है। इसके साथ-साथ हर रोज व्हाट्सएप पर आए मेसेजों को पढ़ना और उनका उत्तर देना तो था ही। इसके अलावा मन में एक प्रगाढ़ इच्छा हो रही थी कि कुछ विशेष विषय पर कुछ लिखा जाए। चिंतन कर रहा था कि कुछ फील्ड ऑडिट के स्मरणीय अनुभवों के बारे में लिखा जाए। परंतु इच्छा से क्या होता है। जैसा कि उम्र बढ़ने के साथ स्मरण शक्ति कम हो जाता है वैसे ही हालत मेरी थी। परंतु अधिक दिमाग पर जोर डालने से इस उम्र में मुंह के बल गिरना पड़ सकता है। फिर सोचा जितना भी याद आ रहा है, उसी के बारे में कुछ लिखूं। यदि भविष्य में इसे पुनः पढ़ने का मन किया तो पढ़ा जाएगा।

9 मार्च 2020 को सीएजी कार्यालय की सामरिक प्रबंधन इकाई की अधिसूचना के अनुसार केंद्रीय और राज्य लेखापरीक्षा कार्यालयों का पुनर्गठन किया गया। इसके परिणामस्वरूप, हमलोग 1 अप्रैल 2020 के प्रभाव से जल संसाधन मंत्रालय के यूनिटों की लेखापरीक्षा करने से अब वंचित हो जाएंगे। इसके पूर्व 2012 में भी केंद्रीय तथा राज्य लेखापरीक्षा कार्यालयों का पुनर्गठन किया गया था। उस समय आईसीएआर, आईसीएमआर, डीआईटी, टी बोर्ड, डीजीएस एंड डी, मिनिस्ट्री ऑफ माइन्स के साथ और भी कुछ महत्वपूर्ण यूनिटों के लेखापरीक्षा का क्षेत्राधिकार हमारे वैज्ञानिक विभाग से चले गए थे। बाद में, जल संसाधन मंत्रालय का अधिकांश यूनिट हमारे वैज्ञानिक विभाग के लेखापरीक्षा के क्षेत्राधिकार में आया था। पिछले 7-8 वर्षों से हमलोग इन यूनिटों का विभिन्न समय पर भारत के विभिन्न स्थानों पर जाकर लेखापरीक्षा करते आ रहे हैं। हालांकि इन यूनिटों का बजट इतना कम था कि प्रत्येक वर्ष इनकी लेखापरीक्षा करना संभव नहीं



था। परंतु जो बातें बार-बार याद आती हैं वह थी वहां के लोगों का व्यवहार। हालांकि लेखापरीक्षा अल्पावधि के लिए ही होती थी। उन यूनिटों के कार्यालय में उचित बैठने के जगह का भी अभाव होता था। कार्यालय में मौजूद अधिकांश कंप्यूटर वायरस से संक्रमित रहता था। कार्यालय में लंबे समय तक बिजली भी उपलब्ध नहीं होती थी। फोटो कॉपी करवाने के लिए बाजार दौड़ना पड़ता था या कार्यालय के ही किसी स्थानीय निवासी के अधीन दखल उपक्रम पर निर्भर रहना पड़ता था। फिर भी, वहां के कार्यालयों के कर्मियों के साथ एक आंतरिक जुड़ाव आज भी दिल पर छाप छोड़ता है।

मुझे इसी तरह की एक यूनिट सीजीडब्ल्यूबी रोईंग डिवीजन में जाने के सौभाग्य प्राप्त हुआ था। जनवरी 2017 का समय था। डिब्रुगढ़ एयरपोर्ट से निकलकर यूनिट की ही एक जीप के द्वारा तिनसुकिया होते हुए ढोला नामक गाँव पहुंचे। साथ ही कुछ दिनों से हो रही बारिश के कारण रास्ते पर जीप के चलने में भी समस्या उत्पन्न हो रहा था। जो भी हो किसी भी तरह जीप के ड्राइवर ने हमें ढोला गाँव के लोहित नदी के घाट पर ले आया। यहां से सदिया सब डिवीजन के लिए लाउंज से नदी पार कर जाना पड़ेगा। मैं, सुदेब सिकदार और दीपक सिंह नदी के घाट पर ही बैठकर लाउंज के खुलने का इंतजार कर रहे थे। वहां के ही घाट पर स्थित एक अस्थायी दुकान से उबला अंडा तथा घुघनी खाकर हमने सुबह का नास्ता किया। रोईंग डिवीजन के जेई अरूप दे हमें रिसीव करने के लिए आए थे। जो भी हो, प्रायः घंटे भर का इंतजार करने के बाद लाईन से बढ़ते हुए हम तीनों लाउंज पर बैठे। लोगों के बैठने के बाद कई बड़ी-बड़ी गाड़ियां, मोटर साइकिल इत्यादि लाउंज पर लादी गई। इसके बाद लाउंज रवाना हुआ। कुछ समय पश्चात् लाउंज उस पार के घाट पर जाकर रुकी। लाउंज से उतर कर वहां से कुछ दूरी तक पैदल जाने के उपरांत हमने देखा कि एक और ड्राइवर जीप के साथ हमारी प्रतीक्षा कर रहा था। यह देखकर मन प्रसन्न हुआ। अंजाने रास्ते से होते हुए कैसे यूनिट में पहुंचेंगे इसकी अब चिंता नहीं थी। जीप में चढ़ते ही ग्लास को उठा दिया। एक ही क्षण में काली जैकेट सफेद हो गई। वास्तव में नदी के उस पार उतरकर बिहड़ के रास्ते के दोनों तरफ कांटेदार झाड़ियों के मध्य हमें प्रायः दो घंटों तक गर्दन झुका कर ही जाना पड़ा था और गाड़ी का स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण रास्ते का धूल हमें अपना बना लिया था। ऐसे ही आगे बढ़ते हुए गाड़ी



अरुणाचल प्रदेश की प्रधान सड़क पर पहुंची। इसके बाद प्रधान सड़क से डेढ़ घंटे की सफर के उपरांत हमलोग रोईंग डिवीजन पहुंच गए। न ही ड्राइवर को थकान महसूस हो रही थी और न ही हमें। होटल में प्रवेश करने के पश्चात् ही गृहबंदी हो गए क्योंकि यूनिट के लोगों ने हमें होटल से बाहर निकलने के लिए मना किया था। कारण यह था कि वह स्थान शाम के बाद स्थानीय लोगों के लिए भी सुरक्षित नहीं था। लेकिन होटल में ठहरने के आगे उन्होंने हमें गेस्ट हाउस में ठहरने का अनुरोध किया था। गेस्ट हाउस के दरवाजे, खिड़कियाँ तो नदारद ही थी साथ ही प्रयोजनीय वस्तुओं का भी कोई विशेष सुविधा नहीं था। यहां तक की कार्यालय के ही आस-पास के घरों में वहां के स्थानीय लोग बिना भाड़ा दिए सालों से रह रहे थे। जो भी हो, सुरक्षा और रहने योग्य न होने के कारण हम वहां नहीं ठहरे।

दूसरे दिन हमलोग ऑफिस पहुंचे। कर्मियों की उपस्थिति बहुत कम थी। जानने पर पता चला कि सभी छुट्टी पर चले गए हैं क्योंकि वहां के अधिकांश कर्मी असम के रहने वाले हैं। प्रधान कार्यालय भी डिब्रुगढ़ में ही है। इसी अवस्था में काम शुरू किया। दो दिनों के बाद सभी एक-एक कर अपने काम में योगदान देंगे। इसी बीच यह खबर चली गई थी कि ऑडिट पार्टी आई है। एक दिन मैंने देखा कि एक ग्रुप-डी कर्मचारी अपने घर से हमलोगों के लिए पिठा बना कर लाया था। हमलोग यह देखकर आश्चर्यचकित हो गए। ड्राइवर स्वजन ने हमें एक दिन अपने घर भी ले गए। उनके घर जाने के रास्ते में हमें पथरीली सुखी नदी पार करना पड़ा था। रास्ते में एक जगह तो तीन-चार लोग खड़े थे और गाड़ी रोककर 500 रुपये देने को कहा। ड्राइवर भी यह देने को राजी हो गया। बाद में, ड्राइवर ने ही हमें बताया कि स्थानीय लोग



इसी तरह गाड़ी रोक कर पैसे लेते हैं। बाईक से तो 100 रुपये तक लेते हैं। यहां तक की यह सिलसिला सालों से चलता आ रहा था। जो भी हो, हमलोगों को उन्होंने अपने रीति-रिवाजों से स्वागत किया। उनकी धर्मपत्नी नेपाली थीं। उनके द्वारा बनाए गए भोजन वाकई में बहुत स्वादिष्ट थे। बातों ही बातों में ड्राइवर ने अपने बेटी के बारे में बताया कि उन्हें अपनी बेटी के पास जाने के लिए कोलकाता होकर जाना पड़ता है। मैंने उनलोगों को कोलकाता आने पर मेरे अपने घर पधारने का भी अनुरोध किया। रोईंग डिवीजन के ही ईई, भुपेश चौधरी, लेखाकार, दीपक गोस्वामी, जेई, अरूप दे की भी बहुत याद आती है। वे लोग व्यवहार के बहुत ही शालीन एवं अनुग्रही थे। लौटते समय हमलोगों ने डिब्रुगढ़ होकर आए थे। वहां के ग्रुप-डी कर्मचारी असलम के व्यवहार से भी मैं मंत्रमुग्ध हो गया था। उन्होंने तो अपनी हाथों से खाना बनाकर हमें खिलाया था। हमलोगों ने भी खाना बनाने में उनकी मदद की थी। बैठने के लिए एक टूल भी खरीद कर हमने उन्हें भेंट की थी। उन्होंने हमें कहा था कि सर इतने दिनों से मैं यहां कार्यरत हूं और मुझे टूल की आवश्यकता है यह किसी ने नहीं सोचा पर आपने मुझे यह भेंट स्वरूप दिया। मेरा मन यह सुनकर बहुत प्रसन्न भी हुआ। वह व्यक्ति समय-समय पर फोन करके मेरी खबर लेते रहते थे। है। इससे मेरा मन और भी प्रफुल्लित हो उठता था, लेकिन बहुत दःख की

बात है कि कुछ महीने पहले ही उनका देहांत हो गया है।

रोईंग डिवीजन से और कहीं नहीं गए। परंतु यहां की मीठे कमला निंबू, मौसम्बी निंबू और कुछ कर्मियों का व्यवहार ने हमारा मन मोह लिया था।

जल संसाधन मंत्रालय के चले जाने के बाद बेतवा नदी बोर्ड के कुछ कर्मियों की भी बहुत याद आती है। मुझे दो बार बीआरबी जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। दोनों बार अगस्त महीने के मध्य 2018 एवं 2019 में जाने का मौका मिला। प्रथमवार के टूर पर मेरे साथ अरूप दे और स्वरूप विश्वास था तथा दूसरी बार के टूर पर मेरे साथ स्वरूप और मिराजुल था। दोनों बार ही राजधानी से कानपुर होते हुए झांसी पहुंचे थे। अद्भूत लगता था जब राजधानी सुबह पांच बजे के करीब कानपुर सेंट्रल पहुंचती तो हमें लेने के उद्देश्य से उसी दिन रात में ही बीआरबी कर्मचारी शकीलजी गाड़ी लेकर पहुंच जाया करते थे और सारी रात वहीं सुबह होने तथा ट्रेन के पहुंचने की प्रतीक्षा करते थे। होटल जो उच्चमान का था ऐसा नहीं था बल्कि सुबह हमें फ्रेश होने में ज्यादा परेशानी न हो इसी वजह से बड़े ही आंतरिकता के साथ शकील जी रात में ही स्टेशन पर पहुंच कर हमारी प्रतीक्षा करते थे।

मैंने बहुत यूनिटों की लेखापरीक्षा की है परंतु यह कभी भी नहीं सुना कि पिछले 5-6 महीनों से कर्मचारियों का वेतन नहीं मिला था। यहां पहुंच कर यह सुनने के बाद

आश्चर्य एवं काफी दःख भी हुआ। परंतु इन सभी प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद भी इनके विनम्र व्यवहार एवं खातिरदारी को देखकर वास्तव में मुग्ध हो गया था। अपने हक के रुपये-पैसे त्याग के बड़ी ही विनम्रता से वह हमारी सेवा में अनवरत लगे हुए थे। इतनी अभाव के बाद भी आखिर वह क्यों सुने? फिर भी उनके भीतर जो सेवाभाव की प्रवृत्ति है उसी से उन्हें तृप्ति मिलती है। क्या शकीलजी और क्या प्रभुजी प्रत्येक अपना जी-जान लगाकर ऑडिट टीम के साथ अपनी सेवा देते रहे। कार्यालय की जर्जर अवस्था तथा इसके सामने ही गाय घास चर रही थी साथ ही कुत्ते सोए हुए थे। राजघाट बोर्ड कार्य की दृष्टिकोण से अनुपयुक्त होने के बावजूद भी जैसे-तैसे चल रहा था। उसी के बीच कर्मचारियों के वेतन भी बंद। फिर भी, अपना अकाउंट तैयार रखना उनकी कार्य के प्रति निष्ठा एवं ईमानदारी को दर्शाता था। दरअसल, दोनों चतुर्थ वर्ग कर्मचारी थे। सुबह-सुबह दैनिक भ्रमण के दौरान बाहर निकलने पर वहां के दूसरे कर्मी भी बड़े ही श्रद्धा के साथ देखते एवं हमारी प्रति अपना सम्मान दर्शाते थे।

शकीलजी के साथ राजघाट डैम देखने भी गए। हमलोग वहां के गेस्ट हाउस में ही ठहरे थे। सुबह में धीरे-धीरे टहलते हुए मैं और शकीलजी राजघाट डैम की तरफ चले जाते थे। वह बोलते थे कि वह सुबह जल्दी उठ जाते हैं। सुबह 4.30 बजे उठकर नमाज पढ़ने के बाद ही अपना काम शुरू करते थे। बातों-बातों में मैंने भी उनसे कहा था कि मैं सुबह जल्दी उठने के बाद फिर से सो जाता हूँ। उन्होंने कहा था कि सो कर उठने के बाद फिर नहीं सोना चाहिए। इस समय का उपयोग करना चाहिए। सुबह जल्दी उठकर घर में ही चहल-कदमी करते हुए नींद को भगा देना चाहिए। वास्तव में, यह एक शिक्षाप्रद उपदेश था। प्रभुजी को मैंने देखा कि अपनी बेटी को अस्पताल में भर्ती कर फिर जल्द ही ऑडिट के सवाल या जाँच पड़ताल का उत्तर देने चले आए थे। इनकी निष्ठा को मेरा प्रणाम है।

राजघाट डैम के गेस्ट हाउस की कुछ यादें सारा जीवन याद रखने वाली है। डैम के विपरीत दिशा में जहाँ जल अधिक न थी वहीं कुछ स्थानीय लड़के मछली पकड़ रहे थे। उसी अंचल में मैं, अरूप और स्वरूप शकील जी



के साथ गए थे। वह लड़के सुंदर-सुंदर टेंगरा मछली अपने बंशी के सहारे पकड़ रहे थे। एक बड़ी पकाल मछली भी उन्होंने हमारे नजर के सामने ही पकड़ा। सभी मछलियों को देखने पर लगा कि प्रायः एक किलो के बराबर होगा। खरीदने की बहुत इच्छा हुई। दाम पूछने पर उन्होंने केवल 20 रूपया ही उन्होंने बताया। हम तो दाम सुनते ही हैरान हो गए। जो भी हो, हमलोगों ने 50 रूपये देकर उनसे सभी मछलियों को खरीद कर गेस्ट हाउस लेकर आए। गेस्ट हाउस में लाने का कारण था कि पिछली बार जब हम बाजार में मछली काटने को जिसे दिया था, वह मछली के पेट से अंडे निकालकर फेंक दिया था। हमलोगों के मना करने के बावजूद भी वह ऐसा नहीं कर पा रहा था। इसलिए मैं मछली सीधे गेस्ट हाउस लेकर आ गया। यहीं सोचा कि गेस्ट हाउस के कर्मी मछलियों को साफ-सुथरे तरीके से काटेंगे। एक घंटे के बाद जब मैंने पूछा कि मछली को कैसे पकायेंगे इत्यादि तो उसी क्षण मैंने देखा कि वहां भी प्रत्येक टेंगरा मछली के पेट काटकर अंडे को फेंक दिया था। वास्तव में, उनलोगों को इस मछली और इसके अंडे के बारे में कुछ अनुभव ही नहीं था।

गेस्ट हाउस का बाथरूम का पानी भी याद रखने

वाला था। सुबह के समय स्नान करने के समय मैंने देखा कि नल से गंदा पानी घोल की तरह आ रहा था। स्नान न कर बाथरूम के बाहर आकर मैंने ऐसा पानी आने का कारण पूछा। गेस्ट हाउस के कर्मियों ने बताया कि नदी का पानी ऐसा ही होता है। उसके बाद जितने दिन भी मैं उस गेस्ट हाउस में था उसी पानी से स्नान किया। हमने चांदेरी वहां के स्थानीय तांतियों के घरों में भी जाकर चांदेरी सिल्क की बुनाई भी देखी। यह देखकर मन बहुत प्रसन्न हुआ।

एक बार कोलकाता से ही उनलोगों के लिए मिठाई खरीद कर ले गया था। शकीलजी ने मिठाई के डब्बे को टेबल पर रखकर सभी कर्मियों को एक-एक उठाने को कहा। सभी एक के बाद एक आकर एक-एक मिठाई को उठाते हुए मुझे धन्यवाद भी दिया था। मैं यह देखकर मन ही मन मुस्कुराया। वास्तव में, यह उनकी एक प्रकार की प्राकृतिक सरलता थी जो मैं देखकर भीतर से ही गर्व की अनुभूति कर पा रहा था। एक दिन मैंने स्वयं ही खाना पकाया। इसके पहले गेस्ट हाउस में जो खाना पकाने के लिए आते थे, उन्हें केवल हमारी देखभाल एवं खाने के प्रबंध के लिए ही बुलाया जाता था। वे कहते थे कि सर!



केवल आपलोगों के सत्कार के लिए ही यहां आता हूँ। घर बहुत दूर है और वे सेवानिवृत्त भी हो चुके थे। फिर भी, यहां आता हूँ मन को सुकुन मिलता है। इसलिए उस दिन उन्होंने खाना पकाने में हमारी मदद की तथा कहा कि सर मैं आपके हाथ से बनाए गए चिकन टेस्ट करूंगा। शकीलजी ने भी खाया। बीआरबी में कुछ न होने के बावजूद भी यह जो आनंद की प्राप्ति होती थी इसका कोई दूसरा विकल्प नहीं है। राजघाट डैम में जेई, एके गोस्वामी और ईई, एमके जैन सर थे। उनका भी विनम्र व्यवहार कमाल का था। उस समय गोस्वामी जी के पैर पर प्लास्टर था। हमारी आने की खबर मिलते ही जैसे-तैसे हमसे मिलने चले आए थे। उस समय मछली की उपलब्धता भी उतनी नहीं थी, फिर भी, जैसे-तैसे उन्होंने अपनी चेष्टा से नदी की मछली का जुगाड़ कर हमें खिलाया था। और जैन सर उनके भी ऑफिस के चैम्बर में हमलोग गए थे। बिना खाना खिलाए हमें आने ही नहीं देंगे ऐसा उनका व्यवहार था। नजदीक कोई दुकान नहीं था फिर भी क्या हुआ? उनकी सादगी हमारे प्रति इतनी थी की अपने टिफिन से हमें खिलाकर ही मानेंगे। और कहते थे कि इसके बाद यदि आपलोग आएंगे तो मैं होटल की व्यवस्था कर दूंगा इत्यादि।

बीआरबी के जेई, मनोज यादव की भी याद आती है। ग्वालियर अकेले ही जाऊंगा यह सुनकर स्वयं पथसंगी बनने का न्यौता मुझे दे डाला। हमारी टीम को उन्होंने एक दिन साथ रहकर स्वागत भी किया था। शकीलजी राजघाट डैम से चांदेरी लेकर गए थे और वहां बाबासाहेब का दर्शन भी करवाया था। कुछ वहां की प्रचलित सत्य एवं अलौकिक घटनाओं की कथा भी उन्होंने हमें सुनाई थी।

वह कहते थे कि सर! आपके पूर्व अभिजीत जाना भी यहां आए थे। आप दोनों को मैं जीवन भर याद रखूंगा। अपनों की विदाई की तरह उन्होंने हमें फिर से आने को कहा था। लौटते समय उन्होंने पहले से ऑर्डर देकर तैयार किया हुआ मिठाई देकर हमें विदाई दी थी। लॉकडाउन के दौरान मैं उनको याद करते हुए लिख रहा था और तभी यह किस तरह की आश्चर्य टैलीपॉथी है कि ठीक उसी समय उन्होंने (01.04.2020) मुझे फोन किया। उन्होंने अपने तथा परिवार के खबर के बारे में मुझे बताया था मेरी भी खबर अपने सगे-संबंधियों की तरह ही ली। भगवान सब ठीक करेगा, इसका आशीर्वाद भी उन्होंने मुझे दिया। वास्तव में उनकी इस आत्मीयता को देखते हुए उनकी

बहुत याद आती है।

राजघाट के ही एक बंगाली डॉक्टर संजय राय के बारे में बताना भूल गया था। शकीलजी ने मुझे उनसे मिलवाया था। जीविकोपार्जन की तलाश में वह वहाँ पहुँच गए और एक सुखी जीवन जी रहे हैं। उनसे मिलकर यह लगा कि वह एक बहुत ही सरल एवं शांतिप्रिय व्यक्ति थे।

इसके अलावा, सीजीडब्ल्यूबी, भुवनेश्वर डीवीजन की भी कहानी याद आती है। एक बार ऑडिट के लिए वहां गया था। मेरे साथ पिंटू और तरूण भी थे। एक सप्ताह के बाद घर लौटूंगा यह तय किया था। वहाँ की ओएस मिनती मैडम ने मुझे कोलकाता से वापसी के समय यहाँ से रसगुल्ला लाने को कहा था। तदनुसार मैं कोलकाता से रसगुल्ला खरीद कर साथ लेकर पहुंचा था। वे वास्तव में सोच भी नहीं पाए थे कि मैं कोलकाता से मिठाई लेकर जाऊंगा। मिठाई देखकर वे लोग काफी प्रसन्न हुए थे। इधर काम प्रायः खत्म होने के कगार पर ही था। एक दिन उस मैडम ने मुझसे पूछा- सर! आप क्या कैश लिजिएगा? मैं तो यह सुनते ही आश्चर्य में पड़ गया। आश्चर्य के साथ मैंने उनसे कहा-ये क्या बोल रही हैं आप? बाद में मैं इस विषय को समझ पाया था। वास्तव में, वह हमलोगों को कुछ उपहार देना चाहती थीं। इसी कारण नकद लेंगे या नहीं यह बात हमसे वह पूछी थीं। मैंने उनसे कहा था हमें कुछ भी नहीं चाहिए। इन सभी की क्या आवश्यकता है? वह किसी भी तरह मानने को तैयार नहीं थीं। बाद में, उन्होंने अपनी पसंद की जगन्नाथ-बलराम-सुभद्रा की एक-एक फोटो और पिपली की हैंडीक्राफ्ट की एक नकशे वाली कपड़े डायरेक्टर को भेंट की थीं। ऐसी ही थी उनकी सरलता। विदाई के समय यथारीति उन्होंने कहा-सर! अगली बार भी आप जरूर आईएगा। मैंने कहा था- ऑफिस यदि भेजेगा तो जरूर आऊंगा। अभी भी उनसे फोन पर बातें होती रहती हैं। इसी कार्यालय के ड्राइवर दलाईजी नियमित रूप से हमें गाड़ी द्वारा एनआईएसईआर, जटनी ले जाते थे तथा छुट्टी के बाद होटल पहुंचा जाते थे। इतनी दूर होने के बावजूद भी वह हंसी-खुशी अपना काम करते जाते थे।

इसके अलावा, मुझे सीजीडब्ल्यूबी, रांची के डायरेक्टर श्री गौतम राय, कोलकाता के डायरेक्टर श्री अमलाज्योति कर की भी याद आती है। जब भी मैं किसी भी तरह के सूचना से संबंधित जब फोन करता हूँ। बड़ी ही तत्परता से मेरा फोन उठाते हैं और मेरे पूछे गए सूचना के

बारे में जानकारी देते हैं। एक बार तो मैंने अमलाज्योति सर को फोन किया था। तब वो सिक्किम में एक प्रशिक्षण दे रहे थे। 10 मिनटों के बाद उन्होंने मुझे वापस फोन किया तथा पूछे गए प्रयोजनीय सूचनाओं की जानकारी मुझे मैसेज द्वारा दी थीं। इसके साथ सीजीडब्ल्यूबी, लखनऊ के डीडीओ सह वैज्ञानिक डॉ. संजीव मेहोत्रा तो अभी भी फोन से मेरी खबर लेते रहते हैं। विभिन्न तरह के प्रशासनिक संबंधी जानकारी का स्पष्टीकरण भी लेते रहते हैं। एनडब्ल्यूडीए भुवनेश्वर के साहूजी को भी मैं अभी भी याद करता हूँ। हालांकि वे अब सेवानिवृत्त हो चुके हैं। इतने सुंदर हृदय का व्यक्ति मैंने बहुत कम देखा है।

ब्रह्मपुत्र बोर्ड के अधीन गुवाहाटी के रुद्रेश्वर नेहारी (नॉर्थ ईस्टर्न हाईड्रॉलिक एंड अलायड रिसर्च इंस्टीट्यूट) की भी बात याद आती है। संभवतः 2015-16 में मैं जब ऑडिट के लिए वहां गया था। वहां का यूनिट बिल्कुल ही कंकाल की तरह पड़ी हुई थी। लगभग

कार्यालय में कोई काम ही नहीं था। टूटी-फूटी भूतिया गेस्ट हाउस में दिन गुजारना भी एक अलग तरह का अनुभव था। वहाँ के कर्मचारी बड़ी ही मुश्किल से रात के भोजन की व्यवस्था कर पाते थे। ये सभी आज यादगार ही रह गई है। जिनके बारे में सोचने से हृदय में एक शांति का अनुभव होता है और सुकून मिलता है।

ब्रह्मपुत्र बोर्ड के प्रधान कार्यालय के गेस्ट हाउस में एक ग्रुप-डी कर्मचारी थे श्री साहनी, जिन्हें यदि खाना बनाने के लिए जब भी कहा जाता वह एक अजीब लहजे के साथ कहते थे कि पैसा नहींSSSS है सरSSSS ! जो सुनते ही हमारे मन में एक अजीब गुदगुदी पैदा करती थी। उनके इस लहजे से प्रायः ऑडिट के सभी लोग ही वाकिफ थे। बड़े ही मजेदार स्वर में किसी भी सवाल का जवाब दिया करते थे। सचमुच दुनिया में कितने अलग-अलग स्वभाव के लोग हैं, ऑडिट के दौरान विभिन्न स्थानों के दौरे पर उनसे मिलने के बाद जाना था।





महामारी या मानव पीड़ा

बबिता

वरिष्ठ अनुवादक

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पर्या. एवं वै.वि. नई दिल्ली

नुककड़ पे होती गपशप में जैसे
एक बुरी खबर कोई कोना ले आया
जैसे भर मूठी पिसाच कोई
जादू काला टोना ले आया
जिनसे अंधियारी रातों में भागे
समेट बुरे स्वप्न सभी ये मर्ज कोरोना ले आया

ले आया बीमारी ऐसी अनदेखी
न वैद्य करे हल न दवा विदेशी
जिन चौखट खिलती थी खुशियाँ
वहाँ रोना धोना ले आया
समेट बुरे स्वप्न सभी ये मर्ज कोरोना ले आया

कहीं मोटर गाड़ी सड़ती है
कहीं पेट खाली और कड़की है
फूल स्कूल से बिछड़ घर सोते हैं
उदासी का बिछौना ले आया
समेट बुरे स्वप्न सभी ये मर्ज कोरोना ले आया

उजड़ा उजड़ा दिखे हर मुखड़ा अब
रोते किसी गुजरे का दुखड़ा सब
गुलाब पंखुड़ी हथेली पर कीचड़
जैसे कोई जोंक धिनौना ले आया
समेट बुरे स्वप्न सभी ये मर्ज कोरोना ले आया

अजी अस्पताल में जगह न थी
ये तो कोई मरने की वजह न थी
मांगी चंद सांसे ना मांगी कोई मीनार ऊँची
वो सिलिंडर खाली, बहाना बौना ले आया
समेट बुरे स्वप्न सभी ये मर्ज कोरोना ले आया



छोड़ बिटिया बिन-ब्याही माएं,
गोदी में सोती माता मोरी गंगा,
हाय बिलख -बिलख के हैं रोती
और समा सके ने जो भीतर,
बेटा संदूक तोड़ कफन, बेचके सोना ले आया
समेट बुरे स्वप्न सभी ये मर्ज कोरोना ले आया

शमशानों में अथाह अब चिता जले
गुड़िया की मैय्या, गुट्टे का पिता जले
जिन नन्ही आँखों ने खाबों के लपट सजाए
छलका संग आंसू, लहू ये रोना ले आया
समेट बुरे स्वप्न सभी ये मर्ज कोरोना ले आया

जो जुगनू रह गए अकेले हैं
सौ सवाल पेचीदा सौ झमेले हैं
जज साहब ने पूछी कीमत बाजार में इनकी
दाम एक चपरासी कोई, औना-पौना ले आया
समेट बुरे स्वप्न ये मर्ज कोरोना ले आया

पर है उम्मीद अभी, अभी हम जिंदा हैं
जिंदा है बस्ती, जो गुजरे यादों में जिंदा हैं
बुलबुल तो छोड़ चली घर अपना
जी बहलाने बच्चों का, बाज़ खिलौना ले आया
समेट बुरे स्वप्न ये मर्ज कोरोना ले आया

ना दो बरसों से प्रकाश हुआ
हां जर्जर जर्जर है निराश हुआ पर,
खुशियाँ फिर आंगन में बरसेंगी आज कहा मैंने
भीतर से भतीजा एक टूटा दोना ले आया
हम लड़ जीतेंगे सबसे, जितने बुरे स्वप्न कोरोना ले आया



इलॉन मस्क का करिश्माई सफर

ब्रजेश चन्द्र प्रताप
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

2008 में मार्वल की फिल्म आयरन मैन रिलीज हुई। इस फिल्म ने दुनियाभर में तहलका मचा दिया। लड़के-लड़कियां आयरन मैन के दीवाने हो गए। फिल्म का मुख्य किरदार है टोनी स्टार्क जो एक उद्योगपति होने के साथ ही साथ एक जीनियस और कमाल का आविष्कारक भी है। राबर्ट डाउनी जूनियर इस किरदार में अपने आप को ढालने के लिए एक आदमी के पास गए थे। ये आदमी अंतरीक्ष में रॉकेट भेजने वाली एक जबरदस्त कंपनी चलाता है। इसकी एक और कंपनी है जो सबसे शानदार इलेक्ट्रॉनिक कार बनाती है। ये आदमी बड़े शहरों के नीचे कई सुरंग बना रहा है। ये आदमी इंसानी दिमाग को मशीन से जोड़नेवाली टेक्नोलॉजी तैयार कर रहा है।

ये आदमी बड़े-बड़े सपने देखता है और उन्हें पूरा करने की काबिलियत भी रखता है। उसे अपने कई हरकतों के कारण आलोचनाओं का भी शिकार होना पड़ा है। लेकिन फिर भी, इसे असल दुनिया का आयरन मैन कहा जाता है। इस अद्भूत आदमी का नाम है इलॉन मस्क। ये आदमी दुनिया के सबसे अमीर इंसानों में से एक है।

1971 में भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध हुआ और बंगलादेश बना। इसी साल 28 जून 1971 को साउथ अफ्रीका के प्रिटोरिया शहर में इलॉन मस्क का जन्म हुआ था। इनकी माँ मे मस्क एक मॉडल थी और पिता इरॉल मस्क पेशे से इंजीनियर थे। इलॉन मस्क बचपन से ही अलग प्रवृत्ति के थे। हमेशा अपने में ही खोए रहते थे। जब ये कुछ सोच रहे होते थे और कोई कुछ कहता था तो उनके कानों में जूं भी नहीं रेंगती थी। इनके माता-पिता को लगता था कि ये बहरा हो गया है। इलॉन बताते हैं कि वह समय सबसे अच्छा समय हुआ करता था।

परंतु बुरा वक्त इलॉन का इंतजार कर रहा था। आगे चलकर माता-पिता का तलाक हो गया। इलॉन ने अपने पिता के साथ रहने का चुनाव किया परंतु पिता के साथ रहने का अनुभव बुरा रहा। वे एक अच्छे पिता नहीं

थे। इधर घर में इलॉन पर ध्यान देने वाला कोई नहीं था और उधर उनके सहपाठी इलॉन को खूब चिढ़ाया करते और परेशान भी किया करते थे। एकबार स्कूल में उनके सहपाठियों ने इलॉन को इतना मारा था कि इलॉन को अस्पताल में भर्ती करनी पड़ी थी।

इन सबसे दूर इलॉन मस्क को किताबों का सहारा मिला। इलॉन को बचपन से ही किताबें पढ़ने को शौक था। इनकी यादास्त भी फोटोग्राफी मेमोरी की तरह कमाल की थी। एक बार कोई चीज पढ़ ले तो ये उनके दिमाग में छप जाती थी। जब पढ़ने को इलॉन मस्क के सारे आस-पास के किताब कम पड़ गए तो उन्होंने पूरा इंसाइक्लोपीडिया पढ़ डाला।

किताबों के साथ-साथ इलॉन मस्क का ध्यान कंप्यूटर की तरफ आकर्षित हुआ। उन्होंने दस साल की उम्र में ही कंप्यूटर की कोडिंग सीखनी शुरू कर दी थी। 12 साल की उम्र में ही इलॉन मस्क ने एक ब्लैस्टर नामक कंप्यूटर गेम बना डाला था। इलॉन ने उस समय उस गेम को एक मैगजीन को बेच कर 500 डॉलर की आय की थी।

इंटरनेट की लहर पर सवार

जब इलॉन 17 साल के हुए तो साउथ अफ्रीका छोड़ने का मन बना लिया। उस समय साउथ अफ्रीका में मिलिट्री सर्विस अनिवार्य हुआ करती थी। इससे बचने के लिए इलॉन कनाडा चले गए। यहाँ क्वीन्स यूनिवर्सिटी में दाखिला लिया। लेकिन इलॉन अमेरिका जाना चाहते थे। कनाडा तो वहां पहुंचने का एक जरिया था। मस्क ने बाद में यूनिवर्सिटी ऑफ पेंसिलवेनिया में अपना ट्रांसफर करवा लिया। जब वे यहां से अपनी पढ़ाई पूरी कर निकले तो उनके पास दो डिग्रियां थी, एक फिजिक्स तो दूसरा इकॉनमिक्स। उसके बाद मस्क पीएचडी करने स्टैन फोर्ड यूनिवर्सिटी पहुँचे। लेकिन उनके मन में तो कुछ और ही चल रहा था। केवल दो दिनों के बाद ही पीएचडी छोड़ दी। दुनिया में उस वक्त इंटरनेट अपना पाँव जमा रहा था।



इलॉन अपने छोटे भाई किंबल मस्क के साथ इंटरनेट की दुनिया में कुद पड़े। इसके लिए इलॉन ने अपने पिता से पैसे लिए और अपने छोटे भाई के साथ मिलकर “जिप2” नाम की सॉफ्टवेयर कंपनी बनाई। बाद में इस कंपनी को काम्पेक ने खरीद लिया। मस्क को इसके एवज में 22 मिलियन डॉलर (अभी के हिसाब से 161 करोड़ रुपये) मिले थे।

इस पैसे से इन्होंने एक्स. कॉम नाम की कंपनी शुरू की। ये तब की शुरूआती ऑनलाईन बैंकिंग कंपनियों में से एक थी। यही कंपनी बाद में चलकर पेपल बनी। 2002 में इलॉन ने इस कंपनी को “ई-बे” को बेच दिया। इसके बदले मस्क को 165 मिलियन डॉलर मिले। इस पैसे को लेकर मस्क बड़े आराम और शान से अपना जीवन व्यतीत कर सकते थे। परंतु इनका दिमाग मंगल की परिक्रमा करने लगा। इलॉन को हमेशा से ही साइंस फिक्शन पसंद था। अब वो इन सपनों को हकीकत बनाने की राह पर चल दिए।

बड़े-बड़े सपने

2001 में मार्स ओएसिस का आइडिया आया। प्रयोग के तौर पर पृथ्वी से मंगल ग्रह पर ग्रीनहाउस गैस भेजा जाए, वहां पौधे उगाएं जाए। परंतु मस्क को एक नौसिखिया के तौर पर देखा गया और उन्हें ज्यादा तरजीह नहीं दिया गया। 2002 में इलॉन दोबारा तीन ICBM (इंटर

कॉन्टिनेंट बैलेस्टिक मिसाइल) खरीदने के मकसद से रशिया पहुंचें। इन पुरानी मिसाइलों को रॉकेट की तरह इस्तेमाल किया जा सकता था। लेकिन रूस के कान्ट्रेक्टर ने एक मिसाइल की कीमत 8 मिलीयन (लगभग 58 करोड़) बताई। मस्क को ये पैसा बहुत ज्यादा लगा और मीटिंग छोड़कर निकल गए। उन्हें लगा कि वो खुद कम पैसे में रॉकेट बना सकते हैं।

स्पेस एक्स-अंतरिक्ष में छलांग

इलॉन मस्क को लगता है कि एक ग्रह पर रहना थोड़ा जोखिम का मामला हो सकता है। भविष्य में यदि तृतीय विश्वयुद्ध छिड़ जाए और न्यूक्लियर धमाकों से ये दुनिया खत्म हो जाए या हो सकता है। जैसे एक एस्टेरॉयड ने पृथ्वी से डायनासोर्स को खत्म कर दिया, वैसे ही मानव जाति का भी निशान मिट जाए तो हमारी सभ्यता की एक्सपायरी डेट आगे बढ़ाने के लिए हमें दूसरे ग्रह पर ही डेरा जमाना होगा।

2002 में इलॉन मस्क ने स्पेस एक्सप्लोरेशन टेक्नोलॉजी नाम की एक कंपनी बनाई। आगे चलकर यही कंपनी स्पेस एक्स के नाम से दुनिया में विख्यात हुई। इलॉन अंतरिक्ष में होनेवाली यात्रा को आसान और सस्ता बनाना चाहते हैं। स्पेस एक्स का मकसद है कि मंगल ग्रह पर इंसानी बस्ती बनाना। इलॉन चाहते हैं कि इंसान सिर्फ एक ग्रह तक सीमित न रहकर अनेक ग्रहों पर रहने वाली

प्रजाति बनें।

स्पेसएस्क की शुरुआत तो हो गई लेकिन इसे कई मुश्किलों का सामना करना पड़ा। 2006 में कंपनी का पहला रॉकेट लॉन्च के 33 सेकेंड बाद ही फेल हो गया था। इसके बाद 2007 और 2008 में दूसरे और तीसरे रॉकेट लॉन्च भी फेल हो गए थे। तीसरे असफलता के बाद कंपनी बंद होने के कगार पर आ गई।

स्पेसएस्क के पहले तीन रॉकेट लॉन्च लगातार फेल हुए। अब इलॉन के पास सिर्फ उतना ही पैसा बचा कि सिर्फ एक और रॉकेट लॉन्च करने की कोशिश हो सके। 28 दिसंबर 2008 को फैल्कन-1 रॉकेट अपने चौथे लॉन्च में सफलातापूर्वक अर्थ ऑर्बिट में पहुंच गया। इलॉन मस्क के मुताबिक 2008 उनकी जिंदगी का सबसे बुरा साल था। इनकी दूसरी कंपनी टेस्ला भी घाटे में चल रही थी। मस्क को इलेक्ट्रॉनिक कार में बहुत संभावनाएं नजर आती थी इसलिए 2003 में टेस्ला मोटर्स नाम की एक इलेक्ट्रॉनिक कार बनाने वाली कंपनी शुरू की और इसने भी लोगों का भरोसा जीत लिया। मस्क दुनिया से ऊर्जा की समस्या हल करना चाहते हैं। वो दुनिया को अक्षय ऊर्जा की ओर ले जाना चाहते हैं। इसके लिए एक एनर्जी कंपनी बनाया 'सोलर सिटी' जिसकी शुरुआत 2006 में हुई थी।

स्पेसएक्स, टेस्ला और सोलर सिटी के साथ इलॉन मस्क दिवालिया होने के कगार पर पहुँच गए थे क्योंकि मस्क ने पूरा पैसा चौथे रॉकेट पर लगा दिया था। किस्मत से ये सफल रहा। दिसंबर 2008 में स्पेसएक्स को नासा की तरफ से 1.8 बिलियन डॉलर का कान्ट्रैक्ट मिल गया। नासा ने स्पेसएक्स को इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन में अपना सेटेलाइट भेजने का काम दिया।

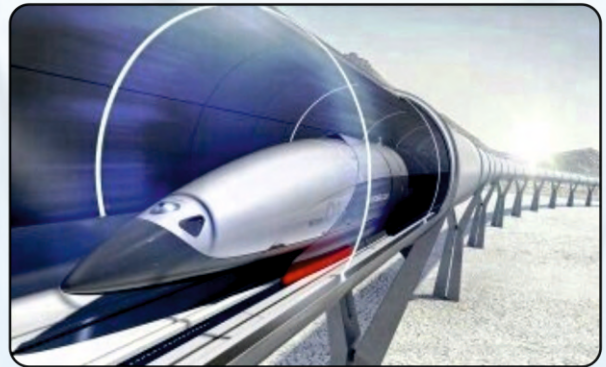
धीरे-धीरे टेस्ला को भी इन्वेस्टर मिलने लगे। 2010 में टेस्ला मोटर्स आईपीओ लेकर बाजार में आई और ऑटोमोबाइल सेक्टर में एक बहुत बड़ी कंपनी बन गई। उसके बाद इस कंपनी ने रिकार्ड पर रिकार्ड तोड़े।

दिसंबर 2015 में इतिहास में पहली बार किसी रॉकेट को ऑर्बिटल लॉन्च के बाद पृथ्वी पर सफलातापूर्वक लैंड कराया गया। ये स्पेसएक्स का फैल्कन 9 रॉकेट था। स्पेसएक्स पुनः उपयोगी रॉकेट बना लिया, इससे उनका बहुत सारा पैसा बचने लगा।

मई 2020 में स्पेसएक्स नासा के दो अंतरिक्ष यात्री को अंतरिक्ष में लेकर गई। इस मिशन का नाम डेमो-2 था। इस प्रदर्शन के बाद स्पेसएक्स ने अंतरिक्ष यात्री

भेजने के लिए नासा का भरोसा हासिल कर लिया। इसके बाद स्पेसएक्स इंसान को अंतरिक्ष में ले जानेवाली पहली प्राइवेट कंपनी बनी। अब नासा और स्पेसएक्स साथ मिलकर आगे के मिशन्स की तैयारी कर रहे हैं।

इलॉन मस्क कई लोगों के लिए एक प्रेरक व्यक्ति हैं। कुछ के लिए आयरन मैन हैं तो कुछ के लिए सुपरह्यूमन। साथ ही कई लोग कहते हैं कि ये इंसान नहीं एलियन है जो भी हो, लेकिन ये आदमी बहुत बड़ा करिश्माई है।





विनोद कुमार साह,
लिपिक/टंकक

दोस्ती एक विश्वास

हर्षित और रिषभ बचपन से ही घनिष्ठ मित्र थे। उनकी दोस्ती इतनी गहरी थी कि उनके मुहल्ले वाले भी उनकी दोस्ती की मिशालें दिया करते थे। उनकी दोस्ती भाई से भी बढ़कर थी। उनकी इस गहरी और अटूट दोस्ती को देखकर कोई भी यह नहीं कह सकता था कि कभी भी उनकी दोस्ती पर किसी तरह की आँच आएगी।

परंतु पता नहीं क्या हुआ? उनकी दोस्ती पर न जाने किसकी नजर लग गई। दोनों में काफी बहस के साथ झगड़े भी हो गए थे। दरअसल बात यह थी कि रिषभ ने अपने दोस्त हर्षित का एक गहरा राज सार्वजनिक कर दिया था जिसके बारे में केवल रिषभ को ही पता था।

हर्षित यह जानकर आहत था और अपने दोस्त रिषभ से काफी नाराज भी था। वह अपने आपको यह समझा ही नहीं पा रहा था कि जिस दोस्त को भाई से भी बढ़कर प्यार करता था वह उसके साथ ऐसा करेगा। उसके विश्वास को तोड़ेगा। अब इस बात के कारण दोनों एक-दूसरे से बात करना तो दूर, एक-दूसरे को देखना भी पसंद नहीं करते थे।

एक दिन की बात है। रिषभ अपने मित्र हर्षित से मिलने उसके घर गया और हर्षित को मनाने की कोशिश करने लगा। हर्षित रिषभ के उस आचरण से काफी दुःखी तो था ही, उसने रिषभ से कहा - 'मित्र! विश्वास इंसान की सबसे बड़ी पूंजी एवं गुण होती है, जो व्यक्ति विश्वासघाती होता है, उसे कभी भी जीवन में किसी का साथ नहीं मिलता है। रिश्तों में भले ही विश्वास की कमी आ जाए परंतु दोस्ती ही एक ऐसा रिश्ता होता है जो विश्वास पर टिका होता है।'

सुनो एक सच्ची घटना तुम्हें सुनाता हूँ - बचपन के दो दोस्त जोसेफ और अल्बर्ट ऐसे थे जो स्कूल से लेकर कॉलेज तक साथ-साथ पढ़े एवं आगे चलकर वे जर्मनी की सेना में साथ ही भर्ती हुए। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान दोनों एक ही यूनिट में तैनात थे। एक रात उनपर एकाएक

बमों से जोरदार हवाई हमला हुआ और गोलियाँ चलने लगी। ऐसे में अंधेरे से एक आवाज सुनाई पड़ी। "जोसेफ इधर आओ मेरी मदद करो" जोसेफ ने अपने बचपन के दोस्त अल्बर्ट की यह आवाज एक बार में ही पहचान ली।

उसने फौरन जाकर अपने कैप्टन से कहा - "क्या मैं अपने दोस्त की मदद करने जा सकता हूँ?" कैप्टन ने कहा - "नहीं मैं तुम्हें जाने की अभी इजाजत नहीं दे सकता, मेरे यूनिट में पहले से ही सैनिक कम हैं और मैं उनमें से एक और को खोना नहीं चाहता, वैसे भी कराहते हुए अल्बर्ट की आवाज सुनकर ऐसा लग रहा है कि अब वह कुछ ही पलों का मेहमान है।"

जोसेफ यह सुनकर चुप रहा। उसने फिर अपने दोस्त अल्बर्ट की कराहती हुई आवाज सुनी। "जोसेफ आओ मेरी मदद करो" जोसेफ अभी भी चुप बैठा रहा परंतु मन ही मन काफी व्याकुल था और अपने आप को कोस भी रहा था क्योंकि कैप्टन ने उसे अपने दोस्त की मदद करने हेतु जाने से मना कर दिया था।

परंतु अल्बर्ट की कराहती आवाज बार-बार आ रही थी। अब जोसेफ अपने आप को रोक नहीं पाया। उसने यह मन ही मन निश्चय कर लिया कि इस बार यदि कैप्टन उसे जाने से मना भी करता है, फिर भी, अपने दोस्त की मदद के लिए वह अवश्य जाएगा। वह पुनः कैप्टन के पास गया और जाने की इजाजत मांगी और कहा - "कैप्टन वह मेरे बचपन का दोस्त है, मेरी आधी जान उसमें बसती है, मुझे अपने दोस्त की मदद के लिए जाना ही होगा, मुझे मत रोकिए कैप्टन।" कैप्टन ने आखिरकार हिचकिचाते हुए उसे जाने की इजाजत दे दी। जोसेफ अंधेरे में रेंगता हुआ अपने दोस्त अल्बर्ट के पास पहुंचा और उसे उठाकर अपने बंकर में ले आया। पर उन लोगों ने पाया कि अल्बर्ट शहीद चुका है। कैप्टन नाराज होकर जोसेफ पर चिल्लाया - "मैंने

कहा था न कि वह नहीं बचेगा और यदि तुम भी वहाँ शहीद हो जाते तो मैं एक और सैनिक को खो देता, तुम्हारा वहाँ जाना एक गलती के अलावा कुछ नहीं था।”

जोसेफ ने रोते हुए कैप्टन को जवाब दिया - “नहीं महोदय ! मेरा अपने दोस्त के पास जाना गलती नहीं था, मैंने जो किया वह एक सच्चे दोस्त के नाते मेरा कर्तव्य था, मैं जब वहाँ पहुँचा, तब वह जीवित था और मेरे दोस्त अल्बर्ट के आखिरी शब्द थे” कि “जोसेफ मुझे यकीन था कि तुम जरूर आओगे।”

यह कहानी सुनकर रिषभ के आँखों में आंसू आ गए। अपनी गलती को स्वीकारते हुए रिषभ ने हर्षित को अपने गले से लगा लिया।

वस्तुएँ
खुश हैं न उदास
सिर्फ वे बढ़ती जा रही हैं”
- केदारनाथ सिंह





चंद्रानी सिंह,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हाइब्रिड कार्यस्थल

इस समय पूरा विश्व COVID-19 महामारी जो खतरनाक गति से फैल रही है और इस दशक का सबसे बड़ा वैश्विक आर्थिक झटका से पूरी तरह से जर्जर की स्थिति में पहुँच चुका है। इस COVID-19 महामारी ने पूरे मानव जाति को कुछ सबक सिखाए हैं। जैसे कि सब जानते हैं मानव स्वास्थ्य और पृथ्वी का स्वास्थ्य एक दूसरे के पूरक हैं, इस प्रकृति को भी थोड़ा बहुत आराम की जरूरत है और वैश्विक संकटों से उबरने के लिए वैश्विक सहयोग की आवश्यकता है। इस के साथ-साथ मानव जीवन को चलाने के वैकल्पिक तरीकों का पता लगाने में मदद भी किए हैं। उन तरीकों में से एक है हाइब्रिड कार्य-स्थल। अब जानना यह है कि हाइब्रिड कार्य स्थल है क्या? हाइब्रिड कार्य स्थल एक लचीली संरचना है जहाँ कर्मचारियों के दो ग्रुप एक साथ काम करते हैं। एक ग्रुप दूर से, मुख्यतः अपने घर से, और दूसरा कार्यस्थल के केंद्र से। इन दोनों ग्रुप के बीच समन्वय इस रूप में बने रहते हैं कि सौंपे गए कर्तव्य और कार्यालय के समग्र कार्यों के निष्पादन से यह नही प्रतीत होता है कि हम सब लॉकडाउन की पाबंदी से गुजर रहे हैं।

“घर से काम” की धारणा बहुत पहले से ही तकनीकी क्षेत्र में प्रचलित है, लेकिन ऐसी धारणा अभी उन सब क्षेत्र को छोड़ कर जहाँ शारीरिक श्रम किए बिना और कोई तरीका उपलब्ध नहीं है, बाकी सभी तरह के कार्यक्षेत्र में चालू हो गया है। असलियत तो यह है कि इसके सिवा कार्यालय चलाने का और कोई विकल्प अभी खुला भी नहीं है।

कार्यालय प्रबंधक और कर्मचारियों के लिए दूरस्थ रूप से काम करने के बहुत सारे लाभ हैं।

- किसी को अधिक दक्ष होने के लिए एक नियंत्रित वातावरण और सीमित वार्तालाप की आवश्यकता होती है, उन सब लोगों के लिए हाइब्रिड कार्य स्थल सबसे अच्छा तरीका है।
- यदि लचीले घंटों की अनुमति है, तो मुख्य रूप से महिलाएं अपने कार्यालय कर्तव्यों का निर्वहन करने के साथ-साथ कई आवश्यक घरेलू जिम्मेदारियों का पालन करने में सक्षम हो सकती हैं। इस कारण महिलाओं को राष्ट्रीय आय बढ़ाने में अंशदान करने के अवसर मिल



सकते हैं। इसके अलावा, कर्मचारियों को अपने प्रियजनों के साथ समय व्यतीत करने का मौका मिलने पर उनके अपने कार्य करने में खुशी महसूस होती है।

- हर रोज कार्यालय आवागमन को कम करने से, कर्मचारी संभावित रूप से प्रत्येक वर्ष हजारों रुपये और साथ में आने-जाने के सैकड़ों घंटे बचा सकते हैं और इस अतिरिक्त समय का उपयोग खुद को तनावमुक्त रखने में या किसी भी उत्पादक कार्य के लिए खर्च किया जा सकता है।

- अक्सर बीमारियाँ, अपरिहार्य नियुक्तियाँ या घरेलू काम-काज के दौरान कार्यस्थल से अनुपस्थिति, प्राधिकारियों और कर्मचारियों के लिए समान रूप से एक बड़ी समस्या है। कार्यालय में आने-जाने में अधिक समय लगने के परिणामस्वरूप कम अनुपस्थिति होती है। यहां तक कि वे दिन के अंत में घर लौटने के लिए जल्दी नहीं करेंगे। बल्कि कार्यस्थल पर अतिरिक्त पांच मिनट रह के किसी भी कार्य को पूरा करने का प्रयास करेंगे।

- नियोक्ताओं के लिए घर से काम करने का एक और अधिक स्पष्ट लाभ यह है कि वे कार्यालय की जगह के लिए किराए पर कम खर्च कर सकते हैं। इसके अलावा बिजली और पानी के बिलों को कम भुगतान करेंगे और साथ ही अन्य कार्यालय रखरखाव शुल्क भी न्यूनतम हो जाएगा।

- दूरस्थ काम करने से नियोक्ताओं को सर्वश्रेष्ठ उम्मीदवार को किसी भी देश से दूरस्थ रूप से चुनने की अवसर देता है। इस स्थिति के रूप में विज्ञापित होने की तुलना में

लगभग निश्चित रूप में लोगों का एक बड़ा चयन होने की संभावना रहती है।

- पर्यावरण के बारे में परवाह करने वाले उद्योग हमेशा अच्छा माना जाता है। घर से काम करने वाले कर्मचारियों के कई पर्यावरणीय लाभ हैं, जिनमें शामिल है:

1. कर्मचारियों के कम यातायात के कारण वाहन प्रदूषण कम होते हैं।

2. लोग लंच ले जाने के लिए या चाय या कॉफी पीने के लिए प्लास्टिक कप या पात्र खरीदने के लिए कम दिलचस्पी लेंगे।

3. कार्यस्थल का संरक्षण संभव होगा।

लेकिन यह हाइब्रिड कार्यस्थल का कुछ नाकारात्मक पहलु भी हैं, जैसे कि जब कर्मचारी शारीरिक रूप से एक दूसरे के बगल में नहीं होते हैं, तो व्यक्तिगत स्तर पर सहकर्मियों के साथ जुड़ने के लिए अनौपचारिक अवसर कम होते हैं। यदि आप दूरस्थ रूप से काम कर रहे हैं, तो आप अपने सहयोगियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करने के अवसरों से चूक जाते हैं और जब यह एक टीम का काम बन जाता है, तो टीम के साथियों के बीच पेशेवर संबंध और सहकारी मानसिकता अनुपस्थित रहती है और कभी-कभी यह उत्पादक परिणामों को कम कर देता है।

हालाँकि, दूरस्थ कार्य या घर से काम करना लोगों का प्रवृत्ति बन रही है जो जल्द ही गति कम कर देने वाली नहीं है। आजकल इंटीरियर डिजाइनर द्वारा एक छोटे से फ्लैट के भीतर पेशेवर कार्यक्षेत्र बनाने की मांग बढ़ रही है। हम सभी को इस नई कार्यप्रणाली को अपनाना चाहिए और घर से काम करने के वक्त अपने काम-काज में ईमानदारी, समग्रता और प्रामाणिकता को बनाए रखना चाहिए।





जैनंद्र कुमार की कहानियों में बाल-मनोविज्ञान की अभिव्यक्ति (‘पाजेब’ और ‘खेल’ कहानी के विशेष संदर्भ में)

ब्युटी गुप्ता

कनिष्ठ अनुवादक

अलीगढ़ के कौड़ियागंज नामक गाँव में जन्म लेने वाले प्रसिद्ध उपन्यासकार और कहानीकार जैनंद्र कुमार जी का बचपन का नाम ‘आनंदीलाल’ था। प्रेमचंदोत्तर हिंदी कथाकारों में इनका विशिष्ट और उत्कृष्ट स्थान है। हिंदी के मनोविश्लेषणात्मक परंपरा में भी जैनंद्र कुमार जी का नाम अग्रिम पंक्तियों में अंकित किया जाता है। चाहे स्त्री मनोविज्ञान की बात हो या बच्चों और बड़ों के मन में चलने वाली गुत्थियों और तरंगों की बात हो, जैनंद्र जी ने इन सभी का अवलोकन और निरूपण मनोविज्ञान के आलोक में किया है। उषा गोयल जी ने लिखा है-“नारी-पुरुष के अतिरिक्त जैनंद्र जी ने अपनी कहानियों में बाल-चरित्रों के मनोविज्ञान में बाल-चरित्रा के मनोविज्ञान का भी सूक्ष्म परिचय दिया है। खेल, पाजेब, चोर, इनाम, अपना-पराया आदि कहानियों में बाल चरित्र की अवतारणा कर स्पष्ट किया है कि बच्चे के व्यक्तित्व के विकास में माता-पिता का योग सर्वाधिक होता है।”

जैनंद्र जी का मानना है कि बालकों के जीवन पर आधारित ये कहानियाँ बच्चों में उच्च विचार, सुसंस्कार, चरित्र निर्माण, मानवीय मूल्यों के प्रति गहन संवेदना तथा देशभक्ति जैसे कई लोकल्याणाकारी और लोकहितकारी गुणों का संचार करेंगी। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी ने लिखा है— “किसी देश को उन्नति के शिखर पर फिर से स्थापित करने का सबसे उत्तम उपाय यही है कि उनके बालकों की सार्वभौमिक शिक्षा की ओर ध्यान दिया जाए। उनके सामने देश के आदर्श पुरुषों के चरित्र रखें जाएं। इस तरह उनकी शारीरिक दशा का सुधार तो होगा ही साथ ही उनकी मानसिक और नैतिक उन्नति भी हो सकेगी और निकट भविष्य में वह देश के मुखोज्ज्वलकारी रत्न हो सकेंगे।” जबकि जैनंद्र जी ने खुद माना है कि- “ये छोटी-छोटी कहानियाँ भावनाओं को संस्कार देंगी और सोच को व्यापक बनायेंगी। उपयोगी और कर्म-परायण नागरिक बनाने के लिए ये सरल भाव से उनमें नैतिकता और चरित्र को मजबूत करेंगी। इन कहानियों की भाषा बेहद सरल



और भाव भरी हैं। साथ ही आशय गहरा, वैज्ञानिक और नैतिक है।”

‘खेल’ जैनेंद्र की पहली कहानी है। यह कहानी ‘विशाल-भारत’ नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। जैनेंद्र जी ने अपने आस-पास के क्रिया-कलापों का सूक्ष्म तथा पारदर्शी चित्रण ‘खेल’ कहानी में सुरों रानी एवं मनोहर की बाल-क्रीडा के माध्यम से जीवंत रूप में किया है। बालकों की जो स्वाभाविक प्रवृत्ति जैसे लड़ना, झगड़ना, गुस्सा करना और फिर कुछ समय पश्चात पुनः मान जाना आदि के सजीव और मर्मिक चित्रों को बहुत ही संवेदशील और प्रभावशाली तरीके से अंकित किया है। कहानीकार ने इस संदर्भ में लिखा है-“बालक और बालिका अपने को और सारे विश्व को भूल, गंगातट के बालू और पानी को अपना एक मात्र आत्मीय बना, उनसे खिलवाड़ कर रहे थे।”

सुबला नामक पात्र जब बड़ी तन्मयता से और ध्यान को केंद्रित करके जब अपना भाड़ को बना लेती है। कुछ समय बाद वह उस मिट्टी से अपने पैरों को धीरे-धीरे सावधानी से इस प्रकार हटाती या निकालती है, जैसे देखने वाला यह सोचने पर विवश हो जाये कि वह भाड़ नहीं अपितु कोई जीवंत बच्ची सोई हुई है। मातृत्व या वात्सल्य की यह झाँकी बहुत ही मनोरम और संवेदना से संपूर्ण दिखाई पड़ती है। कहानीकार ने इस तथ्य की पुष्टि करते

हुए स्पष्ट लिखा है-“माँ जिस सतर्क सावधानी के साथ अपने नवजात शिशु को बिछौने पर लेटाने को छोड़ती है, वैसे ही वैसे ही सुरबाला ने अपना पैर धीरे-धीरे भाड़ के नीचे से खींच लिया।” रम्या जोसेफ ने इस कहानी पर टिप्पणी करते हुए लिखा है-“जैनेंद्र की ‘खेल’ कहानी में जैनेंद्र जी ने बाल-मनोविज्ञान का चित्रण किया है। इसमें बाल मनोवैज्ञानिक कहानियों में प्रमुख तत्वों जैसे- उत्सुकता, स्पर्धा, द्वंद, आत्म-प्रदर्शन, अनुकरण आदि का सफल चित्रण हुआ है।”

‘पाजेब’ बाल मनोविज्ञान को निरूपित करने वाली संवेदनशील कहानी है। यह ‘में’ शैली में लिखी गयी मुख्य रूप से बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। जैनेंद्र कुमार के समकालीन जहाँ अन्य रचनाकार समाज की विसंगतियों, समाज में फैली कुरीतियों, अंधविश्वासों, कर्मकांडों तथा पोंगापंथी को अपने साहित्य का विषय बना रहे थें, वहीं जैनेंद्र जी मानव-मन में उठने वाली विभिन्न मनोग्रंथियों को अपनी लेखनी में स्थान दे रहें थे। इनकी कहानियों में मनोविज्ञान के साथ-साथ दार्शनिकता को भी निरूपित किया गया है। अधिकांश बच्चों में यह देखा जाता है कि वे दूसरे बच्चों द्वारा किये गये क्रिया-कलापों को देखकर या उनकी हरकतों का अनुकरण करके, उसी प्रकार की क्रिया-प्रक्रिया करने की कोशिश करते हैं।



‘पाजेब’ कहानी की शुरुआत भी बच्चों की इसी प्रवृत्ति या मनोवृत्ति का ध्योतक है। मुन्नी ने अपने पड़ोस में रहने वाली सहेलियों को नए किस्म की पाजेब पहनते देखा तो वह भी उसी प्रकार की पाजेब लेने की जद्दोजहद करने लगी। यह सुनकर मुन्नी की बुआ ने अगले इतवार को पाजेब लेकर आने का वादा किया। बुआ द्वारा पाजेब पाते ही वह अपनी खुशी और उमंग को पूरे उत्साह के साथ मोहल्ले भर में सबको अपने इस नयी पाजेब को दिखा आयी। मुन्नी का भाई आशुतोष भी अपनी बहन की खुशी देखकर खुश होता है। पर बाल मन दूसरे बच्चों की कोई वस्तु को देख स्वयं के लिए भी इच्छित वस्तु के लिए व्याकुल हो उठता है। इसलिए उसने भी साइकील की मांग की। बुआ द्वारा उसे आश्वासन दिया गया कि उसके अवतरण दिवस के सुअवसर पर बुआ उसे जरूर साइकील देगी। पूरे दिन पाजेब का आनंद लेने के पश्चात्, पाजेब का आनंद कम पड़ जाता है और पाजेब खोलकर रख दिया जाता है। लेखक इस कहानी में दिखाते हैं कि बच्चे बहुत कोमल तथा भावुक होते हैं। इनमें भोलापन तो होता ही है, साथ ही इर्ष्या, हट और रूठ जाना जैसी आदतें भी होती हैं। बालक छोटी-छोटी बात पर प्रसन्न हो जाते हैं और उनकी इच्छित वस्तु प्राप्त हो जाती है तो वे गर्व की अनुभूति करते हैं। अपने सगे-संबंधियों और मित्रों को दिखाने हेतु निकल पड़ते हैं। यहाँ एक चीज स्पष्ट है कि

बाजार न सिर्फ बच्चों पर अपना प्रभाव डालता है अपितु घर के बड़े भी इससे प्रभावित दिखते हैं। मुन्नी की माता भी इसी प्रकार की पाजेब बनाने की बात करती हुई दिखती हैं।

पाजेब के दिन भर के उत्साह के बाद कहानी में नया मोड़ आता है। रात्रि को अब पाजेब की खोज की जाती है तो पाजेब नहीं मिलती है। पहला शक घर के नौकर बंशी पर जाता है। किसी भी घर के अंदर कोई चीज गायब होती है तो स्वभाविक रूप से पहला शक घर में सेवा देने वाले सेवक अर्थात् नौकरों पर जाता है। बिना सोचे-समझे या विचार किये जो चोरी या पायल खोने का द्वंद मन में चलता रहता है, उसे नौकरों पर मढ़ दिया जाता है। बंशी से बहुत सारे सवाल-जवाब किये जाते हैं। कथावाचक ‘मैं’ जब बंशी के उत्तर से संतुष्ट होते हैं तो उनका शक आशुतोष पर जाता है। उसी दिन पिता ने आशुतोष के हाथ में नई पतंग देखी थी। अतः इस कारण उन्हें यह स्वभाविक सा लगने लगता है कि उनके शक को दिशा मिल गई। कथावाचक कहता है- “मेरे मन में उस समय तरह-तरह के सिद्धांत आये। मैंने स्थिर किया कि अपराध के प्रति करुणा ही होनी चाहिए। प्रेम से ही अपराध वृत्ति को जीता जा सकता है। आतंक से दबाना ठीक नहीं। बालक का स्वभाव कोमल होता है और सदा ही उससे स्नेह का व्यवहार करना चाहिए।” इस प्रकार कथावाचक आशुतोष



पर अपना ध्यान केंद्रित करते हैं। पिता के बार बार पृष्ठने पर बालक क्षुब्ध होता है। बार-बार अभिभावकों द्वारा उसे बाध्य किया जाता है कि वह सत्य बोले। बालक समझ नहीं पाता कि वह करें भी तो क्या करें? उस किंकर्तव्यविमूढ़ की स्थिति में आ जाता है। उसकी बातों को कोई भी समझने वाला नहीं है—“उसने सिर हिलाकर क्रोध से अस्थिर और तेज आवाज में कहा कि मैंने नहीं ली, नहीं ली, नहीं ली। यह कह कर वह रोने को हो आया पर रोया नहीं। आखों में आंसू रोक लिए। उस समय मुझे प्रतीत हुआ, उग्रता दोष का लक्षण है।” मनुष्य के मन के भीतर कई सारी समस्याएं घटित होती रहती है तथा मनुष्य परिस्थिति बस स्वयं ही अपने अनुसार इन सारी समस्याओं का समाधान ढूंढने में प्रयासरत रहता है। अनुमान और अनुभव के आधार पर, वे निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयास करता है परंतु अनुमान कल्पना की धरातल पर टिका होता है और अनुभव मनुष्य की सहानुभूति का परिणाम होता है। आशुतोष के पिता अर्थात् कथावाचक भी अनुमान और अनुभव के आधार पर निष्कर्ष पर पहुँच जाते हैं कि यह चोरी आशुतोष ने ही की है। आशुतोष से बार-बार घुमा-फिराके पुनः एक ही बात पूछी जाती है तो वह क्षुब्ध और परेशान होकर मौन या

चुप्पी धारण कर लेता है। मधुरेश—“सिद्धांत में प्रेम एवं करुणा के बावजूद पिता का व्यवहार उस दारोगा से भिन्न नहीं है जो पकड़े गए अपराधी से कुछ भी कहलवा कर उसे सिद्ध करता है। बच्चे अपना नहीं हमारा सच कहते हैं। यदि वे कोई सूत्र देते हैं तो हम उसकी ओर ध्यान नहीं देते। रस्सी का साँप पुलिस वाले ही नहीं बच्चों के प्रसंग में अभिभावक भी बनाते हैं।” उसे पूर्ण विश्वास हो जाता है कि उसकी सच्चाई पर कोई विश्वास नहीं करेगा। इसके साथ ही उसे यह भी प्रतीत होती है कि वह झूठ ही बोल दे कि उसने पाजेब ली है, तो कदाचित् उसके माता-पिता प्रसन्न हो जाये एवं पुरस्कार स्वरूप उसे कुछ भेंट मिल जाये। अतः वह झूठ बोलने पर बाध्य हो जाता है। आशुतोष के पिता के शब्दों में—“मैंने अत्यंत हर्ष के साथ दोनों बाँहों में लेकर उसे उठा लिया। उल्लासपूर्वक बोला कि देखो हमारे बेटे ने सच कबूल किया है। पाजेब उसने छुनु को दी है।” वह कहता है कि उसने पाजेब छुनु को दी है। बाल मन यह नहीं सोच पाता कि यह बात यही समाप्त हो जायेगी। छुनु के माता-पिता को भी बुलाया जाता है। छुनु को भी उसके माता द्वारा खूब पिटा जाता है तो वह भी विवश होकर गलती न करने पर भी, उसे स्वीकार करने के लिए बाध्य हो जाता है। वह कहता है कि उसने पतंग वाले



को पाजेब ग्यारह आने में दी है। यहाँ पर आशुतोष के साथ-साथ छुनु भी झूठ बोलने लगता है-“मैंने आग्रह किया तो वह बोला कि छुनु के पास नहीं हुई तो वह कहां से देगा।” माँ से पिटने के बाद छुनु कहता है-“पाजेब आशुतोष के हाथ में मैंने देखी थी और वह पतंग वाले को दे आया है। मैंने खूब देखी थी, वह चाँदी की थी।” अक्सर यह देखा जाता है कि जब परिस्थितियों से समझौता करने की बात आती है, जब अपनी बात को बच्चे दूसरों द्वारा ना समझता हुआ देखते हैं तो वे झूठ का सहारा लेने पर विवश हो जाते हैं। इस प्रकार की स्थितियों से छुटकारा पाने हेतु, वे समझौता करने पर मजबूर हो जाते हैं। इसी प्रकार की घटनाएं इसमें घटित होती हैं। दोनों बालक बाध्य होकर झूठ बोलने पर मजबूर होते हैं। पतंग वाला पाजेब देने से इंकार कर देता है जिससे शक और अधिक बढ़ जाता है। आशुतोष के नाकारात्मक उत्तर और चुप रहने की व्यथा या द्वंद को अभिभावक रत्ती भर भी नहीं समझ पाते हैं।

बाल-मनोविज्ञान पर आधारित ‘पाजेब’ कहानी एक छोटी सी घटना को दर्शाता है कि अभिभावक कभी-कभी किस प्रकार अंजाने में ही एक आरोप को बच्चों के ऊपर थोप देते हैं। बच्चे अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने में असमर्थ होते हैं। वे अपनी बेगुनाही को प्रमाणित नहीं कर पाते और बेबश होकर थोपे गये आरोपों को स्वीकार करने के लिए विवश होते हैं। आरोप स्वीकारने के पीछे भी बच्चों में एक प्रकार का भय काम करता है। दंड से बचने के लिए आशुतोष पाजेब की चोरी को

स्वीकार कर लेता है। इसके बाद उसके साथ ज्यादाती दूर्यवहार किया जाता है। जैनंद्र जी ने इस तथ्य की पुष्टि करते हुए लिखा है-“मैंने कहा, कुछ कहते क्यों नहीं? वह गुमसुम रह गया और नहीं बोला। मैंने डपटकर कहा जाओ जहाँ से हो पाजेब लेकर आओ। जब वह अपनी जगह से नहीं उठा और नहीं गया तो मैंने उसे कान पकड़ कर उठाया। मैंने कहा सुनते हो ? जाओ, पाजेब लेकर आओ नहीं तो घर में तुम्हारा काम नहीं है।”

कहानीकार बच्चों के साथ की जाने वाली कठोर व्यवहार को अनुचित मानते हैं। वे यह मानते हैं कि अविभावक द्वारा अपने बच्चों के मनोस्थितियों को समझ कर ही कोई भी कदम उठाना चाहिए। यदि बच्चा बार-बार कहता है कि पाजेब नहीं ली है तो वे इसे स्वीकार कर लें। कथावाचक- “मेरा मन जाने कैसे एक गंभीर प्रेम के भाव से आशुतोष के प्रति उमड़ रहा था। मुझे ऐसा मालूम होता था कि ठीक इस समय आशुतोष को हमें अपनी सहानुभूति से वंचित नहीं करना चाहिए बल्कि कुछ अतिरिक्त स्नेह बालक को मिलनी चाहिए। मुझे यह एक भारी दुर्घटना मालूम होती थी। मालूम होता था कि अगर आशुतोष ने चोरी की है तो उसका इतना दोष नहीं है बल्कि यह हमारे ऊपर भारी इल्जाम है। बच्चे में चोरी की आदत भयावह हो सकती है। लेकिन बच्चे के लिए वैसी लाचारी उपस्थित हो आई, वह और भी भयावह है। यह हमारी आलोचना है। हम उस चोरी से बरी नहीं हो सकते।”

इस प्रकार का निर्णय लेकर लेखक आशुतोष से



प्रेम से बात करके उससे पुछते हैं किंतु जब लगातार आशुतोष का उत्तर नकारात्मक आता है, वह जब चोरी को नहीं स्वीकारता तो पिता को क्रोध आने लगता है और वे उसे एक कमरे में बंद कर देते हैं। लेखक चाहता था कि आशुतोष पतंग वाले के पास जाकर उसे पैसे वापस कर पाजेब ले आये। हांलाकि आशुतोष ने पाजेब पतंग वाले को देने की बात मान ली थी किंतु वह जानता था कि पाजेब उसके पास नहीं होगी। इस झूठ के पीछे भी अविभावक ही जिम्मेदार दिखते हैं क्योंकि आशुतोष एक बालक है। उसकी बुद्धि अभी विकसित नहीं हुई है। वह तर्क के माध्यम से अपने भावों को व्यक्त नहीं कर सकता। जो कुछ उसके पिता उससे कहलवाना चाहते हैं, वह कहता चला जाता है। वह दृढ़तापूर्वक यह नहीं कह पाता कि उसने पाजेब की चोरी नहीं की है। कहानी का अंत बुआ जी के आगमन के साथ ही होता है। बुआ पाजेब गलती से लेकर चली गई थी। यह जानने के बाद पूरी समस्या ही सूलझ जाती है। लेखक भौचक्के से खड़े रह जाते हैं। जैनंद्र जी ने स्पष्ट किया है कि बच्चों में मनोवैज्ञानिक समस्याओं के कारण के रूप में माता-पिता और घर के दूसरे सदस्यों को पाया है। प्रसिद्ध रूसी शिक्षाशास्त्री वसीली सुखोम्लीसकी के शब्दों में—“शिक्षा का अर्थ सर्वप्रथम मानव विज्ञान ही है। बच्चों के बौद्धिक विकास, उसके सोचने का ढंग, उसकी रुचियों, शौकों, रुझानों को, उसकी क्षमताओं और प्रवृत्तियों को जाने समझे बिना कोई शिक्षण कार्य नहीं हो सकता। आज की आपाधापी में बच्चों को अच्छे-महंगे पब्लिक स्कूल में भर्ती करा देने तक की ही जिम्मेदारी माता-पिता की रह गई है। हम भूल गए हैं कि माता-पिता ही पहले गुरु हैं। उन्हें माता-पिता नहीं समझेंगे तो अध्यापक भी कैसे समझ सकता है। बाल-मनोविज्ञान का सूक्ष्म चित्रण एक अच्छी फिल्म जिसे अभिनेता आमिर खान ने निर्देशित किया है—‘तारे जमीं पर’ में होता है। इस फिल्म में बालक ईशान अच्छी चित्रकारी करता है लेकिन पिता के लिए यह सब किसी काम के नहीं हैं। पिता ठस है। उसकी नज़र में बच्चे के लिए सिर्फ पढ़ाई और अच्छे नंबर महत्वपूर्ण है। उसकी स्वतंत्रता, उसकी खुशियाँ, उसकी कल्पनाओं, रंगों, कहानियों, गीतों, खेलों, शैतानियों या संगीत के लिए कोई जगह नहीं। इस घोर उपभोक्तावादी नज़रिए में ढल चुकी हमारी कला सृजन विरोधी मानसिकता का स्वतंत्रता

विरोधी मानसिकता का पता देती है। यह फिल्म हमारी गुलाम मानसिकता को उजागर करती है।

अंततः उपर्युक्त बातों और तथ्यों पर अमल करने के पश्चात् स्पष्ट हो जाता है कि जैनंद्र कुमार जी ने अपनी कहानियों में बाल मनोविज्ञान की अभिव्यक्ति और उससे जुड़े विविध प्रश्नों या गुत्थियों का विश्लेषण, निवारण और मूल्यांकन बाल-मनोविज्ञान के आलोक में किया है। वे बाल-मनोविज्ञान पर आधारित अपनी कहानियों के द्वारा बच्चों में, बालकों में संस्कार तथा चरित्र निर्माण पर विशेष बल देते हैं। इन्हीं बच्चों के कंधों पर भारत का स्वर्णिम भविष्य टिका हुआ है। इन्हीं से एक सुंदर परिवार, सुदृढ़ समाज एवं शक्तिशाली राष्ट्र की परिकल्पना संभव है। बालकों या बच्चों के जीवन से जुड़े लगभग सभी संदर्भ कहानीकार के अंतःस्थल में छिपे विचारों की गहरी और मनोवैज्ञानिक प्रस्तुति है। वे मानते हैं कि इन बच्चों के जरिए ही देश का भविष्य उर्ध्वमुखी हो सकता है। आधुनिकता, वैज्ञानिकता, प्रौद्योगिकी और तकनीक के साथ-साथ प्रेम, अहिंसा, नैतिकता और भाई-चारे जैसे आयामों और गुणों का बीजबपन बच्चों में प्रस्फुटित करने की हिमायती के पक्षधर जैनंद्र जी हैं। हिंदी साहित्य में ऐसे बहुत कम लेखक और चिंतक होंगे जो अपनी रचनाओं में इस प्रकार के सारगर्भित और महत्वपूर्ण विचार रखते हुए जीवन की सच्चाई को साहस के साथ रूपांतरित करते हैं।



रंग

श्रेष्ठा प्रभाकर

सुपुत्री-श्री उदय नारायण प्रभाकर, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

यह दुनिया कितनी रंगीन है,
हर पल में एक रंग है।
यह पल हमें कुछ दिखला जाते है,
खुशी के पल हो चाहे हो दुख के,
हमें कुछ समझा जाते है।

हर रंग में एक नई उमंग है,
यह रंग हमें नई राह दिखाते है,
सबको कुछ नया सिखाते है।
हर क्षण कीमती है यह बतलाते है,
रंग हमें जीना सिखाते है।

वृद्ध हो चाहे हो युवा,
सबको भाते हैं यह रंग,
हमारे जीवन में खुशियाँ लाते है यह रंग।
चाहे हो नीली या हरी, लाल या पीली,
कुछ संदेश दे जाते हैं यह रंग।

रंग के बिना अधूरे हैं हम,
रंग के साथ पूरे हैं हम
रंग के साथ पूरे हैं हम।।



भारतीय याक

मलि जाना

पत्नी-श्री अभिजीत जाना, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

तिब्बत में एक बैल जैसा स्तनपायी जानवर पाया जाता है, जिसको याक कहते हैं। इसका शरीर घने लंबे बालों से ढका रहता है और इसके छोटे-छोटे पैर होते हैं। तिब्बत में लोग 14000 से 20000 फीट तक की ऊंचाई पर रहते हैं। याक मुख्यतः तिब्बत, चीन के साथ ही साथ मध्य एशिया के देश मंगोलिया एवं नेपाल में भी पाया जाता है। भारत के विभिन्न राज्यों में भी याक का पालन किया जाता है जैसे- अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर। जंगली याक की तुलना में पालतू याक का आकार छोटा होता है। नर याक का वजन लगभग 600 से 1100 पाउंड जबकि मादा याक का वजन 400 से 600 पाउंड के बीच रहता है। वहीं जंगली नर याक का वजन अधिकतम 2200 पाउंड तक जा सकता है।

जंगली याक समय-समय पर पलायन करके पहाड़ी के नीचे तलहटी में घास और झाड़ी चरने के लिए चला जाता है। जब नीचे गर्मी बढ़ जाती है तो ये जानवर हरित काई एवं लाइकेन खाने के लिए ऊँची पठारी पर फिर लौट आते हैं। वे अपने खुरदरा जीभ से चट्टानों पर पड़ी हरित शैवाल को भी चट कर जाते हैं। ठंड के मौसम में भी याक के घने बालों एवं कुछ स्वेत ग्रंथियों के कारण 3000 मीटर से कम ऊंचाई वाले स्थानों को याक के रहने के लिए प्रतिकूल जगह माना जाता है। याक अपने जरूरत के अनुसार बर्फ को चाटकर भी अपनी प्यास बुझा लेता है। यह जंगल में लगभग 25 याकों की झुंड बनाकर रहते हैं जबकि कुछ नर याक नर वाले समूह में या अकेले रहना पसंद करते हैं। याक समय-समय पर कभी-कभी बड़े समूह बनाकर एक जगह जमा होते हैं। सामान्यतः इनमें प्रजनन सितंबर-अक्टूबर के महीने में होते हैं। बछड़ों का जन्म लगभग नौ महीने बाद होता है और उसके बाद पूरे एक साल तक बछड़ों को दुध पिलाने के बाद पतझड़ में मादा याक फिर से प्रजनन करती हैं।

यह निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है कि याक को पालतू कब बनाया गया था। हालांकि यह संभावना है कि उन्हें सबसे पहले हिमालयी व्यापार मार्गों में बोझ ढोने के लिए प्रयोग किया गया था। याक की फेफड़े की क्षमता अन्य मवेशियों की तुलना में लगभग तीन गुणा होती है। उनके पास लाल रूधिर कोशिकाएं भी अधिक होती हैं जिससे रक्त की ऑक्सीजन परिवहन क्षमता भी अधिक होती है। पालतू याक को सुगमता एवं उच्च दुध उत्पादन के लिए पाला जाता है। याक का उपयोग खेत की जुताई के साथ ही साथ इसके मांस, खाल एवं फर के लिए भी किया जाता है। याक के सुखे गोबर का इस्तेमाल जलावन के रूप में भी किया जाता है। जब एक याक प्राकृतिक कारणों से मर जाता है तो उसके हड्डियों को बौद्ध मान्यताओं के अनुसार आभूषण एवं तंबू के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा घरेलू याक को इसके मक्खन के लिए भी पाला जाता है जिसे बाद में पोचा या तिब्बती चाय में भी प्रयोग किया जाता है। तिब्बती पारंपरिक पेय बनाने के लिए मेमागुल में काली चाय, याक का दुध, मक्खन और नमक मिलाया जाता है, जो पीनेवालों को हिमालयी पर्वत से निकलने वाली कंपकपाती ठंडी हवा से सुरक्षा प्रदान करता है।

इन राज्यों में याक की अनुमानित आबादी वर्ष 2012 में 77000 थी। वहीं मत्सय, पशुधन एवं दुग्ध उत्पादन मंत्रालय के आँकड़ों के अनुसार 2019 में देश में कुल याकों की आबादी 58000 पाई गई जो कि पिछले 2012 की रिपोर्ट की तुलना में 24.67% की भारी गिरावट देखी गई। भारत में याकों की आबादी बहुत तेजी से घट रही है। इसके कारण वहाँ रहने वाली आबादी की अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल असर पड़ेगा जिनकी समुचित आय का स्रोत याक पालन पर ही निर्भर है।

तिब्बती याक की नई प्रजाति की जर्म-प्लाज्म की कमी के कारण भारतीय याक के प्रजनन में कमी देखी गई है। साथ ही झुंड में एक ही नर याक के लंबे समय तक उपयोग के कारण भारतीय याक की आबादी के प्रजनन पर बुरा प्रभाव पड़ा है। झुंडों के बीच प्रजनन करने वाले साँडों का आदान-प्रदान और सही साँडों का चयन नियमित रूप से अभी तक स्थापित नहीं हो पाई है। याक के संरक्षण के लिए अरुणाचल प्रदेश के दिरांग में एक राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र (एनआरसी) स्थापित किया गया है। वहाँ के वैज्ञानिकों ने प्रजनन समस्या, जलवायु परिवर्तन, किसानों के याक पालन छोड़कर अन्य गतिविधियों में संलिप्त होना, बीमारियों, शिकारियों के हमले और ऊँचाई पर घटते चारे को याकों की आबादी कम होने का कारण बताया है।

हाल ही में दिरांग में स्थित एनआरसी ने अपने पशुओं के लिए नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड से करार किया है। बीमा पॉलिसी याक मालिकों को मौसम की

आपदाओं, बीमारियों, दुर्घटनाओं, सर्जिकल ऑपरेशनों और हड़तालों या दंगों से उत्पन्न जोखिमों से बचायेगी। राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र का काम याक चरवाहों के पशुपालन सेवाओं को बेहतर बनाने और उत्पादन को सीमित करने वाली कुछ अंतर्निहित वैज्ञानिक और व्यावहारिक समस्याओं की जाँच करने में मदद कर रहा है। भारत में याक पालन के भविष्य के लिए शायद अधिक गंभीर समस्या यह है कि युवा पीढ़ी याक पालन की जिम्मेदारियों और सापेक्ष कठिनाईयों को उठाने के लिए तैयार नहीं है। कुछ याक झुंडों में एक नए सदस्य की आने की चाह में बुजुर्ग याक का वध कर देते हैं। इसलिए भारत में याक का भविष्य अनिश्चित है, लेकिन नई पीढ़ी के विकास के लिए बेहतर आर्थिक संरचना का निर्माण करके एवं बेहतर पशुपालन पद्धतियों की सहायता से याक उद्योग को बढ़ाया जा सकता है।





एकता में ही बल है

सोहिनी दे,

सुपुत्री-श्री देबाशीष दे, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

दादाजी ने आवाज लगाई - “अमर बेटा जरा पानी की बाल्टी उठाकर लाना, पौधों में पानी देना है।” अमर पानी की बाल्टी उठा लाया और बोला- “ये लीजिए दादाजी! पानी की बाल्टी, मग भी ले आया हूँ।”

बिल्कुल ठीक, वाह! बेटे। अगर तुम एक उंगली से बाल्टी उठाने की कोशिश करते, तो कतई इस बाल्टी को नहीं उठा पाते। पाँचों उंगलियों की ताकत से तुमने आसानी से भरी हुई बाल्टी उठा ली। इसका यह मतलब है कि एक उंगली के मुकाबले पाँच उंगलियों की ताकत ज्यादा है। इसलिए कहा गया है कि एकता में ही बल है।” दादाजी ने यह अमर को समझाया।

“दादाजी इसके पीछे की क्या कहानी है? सुनाइए न।” अमर यह सुनने के लिए अपने दादाजी से जिद करने लगा। दादाजी ने लता को भी बुला लिया और कहानी सुनाना शुरू किया-

एक गाँव था वीरपुर। उस गाँव में रहने वाले किसान बहुत मेहनती थे, इसलिए उनके खेतों में खूब अनाज का पैदावार होता था। गाँव के लोग दिन भर अपने-अपने खेतों में कड़ी मेहनत करते थे। शाम के समय खाना खाने के बाद उस गाँव के पुरुष और स्त्री अलग-अलग टोलियों में नाचते और गाते थे। उनके दिन बड़े ही आनंद और हंसी-खुशी के साथ बीत रहे थे। उस गाँव के लोग बहुत खुशहाल थे।

अचानक गाँव वाले के ऊपर एक मुसीबत आ पड़ी। डाकुओं के एक गिरोह ने गाँव पर धावा बोल दिया। लोग डर कर अपने-अपने घरों में दुबक गए। उधर डाकुओं का सरदार गाँव के बीच एक ऊंची जगह पर खड़ा हो गया। उसने गाँव वालों को ललकारा- “अरे! वीरपुर वालों, सुना है तुम्हारे गाँव में बहुत अनाज पैदा होती है। हमें तुम लोगों से

रूपये-पैसे कुछ नहीं चाहिए। बस बारी-बारी से हर एक घर से एक बोरी करके अनाज चाहिए। जो अनाज देगा, वह बच जाएगा, नहीं तो वह मारा जाएगा।” इस प्रकार डाकुओं का दल गाँव वालों को एक-एक करके लुटने लगा, जो किसान उन्हें अनाज नहीं देता, डाकू उनके खेतों में आग लगा देते और उनके मवेशियों को भी मार डालते।

गाँव के लोग इससे काफी परेशान हो गए। एक दिन गाँव वाले एक जगह इकट्ठे हुए और इस समस्या से निजात पाने के उपाए सोचने लगे। तभी गाँव के सरपंच ने

खड़े होकर कहा - “भाईयों ये डाकू हमें एक-एक करके लूट रहे हैं। हम एक-एक करके उनसे मुकाबला नहीं कर सकते। ऐसे डरने से कुछ नहीं होगा।” बस! फिर क्या था? गाँव वालों ने मिलकर प्रतिज्ञा ली कि वे अब डाकुओं का जुल्म नहीं सहेंगे और उनका मिलकर सामना करेंगे। डाकुओं को सबक सिखाएंगे। यह कहते-कहते दादाजी रूक गए।

“दादाजी, गाँव वालों ने उन डाकुओं का मुकाबला कैसे किया?” लता ने दादाजी से पूछा। दादाजी बोले - “बेटा, हमेशा की तरह एक दिन जब डाकू गाँव में आए और उन्होंने रामदीन के घर का दरवाजा खटखटाया। उसी समय चारों तरफ छिपे हुए किसान अपने हाथों में लाठी-डंडे, भाले, तलवार आदि लेकर एक साथ उन डाकुओं पर टूट पड़े और डाकुओं के दांत खट्टे कर दिए।” गाँव के सरपंच ने ऊंची आवाज में कहा-“शाबाश! भाईयों, देखो अपने एकता में कितना बल है।” यह सुनकर गाँव के सभी लोग एक साथ बोल पड़े- “एकता में ही बल है।” दादाजी की कहानी सुनकर अमर बोला- “हाँ, दादाजी जरूरत पड़ने पर एक साथ मिलकर काम करना चाहिए।”





कार्तिक चंद्र गायेन,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

एक सुदूरगाँव की बहू की कहानी

यह कहानी एक सुदूर गाँव की लड़की रीमा की है। रीमा का घर सुंदरवन के एक सुदूर गाँव में था, जहाँ रास्ते एवं यातायात के साधनों का बहुत ही बुरा हाल था। उसे रोज गाँव के इन कच्चे रास्तों से होकर विद्यालय जाने में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता था। फिर भी, इन परिस्थितियों का सामना करते हुए वह अपनी सहेलियों के साथ विद्यालय खुशी-खुशी जाती थी।

रीमा अपने गरीब और अनपढ़ माता-पिता की एकलौती संतान थी। उसके माता-पिता अनपढ़ होने के बावजूद भी यह चाहते थे कि रीमा उच्च शिक्षा अर्जित करे ताकि जीवन में अपने पैरों पर खड़ी हो सके। रीमा अपने माता-पिता के साथ काफी आत्मीयता एवं आनंद के साथ रहा करती थी। प्रतिदिन शाम के समय अपने मुहल्ले के लड़के-लड़कियों के साथ रीमा बहुत ही आनंद के साथ मिलजुलकर खेलती थी। सभी से रीमा हंसी-खुशी के साथ मिलती एवं खुब बातें किया करती थी।

रीमा जब कक्षा आठवीं में थी, तभी उसके लिए एक विवाह का प्रस्ताव आया था। रीमा की माता ने उस विवाह प्रस्ताव को ठुकरा दिया था क्योंकि वह अपनी बेटी को और पढ़ाना चाहती थी। वह इसके लिए हमेशा अपनी बेटी को प्रोत्साहित करती रहती थी। नवी की परीक्षा के बाद फिर रीमा के लिए एक विवाह का प्रस्ताव आया। इस बार भी रीमा और उसकी माताजी को प्रस्ताव मंजूर नहीं था। दरअसल रीमा बहुत ही सुंदर थी। उसके सुंदरता की चर्चा उसके गाँव में काफी होती रहती थी। विवाह प्रस्ताव बार-बार आता देख, अंततः रीमा के माता-पिता उसके विवाह के लिए राजी हो गए। वास्तव में, इस सुंदरवन के इस सुदूर गाँव में लड़कियों के इच्छाओं का महत्व नहीं दिया जाता था।

रीमा की शादी जहाँ ठीक हुई थी उन लोगों की आर्थिक स्थिति रीमा के घर से बेहतर थी। जिस लड़के से रीमा की शादी ठीक हुई थी वह कक्षा आठवीं तक ही पढ़ा



था। विवाह ठीक होने से पहले रीमा के माता-पिता ने रीमा के ससुराल वालों के पास एक प्रस्ताव रखा था कि शादी के बाद भी रीमा की पढ़ाई जारी रखनी होगी। उनके इस प्रस्ताव को रीमा के ससुराल वालों ने मान लिया था।

शादी के बाद रीमा के जीवन में अचानक ही एक बड़ा परिवर्तन आया। जहां रीमा जैसी लड़कियां इस उम्र में अपनी सहेलियों के साथ पढ़ाई-लिखाई, खेद-कूद करती हैं वहीं रीमा के हाथों में पूरे ससुराल को संभालने की जिम्मेवारी आ पड़ी। रीमा घर के कामकाज बिल्कुल भी नहीं जानती थी। सर्वप्रथम रीमा के सास-ससुर ने उसे घर के कामकाज सीखाए जैसे अंगीठी पर खाना पकाना, पशु-पक्षी पालन करना और खेती के काम में सहायता करना आदि। रीमा के सास-ससुर उसे अपनी बेटी की तरह प्यार करते थे। वह भी उनके इस प्यार के साथ अपने जिम्मेदारियों को संभालने लगी।

शादी होने के बाद रीमा के लिए पढ़ाई जारी रखना एक बहुत बड़ी चुनौती थी। इसके लिए उसे काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता था। प्रतिदिन ही वह अपने घर के सभी कामों को पूरा कर विद्यालय जाया करती थी। उसके ससुर उसे पढ़ाई करते रहने के लिए काफी प्रोत्साहित किया करते थे। रीमा भी घरेलू कामों और पढ़ाई में तालमेल बैठा कर अपने दायित्वों का पालन करने लगी। विवाह के एक वर्ष बाद ही रीमा ने एक बेटे तथा उसके दो वर्षों के बाद एक बेटी को जन्म दिया। छोटी सी उम्र में ही उसके बेटे में हृदय रोग की बीमारी हो गई थी। बेटे के इलाज के लिए रीमा तथा उसके परिवार को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा था। अपने पूरे दायित्वों का निर्वहन करते हुए रीमा ने माध्यमिक एवं उसके बाद उच्च माध्यमिक की पढ़ाई पूरी की।

रीमा को अब इसके आगे स्नातक की पढ़ाई के लिए कॉलेज में दाखिला लेना था, परंतु उसके इलाके में कोई भी कॉलेज नहीं था। इस कारण अब उसके आगे की पढ़ाई पर ग्रहण लगने वाला था, परंतु रीमा भी दृढ़ इच्छाशक्ति की मालकिन थी, साथ ही जिद्वी भी थी। उसके इस जिद्व की वजह से ही उसके ससुराल वालों को झुकना

पड़ा और उन्हें आगे की पढ़ाई के लिए इजाजत देनी पड़ी और उसके परिवार वालों को कोलकाता के बार्स्ट्रूपुर में आकर बसना पड़ा। उसे कोलकाता के एक कॉलेज में संस्कृत (ऑनर्स) की पढ़ाई के लिए दाखिला मिल गया। धीरे-धीरे उसके परिवार की आर्थिक स्थिति खराब होने लगी। फिर भी, काफी कठिनाईयों का सामना करते हुए अपने बच्चे एवं परिवार को संभालते हुए उसने संस्कृत (ऑनर्स) में अपनी स्नातक की डिग्री ली। उसके पति के आमदनी से परिवार चलाना काफी मुश्किल हो रहा था। इसलिए, रीमा को नर्स का प्रशिक्षण पूरा कर एक प्राइवेट अस्पताल में नर्स की नौकरी करनी पड़ी।

उसके बच्चे अधिकांश समय रीमा के पास नहीं रहते थे क्योंकि रीमा को अपनी नौकरी के कारण अक्सर घर से बाहर ही रहना पड़ता था। उसके बच्चे अपने माँ की ममता एवं प्यार से वंचित रहे। इसके अहसास से रीमा को काफी दुःख होता था।

फिर भी, रीमा को अपने परिवार के सभी पहलुओं पर ध्यान देना पड़ता था। उसका पति भी अपने रोजगार के कारण घर से बाहर रहता था। रीमा को अपनी नौकरी करते हुए अपने बच्चे के लालन-पालन के साथ-साथ उनकी पढ़ाई पर भी ध्यान देना पड़ता था। बड़ी ही मुश्किल से उनमें तालमेल बैठाकर रीमा को आगे बढ़ना था।

अंततः रीमा ने अपने कठोर परिश्रम के दम पर एक सरकारी अस्पताल में नर्स की नौकरी मिल गई। अब रीमा अपनी इस उपलब्धि के कारण काफी खुश है और अपने परिवार के साथ एक सुखी जीवन यापन कर रही है। साथ ही वह अब अपने गरीब माता-पिता को भी आर्थिक मदद कर पाती है। वह अब प्रयत्न कर रही है कि उसके बच्चे भी अपने पैरों पर खड़े हो सके।

मुश्किल परिस्थितियों में सभी बाधाओं को पार करते हुए सुंदरवन के सुदूर गाँव की एक लड़की अपने कठिन परिश्रम के बल पर अपने पैरों पर आज खड़ी हो पायी है और असंभव को संभव कर दिखाया है।



जीने की चाह

अग्रिता प्रभाकर,

सुपुत्री-श्री उदय नारायण प्रभाकर, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

एक लड़का था जिसका नाम रौनक था। वह बचपन में ही एक गंभीर बीमारी का शिकार हो गया था। उसे चार वर्ष की उम्र में ही लकवा मार दिया था। तब से ही वह एक अस्पताल में भर्ती था। पिछले दो वर्षों में उसकी हालत में कोई सुधार नहीं हुआ था। उसके माता-पिता भी उसे लेकर अत्याधिक चिंतित रहते थे।

एक दिन रौनक के बगल वाले बिस्तर पर एक लड़का आया, जिसका नाम राजेश था। उसे न्यूमोनिया हो गया था और उसकी आयु दस वर्ष की थी। धीरे-धीरे रौनक और राजेश की मित्रता हो गई। राजेश, रौनक से रोज बातें करता था। रौनक अपनी बीमारी के कारणवश चल-फिर नहीं सकता था इसलिए राजेश कमरे की खिड़की से बाहर झांकर कर उसे सारा दृश्य बताता था। वह उसे बाहर के दुकानों के चहल-पहल और रंग-बिरंगी फूलों और तितलियों के बारे में बताता था। इन बातों को सुनकर रौनक के अंदर एक नई ऊर्जा आ जाती थी और वह अपने अगल-बगल के वातावरण में दिलचस्पी लेने लगा था। यह सब एक सप्ताह तक चलता रहा। परन्तु आठवें दिन जब रौनक की आँखें खुलती हैं तब उसे यह देखकर बहुत हैरानी होती है कि राजेश का बिस्तर खाली पड़ा था। रौनक ने कई बार राजेश का नाम पुकारा, लेकिन उसे कोई उत्तर नहीं मिला।

थोड़ी देर बाद उसे बाहरी दुनिया के बारे में जानने की बहुत अभिलाषा हुई। वह अपनी पूरी कोशिश करते हुए, लड़खड़ाते हुए उस कमरे के खिड़की तक पहुँचता है। जैसे ही वह बाहर देखता है, वह बहुत आश्चर्यचकित रह जाता है क्योंकि उसे न कोई दुकानें दिखती हैं, न ही कोई फूल और तितलियाँ। उसे वहाँ पर सिर्फ एक बड़ी दीवार दिखती है।

उसी समय उसके कक्ष में नर्स आती है और रौनक को खड़ा देखकर भौंचक्की रह जाती है। वह दौड़कर उसके पास जाती है, रौनक उसे देखते ही राजेश के बारे में

पूछता है और उसे तब पता चलता है कि दुर्भाग्यपूर्ण राजेश की कल रात मृत्यु हो गई थी। यह सुनकर वह बहुत ज्यादा दुखी हो जाता है और फिर तुरन्त नर्स से बाहर की दुकानों तथा फूल और तितलियों के बारे में पूछता है। वह नर्स को अपनी पूरी बात बताता है। सबकुछ सुनने के बाद नर्स उसे बताती है कि वहाँ कभी-भी कोई दुकानें और फूल-तितलियाँ नहीं थी, वहाँ पर छः (6) वर्ष पूर्व से ही वह लम्बी दीवार खड़ी है।

नर्स की आँखें नम हो जाती हैं और वह रौनक को समझाती है कि राजेश ने यह सब उसके मन में बाहरी दुनिया के बारे में जिज्ञासा जगाने और जीने की चाह उत्पन्न करने के लिये किया था। तब रौनक समझता है कि राजेश की कहानियों के ही कारण वह आज अपने पैरों पर खड़ा हो सका और वह उसे मन में ही बहुत धन्यवाद करता है।

तभी से रौनक के स्वास्थ्य में सुधार होने लगती है और वह एक महीने के अंदर ही सकुशल अपने घर लौट जाता है।



विजय कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कोरोना से मिली जीवन की सीख

कोरोना वायरस रोग 2019 (कोविड-19) सार्स कोव-2 वायरस से होने वाला संक्रामक रोग है। इस रोग का पहला मामला दिसंबर 2019 में चीन के वुहान प्रांत में जानकारी में आया था। भारत में कोरोना का पहला मामला जनवरी 2020 में केरल में मिला था। यह रोग उसके बाद सारे विश्व में फैल गया और अब यह विश्वव्यापी महामारी का रूप ले चुका है। अब तक करोड़ों लोग इस रोग से संक्रमित हो चुके हैं और लाखों की मृत्यु हो चुकी है।

कोविड-19 के मुख्य लक्षण ज्वर, खांसी, सिरदर्द, थकान, श्वास कष्ट, स्वाद और गंध न आना है। इसके अलावा कुछ रोगियों को डायरिया, पेट में दर्द आदि भी हो सकता है। कुछ संक्रमित व्यक्ति लक्षणविहीन भी हो सकते हैं। ज्यादातर लोगों में बहुत कम तो कुछ लोगों में गंभीर लक्षण मिलते हैं, जैसे श्वास लेने में कठिनाई, कई अंगों का काम न करना। वृद्ध या जिन लोगों को हृदय रोग, मधुमेह, दमा जैसे रोग पहले से हैं कोरोना के लक्षण मिलने की संभावना बढ़ जाती है। कुछ लोगों में बीमारी से उबरने के बाद भी उसका बुरा प्रभाव दिखाई देता है तो कुछ में अंग नष्ट होने की सूचना मिली है। कोविड के लंबे प्रभाव पर अभी अध्ययन चल रहा है।

कोरोना वायरस से संक्रमण एक छोटी बूंदों या सूक्ष्म कणों वाली वायु में श्वास लेने से होता है। इस रोग से संक्रमित व्यक्ति के ज्यादा पास रहने से संक्रमित होने का खतरा ज्यादा है पर बंद जगह में इसका संक्रमण बहुत जल्द हो सकता है। कोविड-19 का संक्रमण दूषित तरल के आंख, नाक या मुंह पर गिरने से या ऐसा तरल जिस सतह पर गिरा हो उसे छूने से भी हो सकता है। कोविड-19 के रोगियों से यह वायरस 10 से 20 दिन तक फैल सकता है तब भी जब उनमें लक्षण न हो। इस रोग की परीक्षण करने के कई पद्धतियाँ आई हैं जिनमें आरटीपीसीआर, टीएमए, आरटीएलएएमपी है। इनमें नाक और मुंह के अंदर से नमूना संग्रह किया जाता है।

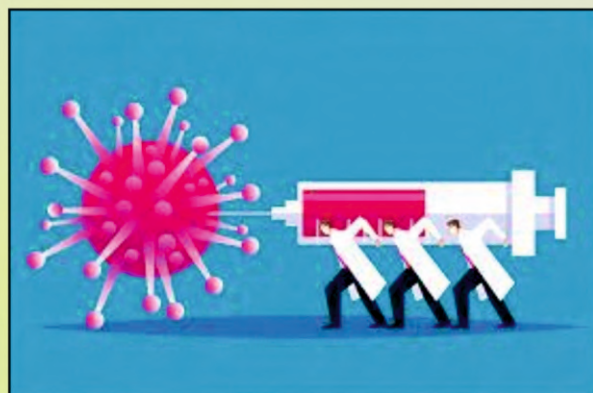
इस रोग के फैलने से रोकने के उपाय सामाजिक दूरी रखना, रोगी को अलग रखना, हवादार जगह में रहना, खांसने या छींकने समय रूमाल या टीशु का इस्तेमाल करना, हाथ धोना, बिना धोए हाथों से चेहरे को न छुना, फेस मास्क पहनना आदि। इस रोग की दवाई खोजने का काम चल रहा है पर अब तक इसकी लक्षण आधारित चिकित्सा चल रही है। अब तक विश्व में इसके कई टीके निकल चुके हैं और टीकाकरण का काम चल रहा है।

शुरुआत में लोगों ने सोचा था कि यह रोग कुछ महीनों में विदाई ले लेगा पर ऐसा नहीं हुआ। पहली लहर आई, फिर दूसरी लहर आई। अब तीसरी लहर की आशंका भी जताई जा रही है। इस बीच अनेक लोगों के रोजगार छीन चुके हैं। व्यवसाय, वाणिज्य बंद होने के कगार पर पहुंच चुके हैं। लोगों की आय नहीं होगी तो व्यय कहां से करेंगे।

अब यह अनुभव होने लगा है कि इस अनिश्चित काल तक काम धंधे बंद करके घर में बैठे नहीं रह सकते हैं। पर रोग से संक्रमित होने का खतरा भी बना हुआ है। सामाजिक और पारिवारिक दायित्व भी है। अब हमें अपने काम को कुछ ऐसे करना होगा कि काम भी हो और संक्रमण का खतरा भी कम हो। साथ ही संक्रमित व्यक्ति की स्थिति गंभीर न हो पाए। इसमें जितना सरकार का दायित्व है उतना ही हर व्यक्ति का। अब तक के इस रोग के अनुभव से हमें पता चला है कि इस रोग से बचाव के कुछ उपाय पता चले हैं तथा हमारी कार्यशैली में भी कुछ परिवर्तन हुए हैं। इनमें से कुछ निम्नलिखित है :-

- सामाजिक दूरी बनाए रखना।
- मास्क सही ढंग से पहनना और टीकाकरण।
- बिना काम घर से नहीं निकलना।
- भीड़भाड़ वाली जगहों पर जाने से बचना।
- ऑनलाईन लेन-देन।

- ऑनलाईन पढ़ाई।
 - ऑनलाईन परीक्षा।
 - संक्रमित होने का संदेह होते ही चिकित्सक या स्वास्थ्य सेवक से संपर्क कर परामर्श लेना और उस परामर्श अनुसार चलना अति आवश्यक है।
 - इस रोग में चिकित्सक का परामर्श लेने में देरी जीवन के लिए संकट उत्पन्न कर सकता है।
 - आवश्यक होने पर आइशोलेशन सेंटर या अस्पताल में तुरंत भर्ती होना।
 - पुराने स्थायी रोगों की यथोचित चिकित्सा कराते रहना।
 - हमें काम करने के नए तरीके को अपनाना होगा ताकि हम इस रोग से बचे रहे और हमारा काम भी होता रहे।
- हमें अपने स्वास्थ्य का नियमित ध्यान रखना है क्योंकि दवाई के साथ हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी इस रोग से लड़ने में महत्वपूर्ण है।





शिवकर बापुजी तलपदे की एक छोटी कहानी

हर्षित कुमार साह

पुत्र-श्री विनोद कुमार साह, लिपिक/टंकक

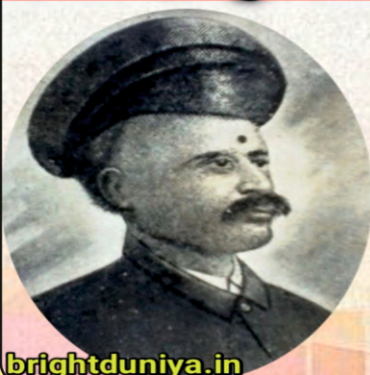
यह कहानी सन् 1895 की है, जब भारत पर अंग्रेजों का शासन था। एक आदमी जिसे यह विश्वास था कि वह आसमान में उड़ सकता है साथ ही दूसरों को भी उड़ा सकता है। वह हमेशा यह लोगों को कहा करता रहता था, पर लोग उसके इस बात को सुनकर उसे मूर्ख एवं पागल कहा करते थे। लोग उसे अक्सर ही कहा करते थे कि इस तरह की मूर्खतापूर्ण बातों से उनका समय बर्बाद कर रहा है। यह असंभव है कि कोई इंसान आसमान में उड़ सके, परंतु वह आदमी कभी भी लोगों के इस तरह की बातें सुनकर निराश नहीं होता था। वह अपने इरादे का पक्का इंसान था। वह हमेशा यही सोचता रहता था कि वह कैसे एक मशीन बनाए जो आसमान में उड़ता हो। वह अपने इस मशीन बनाने के मिशन को अंजाम तक पहुंचाने के लिए कड़ी मेहनत करने लगा। वह बार-बार कोशिश करता और प्रत्येक बार उसे असफलता का सामना करना पड़ता, फिर भी, वह हार नहीं मानता था। उसने अपनी कठोर परिश्रम और दृढ़ निश्चय के कारण एक दिन आखिरकार उस मशीन को बना ही डाली जो आसमान में उड़ सकती थी। बाद में, एक छोटे प्लेन के ढांचे बना कर इस मशीन को उसमें फिट कर दिया।

वह अपने इस मशीन को लेकर एक दिन बॉम्बे के समुद्र के किनारे पहुँचा। उसने समुद्र के ऊपर लगभग 800 मीटर तक अपने द्वारा बनाई गई एक छोटे आकार के प्लेन को उड़ाया। वहाँ उपस्थित लोग यह देखकर आश्चर्य में थे कि आखिर यह कौन सी चीज है जो हवा में उड़ रही है? उस आदमी ने प्लेन उड़ाने के बाद सुरक्षापूर्वक उसे जमीन पर भी उतारा। इस तरह दुनिया का पहला प्लेन का आविष्कार हुआ था और जिन्होंने इस प्लेन को बनाया था उनका नाम शिवकर बापुजी तलपदे था।

आज दुनिया के सभी लोग यह जानते हैं कि पहला हवाई जहाज का आविष्कार राइट ब्रदर्स ने किया था, परंतु उनके आविष्कार के 8 वर्ष पूर्व ही हमारे देश के शिवकर बापुजी तलपदे ने यह कारनामा कर दिखाया था, साथ ही उन्होंने अपने आविष्कार को ट्रायल के रूप में आसमान में उड़ाया भी और सुरक्षापूर्वक जमीन पर भी उतारा था। आज भारत के इस महान आविष्कारक का नाम कहीं गुम हो चुका है जिन्होंने पहली हवाई जहाज बनाई थी। उनके नाम की चर्चा हमारे देश में जोर-शोर से होना चाहिए ताकि उनका नाम पहला हवाई जहाज बनाने वाले आविष्कारक के रूप में पूरी दुनिया तक फैल सके।

राइट ब्रदर्स ने नहीं बल्कि..

इस हिन्दुस्तानी ने बनाया था पहला विमान



brightduniya.in

शिवकर बापुजी तलपदे





देवदुत्त मुखर्जी

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्लास्टिक प्रदूषण

इंसानो द्वारा प्लास्टिक का हो रहा बेतहाशा प्रयोग और अब मानव जीवन के लिए ही खतरे का सबब बनता जा रहा है। प्लास्टिक एक ऐसा पदार्थ है जिसे नष्ट नहीं किया जा सकता; इसे जलाएं तो वह वातावरण में घुलकर इसे प्रदूषित करता है और दफनाएं तो मिट्टी को प्रदूषित करता है। न्यूजीलैण्ड की डाटा फर्म डंपर्क ने महासागरों का एक ऐसा मानचित्र जारी किया है जो मानव जाति के लिए डरावनी और हैरान करने वाली भी है। डंपर्क की अगर माने तो सालाना करीब आठ टन प्लास्टिक हम समुद्र में फेंक देते हैं जो समुद्री व मानव जीवन के लिए गंभीर खतरे का संकेत है।

एकल इस्तेमाल होने वाली प्लास्टिक समुद्र सतह पर प्लास्टिक प्रदूषण का मुख्य कारण है। देश तथा दुनिया में इस जानलेवा पदार्थ का बढ़ता हुआ इस्तेमाल मूल चिंता की विषय है। एकल इस्तेमाल वाली प्लास्टिक का पुनःचक्रण से इस समस्या का निवारण कुछ हद तक संभव है।

समुद्री पानी की लवणता के कारण यह प्लास्टिक छोटी टुकड़ों में टूट जाती है जिसे समुद्री जीव व मछलियाँ आसानी से प्लास्टिक के टुकड़ों को निगल जाते हैं। इस प्रकार समुद्रीजीवों एवं मछलियों द्वारा निगला हुआ यह प्लास्टिक उनके प्रजनन क्षमता को प्रभावित करते हैं, साथ ही उनकी जीवन प्रत्याशा को भी घटाते हैं मानव जाति के हित को मद्देनजर रखते हुए हर किसी को इस परिस्थिति से अपने देश व दुनिया को निकालने की जिम्मेदारी लेने की आवश्यकता है, नहीं तो अब से कुछ ही साल बाद मछलियों के बदले मिलेगा प्लास्टिक; वातावरण का खाद्य श्रृंखला नष्ट हो जाएगा और इसका असर मानवजाति पर बहुत ही गंभीर होगी। इसी वजह से 5 जून 2019 को मनाया गया 'विश्व पर्यावरण दिवस' का थीम भी वही था 'बीट प्लास्टिक पोल्यूशन'।

आइये हम सब मिलकर प्रण लें कि इस वर्तमान

परिस्थिति का मुकाबला करेंगे और सरकार की मदद करेंगे साथ ही प्लास्टिक प्रदूषण कम करेंगे और आने वाली नई पीढ़ी को एक स्वस्थ एवं संतुलित वातावरण प्रदान करेंगे।





क्या ग्रामीण क्षेत्र पुर्नउद्धारक की भूमिका अदा कर सकती है?

इद्रानी जाना,

सुपुत्री-श्री अभिजीत जाना, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कोरोना वायरस की रोकथाम के लिए भारत के प्रधानमंत्री ने 24 मार्च 2020 को 130 करोड़ लोगों की सुरक्षा के लिए तालाबंदी की घोषणा की, जिसमें लोगों, नॉट फॉर प्रोफिट संगठन, कॉरपोरेट्स और सरकारों से सहयोग करने की अपील की। देश में पूर्ण तालाबंदी से



मानवजीवन की गुणवत्ता एवं आजीविका को मुख्य रूप से प्रभावित किया। स्वास्थ्य, जलपूर्ति, स्वच्छता, साफ-सफाई, आपूर्ति श्रृंखला एवं अन्य सेवाओं की आधारभूत संरचना के संबंध में ग्रामीण एवं शहरी भारतीय के बीच ऐतिहासिक खाई रही है। ग्रामीण समुदाय के लिए कोविड-19 का प्रभाव कहीं अधिक चिंताजनक लग रही थी।

जैसे ही भारत ने 2021 का स्वागत किया, जनवरी एवं फरवरी के मध्य देश में प्रतिदिन लगभग 15,000 नए कोविड के मामले आने लगे। जल्द ही अचानक से इसने रफ्तार पकड़ ली। 7 अप्रैल को दैनिक संक्रमण की संख्या



1,26,207 तक पहुँच गई जिसमें सात दिन का औसत 1,00,000 को पार कर गया। तब तक यह स्पष्ट हो गया कि कोविड-19 की दूसरी लहर भारत में पहली लहर से ज्यादा खतरनाक होगी। संक्रमण और मौतों में भारी वृद्धि ने पूरे विश्व में सुखियाँ बनाई, क्योंकि सामूहिक चिंता की तस्वीरें एवं टेम्पल ग्राउंड में मुफ्त ऑक्सीजन के लिए लगी लोगों की कतारों ने सोशल मीडिया पर हड़कंप मचा दिया।

जब बड़े शहरों में सक्रिय संक्रमितों की संख्या में कमी आई, ठीक उसी दौरान ग्रामीण जिलों में महामारी तेजी से फैल रही थी, जिसमें राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और केरल राज्यों में सबसे अधिक वृद्धि दर्ज की गई। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के रिपोर्ट के अनुसार मध्य मई के महीने में देश में कुल संक्रमितों की आधी मरीज ग्रामीण जिलों में पाई गई। कम परीक्षण दर



और लोगों की जाँच के प्रति लापरवाही के कारण निश्चय ही भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में कोविड-19 के वास्तविक आंकड़े, अधिकारिक आंकड़ों से कहीं ज्यादा अधिक होगी। वर्ष के शुरूआत में शहरों ने कोरोना के इलाज में आई कठिनाईयों का सामना किया, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सीय ढांचों की कमी के कारण महामारी के प्रसार की रोकथाम एवं इसका प्रबंधन और भी कठिन हो गया था।



लोगों का शहरों से अपने पैतृक निवास स्थान की ओर बड़े पैमाने पर विपरीत प्रवास भारत के लिए एक अभूतपूर्व घटना थी। यह जानते हुए कि यहाँ आजीविका की समस्या एवं जान-माल की अनिश्चितता है, बड़ी संख्या में मजदूरों को विस्थापित होने पर मजबूर किया। इतने बड़े पैमाने पर पलायन के लिए शासन-प्रशासन तैयार नहीं थे, जल्द ही हजारों-हजार की संख्या में लोग अपने पैतृक घर के लिए सड़क पर निकल पड़े। इतने अधिक संख्या में लोगों का अपने-अपने गाँव लौटना ग्रामीण क्षेत्रों में वायरस फैलने का खतरा और भी तेज हो गया। शहरों से लोगों के पलायन के कारण ग्रामीण क्षेत्र की समग्र व्यवस्था पर अधिक बोझ आ गया। अब अधिक लोगों की रोजगार, खाद्य, सुरक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधा का इंतजाम करने का दबाव भी व्यवस्था पर आ गई। कोविड-19 महामाहरी की दूसरी लहर में दैनिक संक्रमण और मौतों की अधिकारिक आंकड़ों में धीरे-धीरे कमी आई। अर्थव्यवस्था भी बहुत जल्द अपने सामान्य अवस्था में आने की चेष्टा करने लगा साथ ही कई राज्यों ने भी लॉकडाउन के प्रतिबंधों में छूट देन शुरू किया। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एन.एस.ओ.) के अनुमान के अनुसार भारतीय सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि वित्तीय वर्ष 2020-21 में 7.3% से कम हुआ जो कि अपेक्षाकृत थोड़ा अच्छा था।



लेकिन आर्थिक सुधार को और अधिक चुनौतीपूर्ण बनाता है कि देश में नोवेल कोरोना वायरस महामारी आने से पहले ही पिछले तीन वर्षों से लगातार अर्थव्यवस्था में गिरावट देखी गई। 2019-20 में आर्थिक विकास पहले ही गिरकर 4% हो गई जो कि 2016-17 में 8.3% के उच्च स्तर के आधे से भी कम थी। उस समय से



अर्थव्यवस्था को मंदी ने नाममात्र का छोड़ा बल्कि और बदतर स्थिति में ला दिया। आर्थिक सुधार भी चिंता का विषय बन गया। देश की अर्थव्यवस्था को उसके लिए बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। अधिकांश घरों की रोजी-रोटी चली गई। दरअसल पहले से ही नाजुक आर्थिक स्थिति को इस महामारी ने और भी खराब स्थिति तक पहुँचा दिया। जीडीपी में तीक्ष्ण गिरावट का परिणाम है कि 2016-17 से आर्थिक गतिविधियों में आंशिक मंदी का दौर देखने को मिला।

लॉकडाउन के दौरान कृषि, आपूर्ति श्रृंखला लगभग रूक ही गई। अपर्याप्त आपूर्ति और कालाबाजारी की वजह से कृषि-इनपुट की कीमत आसमान छूने लगी। शहरी अर्थव्यवस्था में मंदी का असर ग्रामीण भारत पर भी पड़ा। इसके कारण सीमित और बिना आजीविका के विकल्प वाले ग्रामीण परिवारों के कुल खर्च में वृद्धि हो गई। कोविड-19 के कारण अंडे, मांस, स्थानीय निर्मित



एवं गैर-लकड़ी वन उत्पाद (एनटीएफपी) की बिक्री में भारी गिरावट आई। गिरती मांग के कारण कई कुटीर उद्योगों, छोटे और मध्यम उद्यमों को बंद करना पड़ा जिससे बेरोजगारी और बढ़ गई।



महामारी के दौरान कृषि ने न केवल बड़ी उद्धारक की भूमिका निभाई बल्कि लगातार अर्थव्यवस्था को चलायमान रखा। जो अर्थव्यवस्था मंदी की ओर अग्रसर थी उसको कृषि क्षेत्र ने पिछले पाँच वर्षों तक सहारा दिया। जहां पिछले पाँच वर्षों में कृषि सकल मूल्यवर्धित (जीभीए) की औसत वृद्धि दर 4.8% रही वहीं समग्र अर्थव्यवस्था की औसत वृद्धि दर 3.6% रही। स्वास्थ्य एवं आजीविका के संबंध में आनुपातिक रूप से ग्रामीण क्षेत्र में दूसरी लहर ज्यादा प्रभावित किया। कई परिवारों ने कमाई करने वाले सदस्य को खो दिया और इतने ही संख्या में संक्रमण से बचाव के लिए अपनी जमापूंजी का बड़ा भाग निजी अस्पतालों में खर्च कर दी। यह आश्चर्य की बात नहीं थी कि इस महामारी में ग्रामीण क्षेत्र में गैर संस्थागत स्रोत से ऋण लेनेवालों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई।

मांग में गिरावट का संकेत अधिकांश कृषि संबंधित वस्तु के थोक मूल्य सूचकांक में गिरावट से पता चलता है। अनाज और सब्जी, जो कुल फसल उत्पादन का आधे से अधिक हिस्सा होती है, की कीमतों में वर्ष दर वर्ष गिरावट दर्ज की गई। यह उस दौर में हो रही है, जब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कृषि उत्पाद की कीमतें अब तक के अपने उच्च स्तर पर है। डीजल के इनपुट कीमतों में वृद्धि से किसान की स्थिति खराब थी और अधिकांश ऊर्वरकों की कीमत में हालिया वृद्धि से किसान की स्थिति भूखमरी तक आ गई। मुद्रास्फीति की वजह से अंतर्राष्ट्रीय वस्तु की कीमतों में उछाल आ गया जिससे गैर-कृषि ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर अधिक दबाव आ गया। ग्रामीण गैर-कृषि

क्षेत्र के अधिकांश आबादी माँग के गिरने से पहले ही जूझ रही थी। अब कच्चे माल के लागत में वृद्धि के कारण उनके लाभ मार्जिन भी कम हो गए।

अर्थशास्त्रियों का कहना है कि पहली लहर की ही तरह, सरकार को तुरंत खर्च बढ़ाना चाहिए और आर्थिक राहत पैकेज की घोषणा करनी चाहिए। पिछले साल जब केंद्र सरकार ने कोविड-19 लॉकडाउन के बाद राहत उपायों की घोषणा की उसके विपरीत दूसरी लहर में सरकार ऐसा करने से हिचक रही है। भारत जैसे बड़े युवाबल वाले देश में, अगले दौर की महामारी से आर्थिक प्रभाव के साथ-साथ लंबी अवधि तक बेरोजगारी की समस्या बनी रहेगी। अर्थशास्त्रियों ने सुझाव दिया कि जब तक न्यूनतम मजदूरी में वृद्धि साथ ही सरकार द्वारा रोजगार आवंटन नहीं की जाती तब तक ऐसा नहीं लगता कि अर्थव्यवस्था स्वतः अपनी पटरी पर आ पाएगी। इस समय भारत खर्च के मामले में बाकी देशों की तुलना में कमजोर दिखती है, जिसमें विकसित और क्रियाशील अर्थव्यवस्था भी शामिल है।



भारत की लगभग 70% आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। अगर कृषि एवं गैर-कृषि अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है तो इसका मुख्य रूप से प्रभाव ग्रामीण लोगों के मांग और उपयोग पर पड़ेगा। सीमांत उपयोग प्रवृत्ति (एमपीसी) एक आर्थिक मापन पद्धति है जिसमें अतिरिक्त आय आनुपातिक रूप से उपयोग मद में खर्च की जाती है। सीमांत उपयोग प्रवृत्ति ग्रामीण क्षेत्र में अधिक है इसलिए यदि ग्रामीण क्षेत्र में हमारे पास उच्च सीमांत उपयोग प्रवृत्ति नहीं होगी तो यह हमारे आर्थिक विकास को प्रभावित करेगी। क्योंकि उच्च सीमांत उपयोग प्रवृत्ति अर्थव्यवस्था पर गुणक प्रभाव डालता है। जब तक लोगों के पास पर्याप्त नकदी नहीं होगी तब तक लोगों में उपयोग प्रवृत्ति

कम रहेगी। जैसे-जैसे ग्रामीण माँग की पूर्ति होती जाएगी
वैसे-वैसे भारत के विकास की स्तर में सुधार आएगी।



इस महत्वपूर्ण समय में सरकार को टीकाकरण में तेजी लाकर ग्रामीण लोगों की रक्षा करनी चाहिए। साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक वित्तीय मदद की आवश्यकता है। दोनों तरीकों से प्रत्यक्ष आय समर्थन से अर्थव्यवस्था में माँग बढ़ेगी और कई सब्सिडी की मदद से बढ़ती मुद्रास्फीति से सुरक्षा मिलेगी। महत्वपूर्ण कार्यों से परे हालांकि ये भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि भारत विकास के वर्तमान दृष्टिकोण पर दोबारा विचार करते हुए इस आपदा को अवसर में बदले। शहर केंद्रित विकास को छोड़कर भारत ग्रामीण क्षेत्र में बेहतर स्वास्थ्य और कल्याण प्रणाली विकसित करनी चाहिए और ग्रामीण इलाकों को कोविड-19 जैसे आपदों के प्रति अधिक सुदृढ़ बनाना चाहिए।





पुनम मालपानी,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

डिजिटल शिक्षा – समावेशीता अपनाने का अवसर

शिक्षा एक महत्वपूर्ण उपकरण है, जो हर किसी के जीवन में बहुत उपयोगी है। शिक्षा वह है जो हमें पृथ्वी पर अन्य जीवित प्राणियों से अलग करती है। यह मनुष्य को पृथ्वी का सब से चतुर प्राणी बनाती है। यह मनुष्यों को सशक्त बनाती है और उन्हें जीवन की चुनौतियों का कुशलता से सामना करने के लिए तैयार करती है।

देश भर में शिक्षा की इस प्राकृतिक प्रक्रिया को जारी रखने के लिए, कोरोना और लॉकडाउन की स्थिति में, राष्ट्र ने ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को अपनाया है। डिजिटल शिक्षा को अपनाने के बाद, मानो जैसे कि प्रत्येक बच्चे का शैक्षिक जीवन और उसके माता-पिता का घरेलू जीवन बहुत बदल गया है। बच्चे सोमवार से शुक्रवार रोज ठीक 9 बजे स्कूल जाने के लिए तैयार हो जाते हैं, लेकिन वे न तो अपने कमरे के बाहर कदम रखते हैं और न यूनिफॉर्म पहनते हैं। बस ईयर फोन लगाते हैं, वेबकैम चालू करते हैं और लॉग-इन करके डिजिटल क्लासरूम से जुड़ जाते हैं। हरेक डिजिटल कक्षा 40 मिनट की होती है और इसमें उनके साथ उनके शिक्षक और सहपाठी भी जुड़े होते हैं। कक्षाएं दोपहर तक चलती हैं और उसके बाद वे कुछ और घंटे ऑनलाइन रहकर अपने असाइनमेंट पूरे करते हैं। डिजिटल कक्षाओं में बच्चे अगर चाहें तो माइक और कैमरा बंद करके अदृश्य हो सकते हैं। असल कक्षा में यह सुविधा उन्हें हासिल न थी तो भी उनका मन नियमित कक्षाओं में लौटने के लिए तरसता है। दोस्त, दो कक्षाओं के बीच चलने वाली गपशप और पढ़ाई के लिए मिलने वाली एकाग्रता, इन चीजों की कमी उन्हें बहुत खलती है। कहीं कहीं छात्रों के एक बहुत बड़े हिस्से के लिए उचित कंप्यूटर और विश्वसनीय नेटवर्क तक पहुंच की कमी है। यह सामाजिक-आर्थिक विभाजन के साथ अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है- वंचित वर्ग हार्डवेयर खरीदने के लिए आर्थिक रूप से संघर्ष कर रहे हैं, परिवार में एक ही लैपटॉप या मोबाइल फोन साझा कर रहे हैं, और पहुंच अक्सर

केवल एक मोबाइल फोन तक ही सीमित है। प्रतिदिन कई घंटों तक डिजिटल स्क्रीन से 'संलग्न' रहने वाले छात्रों के प्रभावों को शायद कम करके आंका गया। सभी छात्र (और कई शिक्षक) आंखों की थकान, सिरदर्द, आसन से संबंधित दर्द की शिकायत करते हैं – ये सभी ध्यान केंद्रित करने की क्षमता को कम करती हैं। ये दिक्कतें लोग अपने घर में महसूस कर रहे हैं। परेशान होकर स्कूल में इकट्ठे होकर विद्रोह भी कर रहे हैं।

इसे लेकर समस्याएँ अनगिनत हैं पर समाधान कम। हालांकि मेरी राय में इस चुनौती को पार करना ही मनुष्य की शिक्षा की तीक्ष्णता को उजागर करना है हालांकि इन सबके बीच हमें ये समझने की भी जरूरत है कि इस प्रणाली को ऑफलाइन से ऑनलाइन ट्रांसफॉर्म करने का कारण है किसी संकट से उबरना और शिक्षा का प्रवाह किसी भी परिस्थिति में अटकाया नहीं जा सकता क्योंकि यही हमारा भविष्य है। इन सभी समस्याओं के बीच, बुरे में से कुछ अच्छा है, जिसका हमें पता लगाने की जरूरत है और अच्छाई खोजने का यह संस्कार स्वयं शिक्षा के माध्यम से हमारे अंदर समाया हुआ है।

शिक्षा के डिजिटलीकरण का एक व्यापक परिप्रेक्ष्य समावेशीता है। शिक्षा का उद्देश्य, चाहे डिजिटल हो या पारंपरिक, निष्पक्षता, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के लोकतांत्रिक मूल्यों की प्राप्ति के साथ पहचाना जाना चाहिए। इसके लिए समावेशी शिक्षा की आवश्यकता है, जिसका अर्थ यह है कि विभिन्न हितधारकों, जैसे छात्रों, शिक्षकों, अभिभावकों और स्कूल अधिकारियों की सक्रिय भागीदारी, उनसे संबंधित मुद्दों पर निर्णय लेने की आवश्यकता। इसका मतलब यह भी सुनिश्चित करना है कि निर्णय लेने में वंचितों की जरूरतों पर विचार किया जाना चाहिए। शिक्षा का डिजिटलीकरण भारत में शिक्षा का लोकतांत्रिकरण करने का एक प्रबल अवसर है। समावेशी शिक्षा प्राप्त करने के लिए

डिजिटलाइजेशन को एक साधन के रूप में मानने के बजाय, डिजिटल शिक्षा में समावेशिता को शामिल किया जाना चाहिए। यदि ऑनलाइन शिक्षा लागू नहीं होती तो सीमाओं, कंपनियों और समाज के सभी हिस्सों में ज्ञान का प्रसार संभव नहीं होता। आर्थिक रूप से सबसे गरीब और सबसे वंचित लोगों के साथ और उनके बीच पायलट परियोजनाओं के संचालन के द्वारा उठाए गए कदम अपेक्षित है जो इस चुनौतीपूर्ण स्थिति में नवाचार और रचनात्मकता को विकसित करने का अवसर देगा। आज आवश्यक है कि लोग अपनी समझ के अनुसार इस टेक्नोलॉजी का अन्वेषण करें।





मानव एवं संघर्ष

कार्तिक नामदेव

कनिष्ठ अनुवादक

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पर्या. एवं वै.वि. नई दिल्ली

इंसान अब इंसान से ही दूर है
जीवन की गति पर लगा एक बहुत बड़ा अवरोध है।

कोरोना के उद्भव ने हमे आईना दिखाया
था घमण्ड जिस विकास पर हमें
उस तकनीक ने ही नीचा दिखाया।

ये विकास ये तकनीक
कुछ भी ना आये हमारे काम
फिर क्यों करें
हम इन सब पर इतना एहतराम

दूर दूर तक
आशा की कोई किरण नज़र नहीं आती
कैसे निकलेगी दुनिया इस महासंकट से
ये बात भी अब समझ नहीं आती।

एक सूक्ष्म जीव ने हमें यह सिखाया है
सहभागिता ही जीवन का सबसे बड़ा सहारा है

मानव जीवन पर पहले भी
बहुत विपदाएं आयी हैं
लेकिन अपने धैर्य और परिश्रम से
हमने सभी पर विजय पाई है

हाँ इस संघर्ष में हमने जरूर
बहुत कुछ खोया है
पर एक समय वो भी होगा
जब इस महामारी को हम पराजित कर
पहले से ज्यादा सशक्त होकर उभरेंगे।





सुरोजीत कुमार दत्ता
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

ग्रीन हाइड्रोजन



“ग्रीन हाइड्रोजन” का उपयोग हमारी अर्थव्यवस्था को गति देने में ऊर्जा के एक नवीनतम स्रोत के रूप में किया जा सकता है। “ग्रीन हाइड्रोजन” का उपयोग स्टील उद्योग में कोयला के बदले किया जा सकता है। इसके अलावे खाना पकाने, विद्युत उत्पादन, वाहन चलाने के लिए भी “ग्रीन हाइड्रोजन” का उपयोग किया जा सकता है। एक अनुमान के अनुसार “ग्रीन हाइड्रोजन” से भारत 200 खरब डालर के आयात की बचत कर सकता है, जिसमें मुख्य रूप से कच्चा तेल, कोयला, एल.एन.जी. इत्यादि शामिल है।

हम समझने की कोशिश करते हैं कि इस वैकल्पिक एवं नवीनतम ऊर्जा को “ग्रीन हाइड्रोजन” क्यों कहते हैं? हमारी पृथ्वी पर शुद्ध हाइड्रोजन बहुत ही कम मात्रा में पाया जाता है परंतु भौगोलिक रूप में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। जैसे कि पानी जिसका रासायनिक फार्मूला एच₂ओ है, इसे इलेक्ट्रोलाइजर के द्वारा एच₂ओ से हाइड्रोजन अलग किया जा सकता है और अवशिष्ट के रूप में ऑक्सीजन प्राप्त किया जा सकता है। इसके अलावे जीवाश्म ईंधन में रासायनिक प्रतिक्रिया के द्वारा भी हाइड्रोजन प्राप्त किया जा सकता है लेकिन अवशिष्ट के रूप में कार्बन डाई ऑक्साइड एवं कार्बन मोनोऑक्साइड प्राप्त होता है जो खतरनाक गैसों हैं। इस प्रकार हाइड्रोजन के बहुत सारे प्रकार हैं।

(1) “ब्राउन हाइड्रोजन” - कोयला उत्पादन के दौरान प्राप्त किया जाने वाला हाइड्रोजन “ब्राउन या भूरा हाइड्रोजन” कहलाता है

(2) “ग्रे हाइड्रोजन” - प्राकृतिक गैसों से प्राप्त होने वाले हाइड्रोजन को “ग्रे हाइड्रोजन” कहा जाता है।

(3) “ब्लू हाइड्रोजन” - “ब्लू हाइड्रोजन” भी प्राकृतिक गैसों से ही प्राप्त किया जाता है लेकिन इसमें कार्बनिक तत्वों को एकत्र कर अलग कर लिया जाता है।

(4) “ग्रीन हाइड्रोजन” - “ग्रीन हाइड्रोजन” पानी से प्राप्त होता है और इसके अवशिष्ट के रूप में ऑक्सीजन प्राप्त होता है तथा हाइड्रोजन उत्पादन में किसी प्रकार का कोई प्रदूषण नहीं होता है इसलिए इसे ग्रीन हाइड्रोजन कहते हैं।

हम जानते हैं कि भारत तीन ओर से समुद्र से घिरा हुआ है पानी की किसी प्रकार की कोई कमी नहीं है साथ ही इसके उत्पादन एवं उपयोग के दौरान किसी प्रकार की कोई प्रदूषण नहीं होता है। एक अनुमान के अनुसार भारत को वर्ष 2050 तक 28 मीट्रिक टन ग्रीन हाइड्रोजन की आवश्यकता होगी जो अभी फिलहाल 6 मीट्रिक टन है।

भारत को कार्बन उत्सर्जक मुक्त देश बनाने के उद्देश्य से भारत सरकार ने राष्ट्रीय हाइड्रोजन ऊर्जा मिशन की घोषणा की है। साथ ही इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए सरकार निजी कंपनियों के साथ मिलकर काम भी कर रही है। यह आशा की जा सकती है कि वर्ष 2035 तक भारत कार्बन उत्सर्जक मुक्त देश बन जाएगा एवं इस लक्ष्य को प्राप्त करने में ग्रीन हाइड्रोजन महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।





पाँच रोटियां

देबाशीष दे,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

ईसा मसीह अपने शिष्यों के साथ धर्म प्रचार के लिए यात्रा कर रहे थे। रास्ते में रेगिस्तान पड़ा, जहाँ आस-पास कोई भी घर न होने के कारण भोजन की समस्या उत्पन्न हुई। ईसा मसीह बोले- “जो कुछ भी खाना तुम लोगों के पास है, उसे ही तुम लोग आपस में मिल बांट कर खा लो।” शिष्यों के पास कुल पाँच ही रोटियां और बहुत ही थोड़ी मात्रा में सब्जी उनके थैली में थी। शिष्यों ने भरपेट खाना खाया और साथ ही वहाँ से गुजरने वाले भूखे भिखारियों को भी दिया। वे सारे इतने खाने खा कर ही तृप्त हो गए।

यह दृश्य देखकर सोलोमन नामक एक शिष्य ने पूछा- “गुरुवर! इतनी कम सामग्री खाकर सभी तृप्त हो गए, इसका क्या रहस्य है?” ईसा मसीह ने कहा- “शिष्यों धर्मात्मा वही है जो स्वयं के लिए नहीं औरों के लिए सोचता है।” अपनी बचत सबके काम आए, इसी साकारात्मक सोच के कारण पाँच रोटियां और थोड़ी सब्जी सबके लिए पर्याप्त हो गया, जो केवल अपनी जुगाड़ में ही लगे रहेंगे, वे हमेशा भूखे रहेंगे और जिनमें दान करने की सोच रहेगी, उनके लिए तृप्ति के साधन अपने आप आ जाएंगे। यह सुनकर शिष्यों ने संकल्प लिया कि वे एक रोटी होने पर भी उसे बांट कर ही खाएंगे।





मुस्कुराहटें

शिप्रा वर्मा

पत्नी-श्री उदय नारायण प्रभाकर, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी.

जिनको देने में ना कोई मोल-
जिनको लेने में ना कोई मोल-
फिर भी बेशकीमती हैं ये मुस्कुराहटें

पल भर में शिकवे मिटा दे ये मुस्कुराहटें
वर्षों के बैर को हटा दे ये मुस्कुराहटें-
आज हर एक इंसान को अदद जरूरत है इनकी-
हो सके तो लुटा दो सब पर अपनी ये मुस्कुराहटें-

हर क्षण यहाँ है भारी
चारो तरफ है महामारी
ना ही सुनने को मिलती है कोई किलकारी
लोग तरस गए अपनों के लिए
उनके चेहरे पर खुशी लाए ये मुस्कुराहटें
आज की जरूरत है ये मुस्कुराहटें

अपने पराये भूलकर सबको बाँटो ये मुस्कुराहटें
क्या पता किसी को जीवन दे जाए
क्या पता किसी को हौसला दे जाए
तुम्हारी ये बेशकीमती मुस्कुराहटें।।





रंजीत रॉय

वरिष्ठ लेखापरीक्षक अधिकारी

मददगार हाथ

सुबीर बहुत जल्दी में है। वह आज आधे दिन ही दुकान में रहेगा। कल बहन की शादी है। कम से कम दो दिन पहले छुट्टी लेना जरूरी था लेकिन नहीं, दुकान के मालिक अमलबाबू ने नहीं छोड़ा, क्योंकि सुबीर उन गिने-चुने कर्मचारियों में से एक है जिन पर इतने बड़े ज्वैलरी स्टोर की जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है। वह आज से नहीं, बल्कि पिछले दस सालों से इस दुकान में है।

“दत्ता ज्वैलर्स” में साल भर हमेशा भीड़ रहती है। इस बीच, अगर शादी की तारीख पास में हो तो भीड़ बढ़ जाती है। कभी-कभी समय भी नहीं मिलता। इतना दबाव के बावजूद भी किसी कर्मचारी पर संदेह नहीं करते हैं। कारण अमलबाबू बहुत अच्छे इंसान हैं। जब वेतन की बात आती है तो वह कर्मचारियों को कभी निराश नहीं करते हैं। वे साल दर साल आकर्षक बोनस भी देते हैं।

वैसे तो आस-पास बड़ी और छोटी कई दुकानें हैं, लेकिन ज्यादातर लोग इसी ‘दत्ता ज्वैलर्स’ पर निर्भर हैं।

सुबीर नकदी का प्रबंधन करता है। वह दो साल से इस पद पर है। वह जितना मिलनसार है उतना ही जिम्मेदार भी। कल शादी की तारीख है। आज भीड़ कुछ ज्यादा है। सुबह से ही कुछ ग्राहक थे। कुछ समय पहले दो परिवार दुकान में आए, उनकी लिस्ट काफी बड़ी है। ग्राहक को पसंद कराने के लिए बहुत सामान दिखाना पड़ता है। अगर आपके पास सीसीटीवी कैमरा है तो भी आपको सावधानी रखनी होगी। कौन जानता है किसके मन में क्या है? सुबीर दोपहर में रवाना होंगे। घर में बहुत काम बचा है। बहन की शादी की बात है, बड़ा भाई होने के नाते उसकी जिम्मेदारी कम है क्या !

सुबीर का दिल अब बेचैन होने लगा है। सोचने लगा कब छुटकारा मिले। आज दोपहर से अगले कुछ दिनों तक मालिक खुद सुबीर की जगह बैठेंगे नकदी संभालेंगे। लेकिन कहां, अमलबाबू अभी तक दुकान पर नहीं पहुंचे हैं। अभी-अभी एक ग्राहक को सारा सामान समझाकर

विदा किया तो एक और नया ग्राहक आ गया। वह अज्ञात है। वह करीब डेढ़ लाख रुपये के जेवर लिया। जेवर देने के बाद सुबीर अनमने ढंग से पैसे को तिजोरी में रख दिया। कुछ देर बाद उसके सिर पर बिजली गिरी। ‘अरे! पैसे की गिनती नहीं की!’ सुबीर ने झट से कैश बॉक्स खोला और पैसे गिनने लगा, यह सोचकर कि क्या उसने पैसे ठीक से चुकाए हैं। वह चकित हो गया। एक बार फिर गिनती किया। वह भौंचक्का रह गया। गलती से उस अज्ञात ग्राहक ने बीस हजार रुपये अधिक भुगतान किया है। उसी समय मालिक अमलबाबू भी आए। ‘मैं थोड़ा आ रहा हूँ’ बोल के सुबीर दुकान से बाहर आया और जेब में बीस हजार रुपये लिए बिजली की गति से भागा। उस ग्राहक को खोजने के लिए सुबीर ने जमीन आसमान एक कर दिया। आखिरकार उन्हें बाजार में एक कपड़े की दुकान पर देख लिया। सुबीर ने उसे पैसे वापस किये और खुद में एक अवर्णनीय खुशी महसूस की।

सुबीर ने बचपन से अपने माता-पिता से सुना है कि अच्छे कर्मों का फल हमेशा अच्छा होता है। जब लोग विपत्ति में होते हैं और अगर किसी ने उस समय उसकी मदद की तो वास्तव में लोग भी विपत्ति में उसके साथ खड़े होते हैं। आज तक उसने अपने माता-पिता की सलाह का पालन किया है। ऐसा ही कुछ दिन पहले हुआ था जब वह पैसे निकालने बैंक गया था। सुबीर अमलबाबू की दुकान के बैंक लेन-देन भी देखता है। उसने उस दिन पैसे निकालने के लिए पचास हजार का चेक जमा किया। बूढ़ा खजांची भूलवश सुबीर को साठ हजार रुपये दे दिए। आधे घंटे बाद दुकान पर पहुंचकर जब उसे पैसे के बेमेल होने का पता चलता है तो वह खुद बैंक जाता है और पैसे लौटा देता है। एक दिन जब उसने एक थैला बाजार में पड़ा देखा तो जिज्ञासावश उसे खोला तो उसमें से तीस हजार रुपये नकद और कुछ उपयोगी कागजात मिले। उसने सीधे थाने जाकर नगदी से भरा थैला जमा कराया और बाद में सही मालिक के पास पहुंचा दिया।

सुबीर कभी-कभी बहुत क्रोधित हो जाता था। कैसे हैं लोग! पता नहीं उसने कितनी खोए हुई सामानों को उनके असल व्यक्तियों को लौटाया है। एक या दो को छोड़कर बाकी सभी कम से कम धन्यवाद कहने की आवश्यकता भी महसूस नहीं की। किसी की मदद करने की कोई जरूरत नहीं है, वह खुद से बड़बड़ाया। कुछ दिन पहले अखबार में एक शख्स का नाम आया। उसने सड़क पर मिला पांच हजार रुपए उनके मालिक का पता लगाया और उनको रुपए वापस किया। इसके कारण एक क्लब ने उस शख्स को स्वागत-सत्कार भी किया था।

यह खबर देखकर सुबीर को अच्छा भी लगा और चिंता भी हुई। सिर्फ पांच हजार! उसने आदमी को कितनी अधिक मूल्यवान चीज वापस दी है, उसका कोई हिसाब नहीं है। उस संदर्भ में वह भी पारितोषिक का हकदार होता है। उसका नाम भी अखबार में आना चाहिए। कहाँ, ऐसा कभी नहीं हुआ। यदि उपकार करने के उपरांत थोड़ा सा ‘नाम’ मिल जाए तो भलाई करने की इच्छा पैदा होती है। अब और देर नहीं किया जाएगा। सुबीर तेजी से दुकान की ओर बढ़ा। यहां से वह अपनी बहन की शादी के जेवर ले लिया। मालिक अमलबाबू एक अच्छे इंसान थे। बहन की शादी में कुछ पैसों की जरूरत थी। सुबीर ने उधार के रूप में पचास हजार रुपये मांगे, अमलबाबू ने कोई आपत्ति नहीं की। फिर सुबीर बिना देर किए बाहर आ गया। शाम के समय भीड़ होने के कारण बाइक को धीरे-धीरे चला रहा था। अब तक वह एक लंबा सफर तय कर चुका था। उसी समय, सुबीर ने शीशे में देखा कि एक लड़का लापरवाही से अपनी मोटर साईकिल चला रहा है। बार-बार हॉर्न बजा रहा है। वह परेशानी महसूस करने लगा। कुछ सोच के सुबीर ने खुद स्पीड बढ़ा दी। उस लड़के को आगे नहीं जाने देंगे। ‘वे अपने बारे में क्या सोचते हैं? और कोई तेजी से गाड़ी नहीं चला सकता!’ सुबीर मुस्कुराया और अपनी गति बढ़ा दी। लड़का पीछे से ऊंची हॉर्न के साथ आगे बढ़ने की बहुत कोशिश कर रहा था। सामने एक

स्पीडब्रेकर को अचानक देखते हुए सुबीर ने ब्रेक दबा दिया। थोड़ा लड़खराने के बाद अंत में उसने संभाल लिया। इसी बीच पीछे वाला लड़का आगे बढ़ चुका था। उसने सुबीर को मोटर साईकिल रोकने का इशारा किया। तब तक गति धीमी हो चुकी थी, जिससे उसे मोटर साईकिल रोकनी पड़ी। 'इतना पैसा और गहने हैं। क्या वह स्नैचर तो नहीं है?' मन में बड़बड़ाने लगा। जैसे ही उसने अपना हेलमेट उतारा, लड़के ने सुबीर से गुस्से में कहा- 'मैं इतने लंबे समय से हॉर्न बजा रहा हूँ, आप एक बार पीछे मुड़कर तो देखते।

-क्यों? क्या हुआ?

-अरे, मैं आपको रोकने के लिए चिल्ला रहा हूँ; और आप इसे समझ ही नहीं रहे थे।

- आप तो रेंसिंग कर रहे थे। आप इतने लंबे समय से मुझे लंघने की कोशिश कर रहे थे। क्या, कर पाया?

क्या आप थोड़ा सा होश में भी नहीं हो! देखिए, आपकी बाइक के डिक्की से दो पैकेट गिरे हैं। मैं पीछे से आ रहा था। इसे देखकर मुझे एहसास हुआ कि यह एक महत्वपूर्ण सामान हो सकता है। मैं आपको सामान वापस करने के लिए इतनी तेजी से गाड़ी चलाई हालांकि मैं तो दूसरी तरफ जा रहा था। आपका सामान वापस करने के लिए मुझे इतनी दूर आना पड़ा।

सुबीर चौक गया। बाइक से उतरा और डिक्की की तरफ देखा। डिक्की खुली थी। यह कैसे हुआ? सुबीर

का सिर काँपने लगा। जब वह दुकान से निकला तो अपनी बहन की शादी के गहने और पैसे के पैकेट डिक्की में रखा था। वह सोचने लगा "क्या मैं जल्दी में डिक्की को लॉक करना भूल गया था"? इसी बीच लड़के ने सुबीर के हाथ में दो पैकेट थमा दिए और अपने गंतव्य की ओर रवाना हो गया।

कुछ देर बाद सुबीर ने देखा कि वह लड़का जा चुका था। पचास हजार रुपए और करीब एक लाख रुपए के जेवर- कुल मिलाकर करीब डढ़ लाख रुपए खोने से बच गए। क्या होता अगर लड़के ने ध्यान नहीं दिया होता तो? और पैकेट वापस नहीं करता? तो इस अंतिम क्षण में सुबीर को पैसे कहाँ से मिलते?

लड़का एक देवदूत की तरह आया था। उसका कर्तव्य सुबीर को मुसीबत से बचाना था। तो बचाया। न ही, लड़के ने इसके इस काम के लिए पारितोषिक की मांग नहीं की एवं न ही धन्यवाद का इंतजार किया। वह ऐसी उम्मीद नहीं कर रहा था कि अगली सुबह के अखबार में उसकी इस नेक काम की कहानी छपे।

वास्तव में, जो मदद करना चाहते हैं, वे बस करते हैं। किसी प्रकार की नाम-महत्ता की आशा में महान कार्य नहीं करते। मनुष्य मनुष्य के लिए है। मनुष्य के मदद के लिए एक अदृश्य हाथ सदैव तत्पर रहता है। वह हाथ कभी किसी दिन एक का होता है तो कभी किसी दिन और का।



असली सम्मान

उज्जल बोस,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

“तेरी नाक के नीचे मास्क क्यों है ? मास्क सही तरह से लगा”

मालती अपना मास्क नाक के ऊपर उठाते हुए बोली – “अरे आंटी, मास्क से मेरा दम घुटता है, कभी-कभी यदि सांस न लूं तो एक दिन में ही मेरा दम घुटने से मैं मर जाऊंगी और इसके लिए जिम्मेदार आप होंगे, उसी दिन पता चलेगा आपको इतना झिंक-झिंक करने का नतीजा।”

सुनंदा देवी कुछ न कहते हुए भगवान की मूर्ति को फूलों से सजाने के काम में लगी रहती हैं। मालती काम तो ठीक-ठाक ही करती है, मगर बहुत ज्यादा बोलती है।

उसके बातों का जवाब देने से वह और ज्यादा बोलने लगेगी। कोरोना की इस महामारी में लोगों को ज्यादा नहीं बोलना चाहिए क्योंकि ज्यादा बोलने से मुँह से वायरस फैलने की संभावना ज्यादा होती है। सुनंदा देवी कोरोना वायरस के कारण कुछ ज्यादा ही सावधानी बरतती

हैं। प्रत्येक दिन पेपर पढ़कर कोरोना से जुड़ी सारी बातें, उससे बचने के उपाय और सरकारी निर्देश सब कुछ का ध्यान रखती हैं। टेलीविजन, फेसबुक, व्हाट्सअप से भी इस विषय पर ज्ञान लेती रहती हैं। वह घर से निकलती ही नहीं, यहाँ तक की बाजार से मालती ही दैनिक उपयोग की सारी वस्तुएं लाती है। सब्जी लाने के बाद उसे अच्छी तरह धोया जाता है और किराने के सामान को दो दिनों तक फर्स पर छोड़ दिया जाता है। वह किसी को घर के भीतर आने नहीं देती हैं। मालती को भी बाजार से लौटने के बाद घर के नीचे के बाथरूम में अच्छी तरह से स्नान करने के बाद हाथों में दस्ताने और मुँह पर सर्जिकल मास्क पहन कर घर में आने की इजाजत दी जाती है। मालती जब तक घर में रहती है सुनंदा देवी अपने मुँह से मास्क नहीं हटाती और उसके जाने के बाद पूरे घर को सैनिटाइजर स्प्रे से सैनिटाइज करती हैं।



मालती उनकी इस हरकतों से बहुत परेशान होने के साथ-साथ उनसे चिढ़ी भी रहती है। मगर काम भी नहीं छोड़ पाती। मालती का पति कोरोना के कारण अपने काम को खो चुका है। मालती के रोजगार से ही उसका परिवार चलता है। सुनंदा देवी से मालती को वेतन भी अच्छी मिलती है। मगर कोरोना के कारण वह कुछ ज्यादा ही सावधान रहती हैं। यह सब वह कोरोना से भय के कारण करती हैं। वह इतनी बड़ी कोठी में अकेली ही रहती हैं। बेटा और बेटी विदेश में रहते हैं। बुढ़ी माँ के पास कोई नहीं रहता है, भगवान न करें उन्हें कुछ हो गया तो आग देने के लिए भी कोई नहीं आ पाएगा। नीचे का सारा कमरा खाली पड़ा रहता है। मालती ने बहुत बार उन्हें कहा कि नीचे के कमरे को भाड़ा पर दे दीजिए कुछ भाड़ा का पैसा आ जाएगा और घर भी भरा-भरा रहेगा, परंतु आंटीजी सुनती ही नहीं। उनका यह मानना है कि किराएदार घर का नुकसान कर देंगे। अच्छा हुआ उन्होंने घर किराये पर नहीं दिया, नहीं तो किराएदार तो उनकी हरकतों से पागल ही हो जाते।

अचानक बाहर कुछ शोर-गुल सुनाई दिया। मालती ने बॉलकनी से झांक कर देखा कि बैंड-बाजे के साथ एक शोभायात्रा जा रहा था। मुहल्ले के पाँच सफाई कर्मियों को कुछ लोग माला पहना कर शोभायात्रा निकाले थे। सबसे आगे मिश्राजी हाथ में माईक लिए- ‘मेरे प्यारे मुहल्लेवासियों, आज कोरोना योद्धाओं को सम्मान देने

का दिन है, उनके इस लड़ाई को सलाम करने का दिन है, इन लोगों के कारण ही आज हम सभी सुरक्षित हैं।’ मिश्राजी नगर निगम के मेयर हैं, उन्हीं के कोठी के बगल में किराए के एक छोटे से घर में मालती और उसका परिवार रहता है।

सुनंदा देवी की पूजा हो गई थी। मालती के बुलाने पर वो भी बॉलकनी में आई। मालती इस शोभायात्रा को देखकर काफी उत्साहित थी। वह बोली – “आंटीजी एक माला मैं भी देकर आऊँ।” “कोई जरूरत नहीं है, अभी तेरा बहुत काम बाकी पड़ा है, यदि बाहर निकली तो फिर से नहाना पड़ेगा तुझे।”

यह सुनकर मालती का मन खराब हो जाता है। मुहल्ले के बहुत से लोग उन्हें माला पहना रहे थे। उनपर फूलों की बरसात हो रही थी। “यह देखने लायक नजारा है, सबके सब मरेंगे कोरोना से, देखो तो बहुत लोगों ने सही तरह से मास्क भी नहीं पहना है और तो और कुछ लोगों ने तो मास्क ही नहीं पहना है और सबके सब निकल पड़े हैं शोभायात्रा में” – सुनंदा देवी यह कहती हुई कमरे में चली जाती हैं। मालती को यह सुनकर खराब लगा कि कोरोना से बचाने के लिए जो लोग लड़ाई लड़ रहे हैं, उनके इस सुंदर प्रयास को भी आंटीजी तीखी नजरों से देख रही हैं।

आज घर जाकर मालती को एक खुशखबरी



नौकरी अभी अस्थाई है परंतु कुछ सालों के बाद स्थाई हो जाएगी। मालती यह सुनकर काफी प्रसन्न हुई परंतु जब उसे नौकरी के बारे में पूरी जानकारी मिली तो उसकी सारी खुशियाँ गायब हो गई। दरअसल उसके पति को नगर निगम द्वारा परिचालित एक अस्पताल के कोरोना वार्ड में एक सफाईकर्मी की नौकरी मिली थी। उसने तुरंत यह नौकरी करने से अपने पति को मना कर दिया। वास्तव में, सुकदेव को बहुत कोशिशों के बाद यह नौकरी मिल पाई थी। ऐसी बेरोजगारी के हालत में इस नौकरी को छोड़ना मुर्खता होगी। सुकदेव अपनी नौकरी करने अस्पताल जाना शुरू कर दिया।

इसके तीन-चार दिनों के बाद एक मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा। मिश्राजी ने यह खबर फैलाई थी। आस-पास के सभी को यह खबर हो गई कि सुकदेव अस्पताल के कोरोना वार्ड में काम करता है। इससे सुकदेव पर दबाव बढ़ने लगा और आस-पास के लोग उसपर ऊंगली उठाने लगे और उनको वहाँ से घर छोड़ कर चले जाने के लिए जोर देने लगे। एक दिन मिश्राजी ने स्वयं आकर मालती से कहा कि सुकदेव की वजह से कोरोना वायरस उनके घर फैलने की संभावना है। इसलिए वे जल्दी ही उस घर को खाली कर दें। मालती जैसी गरीब कैसे मिश्राजी की बात की अवहेलना कर सकती थी। आखिरकार पानी में रहकर मगरमच्छ से कौन बैर कर सकता है। अब मुश्किल इस बात की थी मुहल्ले में कोई भी उन्हें किराए पर घर नहीं दे रहा था। यदि दूर कहीं घर किराए पर लिया तो मालती को आंटीजी के घर काम करना मुश्किल हो जाएगा और एक बात का भय मालती को सताए जा रहा था कि आंटीजी को सुकदेव के काम के बारे में पता चला जाए तो क्या होगा? यदि पता चल गया तो वह मालती को अपने घर के काम

करने से मना भी कर सकती हैं। आखिरकार मालती को जो डर था, वही हुआ। इस घटना के एक सप्ताह के बाद सुकदेव के काम के बारे में आंटीजी को पता चल ही गया। सुनंदा देवी ने एक दिन मालती को बुला कर पूछी – “तेरे पति ने अस्पताल में काम करना शुरू किया है क्या? मुझे किसी ने बताया कि सुकदेव कोरोना वार्ड में काम कर रहा है।” असल में मालती पिछले कई दिनों से इस बात के कारण काफी तनाव में थी। अब उससे सहा नहीं गया। मालती रो पड़ी और सारी घटना को आंटीजी को बता दिया। उसके मुहल्ले छोड़ने का जो आदेश हुआ है उसके बारे में भी उसने आंटीजी को बताया। सुनंदा देवी ने चुपचाप मालती द्वारा कहे गए घटना को सुना। मालती अब मन ही मन तैयार हो रही थी कि आंटीजी यह सुनने के बाद ही कल से काम पर आने से मना कर देंगी।

मालती की बात पूरा होने के बाद सुनंदा देवी ने कहा – “एक काम कर कल से तु सुकदेव को लेकर यहां आ जा, नीचे एक कमरा खोल लेना।” मालती को लगा कि वह कुछ गलत सुन रही है। अपनी आँखें बड़ी कर प्यार से आंटीजी को कुछ देर तक देखने लगी। अचानक से आंटीजी के पैरों पर गिर पड़ी। सुनंदा देवी अपने हाथ में रखे सैनिटাইजर स्प्रे से अपने पैरों पर स्प्रे करती हुई तीखे स्वर में बोली – “पर याद रखना, घर का कुछ भी नुकसान हुआ तो मैं यह बर्दाश्त नहीं करूंगी, सुकदेव को भी बोल देना घर में आने से पहले बाहर वाले नल पर अच्छी तरह से स्नान करके घर में आयेगा।” मालती के आँखों से आंसू थमने का नाम ही नहीं ले रहा था।





अबला नारी

वंदना साह,
पत्नी-श्री विनोद कुमार साह, लिपिक/टंकक

सदियों से न जाने कितने पीड़ा दबा रखे हैं मैंने,
अपनी इच्छा, अपनी आशा, अपनी आजादी दबा रखे हैं मैंने,
दुःखी आँखों में खुशियों को प्रकट कर रखे हैं मैंने।

आखिर कब तक सहूँ मैं, अपने ऊपर हो रहे जुल्मों और अत्याचारों को,
मैं भी तो एक इंसान हूँ, नारी हूँ तो क्या?
मुझसे ही तो ये दुनिया है, तुम्हारी सृष्टि है,
अगर मैं न रहूँ तो इस दुनिया की वजूद ही क्या?

कितने रिश्तों के रूप में हूँ मैं इस धरती पर,
कभी बेटा, तो कभी पत्नी, तो कभी माँ, तो कभी दादी बनकर,
इंसानी वजूद के रिश्तों को आज भी जीवित रख रही हूँ मैं,
फिर भी अपने वजूद को नष्ट होते देख रही हूँ मैं और,
आज इसे बचाने के लिए इस दुनिया से लड़ रही हूँ मैं।

अब बहुत हुआ जुल्मों-सितम मुझ पर,
अब चुप नहीं बैठूंगी, लड़ूंगी और मुंह तोड़ जवाब भी दूंगी,
मुंह तोड़ जवाब भी दूंगी।





विनोद कुमार सिंह,
लिपिक/टंकक

जिला नदिया

भारत के 28 राज्यों में एक महत्वपूर्ण राज्य पश्चिम बंगाल है क्योंकि यह एक ऐतिहासिक राज्य होने के साथ-साथ एक बड़ा पर्यटन स्थल भी है। बड़े-बड़े स्वतंत्रता सेनानी, विद्वान, लेखक, वैज्ञानिक एवं कलाकारों को इस राज्य ने जन्म दिया है जिनका इतिहास में नाम दर्ज है।

पश्चिम बंगाल में कुल 23 जिले हैं और नदिया जिला इनमें से एक है। यह जिला पश्चिम बंगाल की एक प्रशासकीय जिला है जिसका मुख्यालय कृष्णानगर है। यह जिला क्षेत्रफल के हिसाब से 3927 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। वर्ष 2011 की राष्ट्रीय जनगणना के अनुसार इस जिले की कुल आबादी 5,167,601 है। इसके अलावा जनसंख्या घनत्व 1300/वर्ग किलोमीटर है। इस जिले की साक्षरता दर 75.58 प्रतिशत एवं लिंगानुपात 947 है। इस जिले की मुख्य लोकसभा चुनाव क्षेत्र कृष्णानगर एवं रानाघाट है। कुल 17 विधानसभा चुनाव क्षेत्र हैं।

धार्मिक दृष्टिकोण से इस जिले का काफी महत्व है क्योंकि यह जिला चैतन्य महाप्रभु की जन्मस्थली है। महाप्रभु की जन्मस्थली होने के कारण पर्यटकों के साथ-साथ श्रद्धालु भी काफी संख्या में इस जिले के भ्रमण करने आते हैं। इस जिले में मायापुर का इस्कान मंदिर पूरे विश्व में प्रसिद्ध है जहाँ देश-विदेश से श्रद्धालु और अनुयायी काफी बड़ी संख्या में इस मंदिर के दर्शन के लिए आते हैं।

पर्यटन की दृष्टिकोण से भी यह राज्य काफी समृद्ध एवं लोकप्रिय है। इस जिले के पर्यटन स्थलों में मायापुर, नवद्वीप, कृष्णनगर, शांतिपुर मुख्य रूप से प्रसिद्ध है।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से बात की जाए तो इसी जिले के प्लासी में सन् 1757 ई. में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला और अंग्रेज सेनापति लॉर्ड क्लाइव के बीच एक भयंकर युद्ध लड़ा गया था। प्लासी का यह युद्ध विश्व इतिहास में दर्ज है। इसी कारण ऐतिहासिक रूप से इस

जिले का विशेष महत्व है। इसी युद्ध के बाद भारत की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थितियां पूरी तरह से बदल गई थी।

इस जिले के मुख्य नदियों में झालंगी, हुगली, चुरनी, विद्याधरी हैं। इसके अलावा माथाभांगा, भैरव, ईच्छामति जैसी नदियों का यह जिला उद्गम स्थान है। पदमा और माथाभांगा नदियां बांग्लादेश की सीमाओं को इस जिले से अलग करती हैं।



झलक

2020-2021



राजभाषा हिंदी वार्षिक पत्रिका आकांक्षा के आठवें संस्करण 2020 का विमोचन करते हुए महानिदेशक महोदय श्री संजय कुमार झा।



ऑनलाइन हिंदी पखवाड़ा 2020 की अध्यक्षता करती हुई निदेशक महोदया श्रीमती तान्या सिंह।

हिंदी पखवाड़ा 2020 की झलकियाँ



हिंदी पखवाड़ा 2020 के दौरान प्रज्ज्वलित दीप।



हिंदी पखवाड़ा 2020 के उद्घाटन समारोह के समय दीप प्रज्ज्वलित करते हुए श्री अभिनीत जाना, राजभाषा अधिकारी।

हिंदी पखवाड़ा 2020 की झलकियाँ



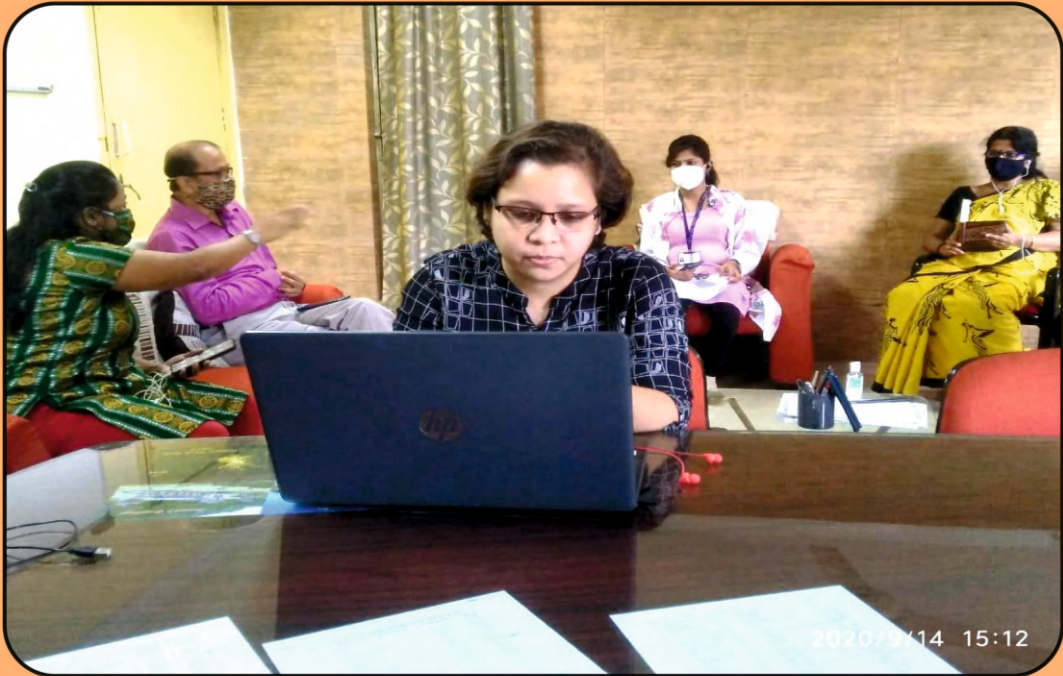
हिंदी पखवाड़ा 2020 के उद्घाटन समारोह के समय दीप प्रज्ज्वलित करते हुए श्री अमलेश दासगुप्ता, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी।



हिंदी पखवाड़ा 2020 समारोह का मेजबानी करते हुए श्री अभिजीत नाना, राजभाषा अधिकारी, श्री अमलेश दास गुप्ता वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी एवं अन्य अधिकारी।



सुश्री चन्द्रानी सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी हिंदी पखवाड़ा 2020 में संगीत प्रस्तुत करती हुई।



सुश्री संगीता बरूआ, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी हिंदी पखवाड़ा 2020 में संगीत प्रस्तुत करती हुई।

हिंदी पखवाड़ा 2020 की झलकियाँ



हिंदी पखवाड़ा 2020 में टिप्पण/प्राख्यण प्रतियोगिता में भाग लेते प्रतिभागी।



हिंदी पखवाड़ा 2020 में निबंध प्रतियोगिता में भाग लेते प्रतिभागी।

हिंदी पखवाड़ा 2020 की झलकियाँ



हिंदी पखवाड़ा 2020 समारोह के दौरान गृहमंत्री जी का संदेश पढ़ती हुई,
कनिष्ठ अनुवादक श्रीमती ब्यूटी गुप्ता।



हिंदी पखवाड़ा के दौरान प्रतियोगिता का संचालन करते हुए सुश्री रुपा कुमारी
एवं श्रीमती ब्यूटी गुप्ता, कनिष्ठ अनुवादक।

हिंदी पखवाड़ा 2020 की झलकियाँ



हिंदी पखवाड़ा 2020 के दौरान गीत प्रस्तुत करती हुई
श्रीमती सुरिमता मुखर्जी, बहु कार्य कर्मचारी।



हिंदी पखवाड़ा 2020 के समापन समारोह का ऑनलाइन संचालन करती हुई
कनिष्ठ अनुवादक सुश्री रुपा कुमारी।



श्री विनोद कुमार साह, लिपिक/टंकक ऑनलाइन गीत प्रस्तुत करते हुए।



हिंदी पखवाड़ा 2020 के दौरान सुश्री रुपा कुमारी, कनिष्ठ अनुवादक ऑनलाइन कविता पाठ करती हुई।

हिंदी पखवाड़ा 2020 की झलकियाँ



श्री सुमन गायेन, लेखापरीक्षक हिंदी पखवाड़ा 2020 के दौरान गीत प्रस्तुत करते हुए।



ऑनलाइन हिंदी पखवाड़ा 2020 का समापन समारोह।

हिंदी पखवाड़ा 2020 की झलकियाँ



ऑनलाइन हिंदी पखवाड़ा 2020 के समापन समारोह के दौरान अधिकारी एवं कर्मचारीगण।



हिंदी पखवाड़ा 2020 के दौरान हिंदी अनुभाग के सुश्री स्था कुमारी, श्रीमती ब्यूटी गुप्ता कनिष्ठ अनुवादक एवं श्री विनोद कुमार साह, लिपिक/टंकक।



रूपसा गायेन,
पुत्री-श्री कार्तिक चंद्र गायेन,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी।



श्रीमती तनुश्री गायेन,
पत्नी-श्री कार्तिक चंद्र गायेन,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



सुश्री राईमा कर्मकार,
पुत्री-श्री असीम चन्द्र कर्मकार,
सहायक पर्यवेक्षक

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2020-21 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं. कार्य विवरण	क क्षेत्र	ख क्षेत्र	ग क्षेत्र
1. हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1.क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2.क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3.क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4.क क्षेत्र से क व ख 100% क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1.ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2.ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3.ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4.ख क्षेत्र से क व ख 90% क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1.ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2.ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3.ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4.ग क्षेत्र से क व ख 55% क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2. हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3. हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4. हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5. हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6. हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7. हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8. द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9. जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पेनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से	50%	50%	50%

हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10. कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद।	100%	100%	100%
11. वेबसाइट द्विभाषी हो	100	100	100
12. नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13.(1) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे. /सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25%(न्यूनतम)	25%(न्यूनतम)	25%(न्यूनतम)
(2) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25%(न्यूनतम)	25%(न्यूनतम)	25%(न्यूनतम)
(3) विदेश में स्थित केन्द्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/ उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण			
14. राजभाषा संबंधी बैठके (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	<p>वर्ष में 2 बैठकें</p> <p>वर्ष में 2 बैठके (प्रति छमाही एक बैठक)</p> <p>वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)</p>		

15. कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16. मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहाँ संपूर्ण कार्य हिंदी में हो	40%	30%	20%
<p>(न्यूनतम अनुभाग)</p> <p>सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहाँ अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, “क” क्षेत्र में कुल कार्य का 40% “ख” क्षेत्र में 25% और “ग” क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।</p>			



महादेवी वर्मा

26 मार्च 1907 - 11 सितंबर 1987

जाग तुझको दूर जाना

-महादेवी वर्मा

चिर सजग आँखें उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना !

जाग तुझको दूर जाना !

अचल हिमगिरि के हृदय में आज चाहे कम्प हो ले !

या प्रलय के आँसुओं में मौन अलसित व्योम रो ले !

आज पी आलोक को डोले तिमिर की घोर छाया

जाग या विद्युत शिखाओं में निठुर तूफान बोले !

पर तुझे है नाश पथ पर चिन्ह अपने छोड़ आना !

जाग तुझको दूर जाना !

बाँध लेंगे क्या तुझे यह मोम के बंधन सजीले ?

पंथ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रंगीले ?

विश्व का क्रंदन भुला देगी मधुप की मधुर गुनगुन,

क्या डुबो देंगे तुझे यह फूल दे दल ओस गीले ?

तू न अपनी छाँह को अपने लिये कारा बनाना !

जाग तुझको दूर जाना !

वज्र का उर एक छोटे अश्रु कण में धो गलाया,

दे किसे जीवन-सुधा दो घट मदिरा माँग लाया !

सो गई आँधी मलय की बात का उपधान ले क्या ?

विश्व का अभिशाप क्या अब नींद बनकर

पास आया ?

अमरता सुत चाहता क्यों मृत्यु को उर में बसाना ?

जाग तुझको दूर जाना !

कह न ठंडी साँस में अब भूल वह जलती कहानी,

आग हो उर में तभी द्रव में सजेगा आज पानी;

हार भी तेरी बनेगी मानगी जय की पताका,

राख क्षणिक पतंग की है अमप दीपक की निशानी !

है तुझे अंगार-शय्या पर मृदुल कलियां बिछाना !

जाग तुझको दूर जाना !



सोहिनी दे
पुत्री-श्री देवाशीस दे,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

Designed & Crafted by Ms. SANA KHURANA-170/1, A.J.C Bose Road, Kolkata-700014 Mob: 9339764686 & 8240727002

Sana